वर्ष 07 अंक 05 माह सितम्बर, 2022 ₹30

(राष्ट्रीय हिन्दी मासिक पत्रिका)

युवक

स्थापित : सन् 1950

06

++ आजादी के 75 साल–कुछ पाया, बहुत कुछ बाकी

09

उस्ताद बिस्मिल्ला खां ने बजाई थी आजाद भारत में पहली शहनाई

कोलाहल में भी गूंजती थी 'एक आवाज'

भारत के वॉरेन बफेट, बिग बुल और दिग्गज निवेशक राकेश झुनझुनवाला एक ऐसी शख्सियत थे जिन्होंने जोखिमों से भरे बाजार में निवेशकों के बीच विश्वसनीयता का मजबूत रिश्ता कायम किया था, झुनझुनवाला की जीवन यात्रा निवेशकों के प्रति सदैव पाक साफ रही।
इसी का नतीजा था कि उनके ऊपर कभी किसी प्रकार के फरेब का आरोप नहीं लगा।

आर.एन.आई. पंजीयन संख्या – 2166/57 | डाक पंजीयन संख्या आगरा–139/2022–24

Dream of Healthy India

NOVA®

DAIRY PRODUCTS

Serving since 1991

घी, दूध, दही, छाछ, पनीर और डेयरी व्हाईटनर

STERLING AGRO INDUSTRIES LTD.

E-mail: sterling@steragro.com, sterling@steragro.biz ★ Website: www.steragro.com

Works : Village - Bhitauna, Soron Road,Kasganj-207123 (UP)

For Distributorship, Please Contact Mr. Adarsh Sharma, Mob.: 9319554050

युवक

वर्ष - 07, अंक - 5, सितंबर 2022

संस्थापक सम्पादक
स्व. श्री प्रेमदत्त पालीवाल

संरक्षक
स्वामी महेशानंद सरस्वती
आनंद कुटीर, मोतीझील, श्रीधाम वृंदावन

सम्पादक
डॉ. वंदना पालीवाल*

प्रबंध संपादक
देवेन्द्र दत्त पालीवाल

कॉन्सेप्ट एडिटर
अजय शर्मा

कार्यकारी सम्पादक
इंजी. ज्ञानेंद्र गौतम

साहित्य संस्कृति संपादक
आदर्श नंदन गुप्त

सलाहकार संपादक
डॉ. महेश चंद्र धाकड़

वाइस प्रेसीडेंट (सर्कुलेशन/एडवर्टाइजिंग)
बृजेश शर्मा

सीनियर ग्राफिक डिजायनर
रानू शर्मा

लीगल एडवाइजर
एड. विकास गौतम

विजुअलाइजर
मनोज कुमार/सौरभ सिंह

युवक

ब्यूरो ऑफिस
दिल्ली **विनय शर्मा, फोन: 09555220374**

स्वत्वाधिकारी, मुद्रक, प्रकाशक **श्रीमती सुधारानी पालीवाल** द्वारा युवक प्रेस जॉस बंगला नं. 4, जीवनी मंडी, **आगरा 282004 (उ.प्र.)** से मुद्रित व प्रकाशित
सम्पादक- **डॉ. वंदना पालीवाल** * पीआरबी एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी,
R.N.I. No.- 2166
सब्सक्रिप्शन भारत में न्यूनतम एक वर्ष के लिए (12 अंक) शुल्क 340+60 (पोस्टल चार्ज)= **रुपये** 400
कृपया डीडी (आगरा में)
YUVAK MASIK PATRIKA के नाम देय हो।
GSTIN NO. 09AGNPP9720D1Z2
DAVP CODE-132863

उपरोक्त अंक में प्रकाशित रचनाओं के सर्वाधिकार सुरक्षित हैं। पत्रिका में छपे किसी भी लेख के लिए सम्पादक उत्तरदायी नहीं है। पत्रिका में प्रकाशित विभिन्न रचनाओं के लिए लेखक स्वयं उत्तरदायी है। पत्रिका में प्रकाशित सामग्री/विज्ञापन आदि से संपादक/प्रकाशक/मुद्रक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है। उपरोक्त से संबंधित किसी भी प्रकार की कार्यवाही एवं पूछताछ की अवधि से तीन माह के अंदर की जा सकती है। इसके बाद किसी भी प्रकार की कार्यवाही, पूछताछ के लिए हम बाध्य नहीं हैं। प्रेषित स्पष्टीकरण प्रकाशित किया जाएगा। किसी भी प्रकार के विवाद की स्थिति में न्याय क्षेत्र सिर्फ आगरा होगा।

संपादकीय कार्यालय

युवक (हिन्दी मासिक)
बंगला नं. 4, जीवनी मंडी, आगरा-282004, उत्तर प्रदेश
पत्रिका से जुड़ी किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए
सम्पर्क सूत्र **+91 9415407766**

लेख अथवा रचनाएं हमें ईमेल करें
yuvakmagazine@gmail.com
Website - www.progressiveyuvak.com

जरूर पढ़ें
राजनीति

32 संसदीय बोर्ड से क्यों हटाए गए...

केंद्रीय स्तर पर भाजपा का शीर्ष सांगठनिक विस्तार यानी संसदीय बोर्ड और चुनाव समिति का गठन विमर्श का विषय बना है। भाजपा ने केंद्रीय परिवहन मंत्री नितिन गडकरी जैसे साफ-सुथरे छबि वाले राजनेता को संसदीय बोर्ड से अलग कर एक नई बहस छेड़ दी है। पार्टी के सांगठनिक ढांचे में अगर व्यक्तिवाद का विश्लेषण करें तो नितिन गडकरी जैसा राजनेता कोई नहीं दिखता है। गड़करी की नीति समता और समानतावादी है। वे सत्ता और विपक्ष को एक साथ लेकर चलने वाले हैं।

विशेष
बिहार राजनीति

24 राष्ट्र को दागी नेताओं से मुक्ति कब मिलेगी?

भारतीय राजनीति में आपराधिक छवि वाले या किसी अपराध के आरोपों का सामना कर रहे लोगों को जनप्रतिनिधि बनाए जाने एवं महत्वपूर्ण मंत्रालय की जिम्मेदारी देने के नाम पर गहरा सन्नाटा पसरा है, जो लोकतंत्र की एक बड़ी...

जरूर पढ़ें
सुर्खियों में

26 रुश्दी पर हमला किताब का जवाब...

अगर आप कभी हिमाचल प्रदेश के बेहद खूबसूरत शहर सोलन में घूमने के लिये जायें तो आपको वहां कोई स्थानीय शख्स बता ही देगा कि यहां पर मशहूर लेखक सलमान रुश्दी का भी बंगला है। इसे उनके पिता अनीस अहमद ने बनवाया था। उसे लेने के लिये सेटेनिक वर्सेज तथा मिडनाइट चिल्ड्रन जैसी बहुचर्चित कृतियों के लेखक सलमान रुश्दी ने कानूनी जंग लड़ी थी और अंत में विजयी भी रहे थे।

नई राहें
कॅरियर

40 इवेंट मैनेजमेंट में कैसे बनाएं कॅरियर...

इवेंट मैनेजमेंट सबसे अधिक लाभदायक कॅरियर के रूप में सामने आया है। आयोजक और आयोजन करने वाली कंपनियों की संख्या तेजी से बढ़ रही है। इवेंट मैनेजमेंट में कॅरियर बनाने की इच्छा रखने वाले उम्मीदवार इस क्षेत्र में नौकरी के अवसर तलाश कर सकते हैं।

दु:खद
अलविदा

16 राकेश झुनझुनवाला की आवाज

भारत के वॉरेन बफेट, बिग बुल और दिग्गज निवेशक राकेश झुनझुनवाला एक ऐसी शख्सियत थे जिन्होंने जोखिमों से भरे बाजार में निवेशकों के बीच विश्वसनीयता का मजबूत रिश्ता कायम किया था, झुनझुनवाला की जीवन यात्रा निवेशकों के प्रति सदैव पाक साफ रही।

46 कहानी
50 कविता

सोशल मीडिया का प्रभाव और दुष्प्रभाव!

सोशल मीडिया 21वीं सदी की नई ऊर्जा से भरपूर नया चेहरा है। इसने विश्वव्यापी चिंतन के आयामों में परिवर्तन किया है। समाज में बड़े बदलाव की नींव रखी है। निसंदेह कोई भी परिवर्तन एकपक्षीय नहीं होता। वह हमेशा अपनी तमाम खूबियों और अच्छाइयों के बावजूद अनेक यक्ष प्रश्न भी साथ लेकर आता है। सोशल मीडिया इसका अपवाद नहीं है। समाज की उन्नति, प्रगति और विकास में उल्लेखनीय भूमिका निभाने के बावजूद सोशल मीडिया पूर्णतः निरापद नहीं है। यद्यपि आज सोशल मीडिया का उपयोग समाज के सभी आयु वर्ग के लोग कर रहे हैं। घर बैठे ही आभासी दुनिया में सभी समूह आपस में संवाद कर अपने विचारों को एक-दूसरे से साझा कर नई बौद्धिक दुनिया को सृजित कर रहे हैं। प्रसिद्ध संचार वैज्ञानिक मैगीनसन ने कहा था कि संचार समानुभूति की प्रक्रिया है। यह समाज में रहने वाले सदस्यों को आपस में जोड़ती है। संचार की यह विकास यात्रा कबूतर से प्रारंभ होकर टेलीग्राफ, चिट्ठी, पोस्टकार्ड, एसटीडी, आईएसडी, प्रिंट मीडिया, रेडियो, टीवी आदि से होती हुई अपने विकास क्रम में आज फेसबुक, व्हाट्सऐप, ट्विटर, इंस्टाग्राम, टेलीग्राम, मैसेंजर, यू-ट्यूब, जीमेल इत्यादि की उन्नत और आधुनिक तकनीक तक पहुंच गई है। सोशल मीडिया के इस नए रूप के बिना सहज और सामान्य जीवन की कल्पना नहीं की जा सकती। यह भी कहा जा सकता है कि सोशल मीडिया परंपरागत मीडिया का ही आधुनिक संस्करण है। इसका स्वरूप अत्यंत विराट, बहुआयामी, सर्वशक्तिशाली, प्रभाव में अत्यंत चमत्कारी और चरित्र से जनतांत्रिक है। सामाजिक समरसता, सामाजिक सरोकार, सामाजिक एकजुटता, सामूहिक चेतना और जन आंदोलनों आदि के लिए सोशल मीडिया की उपादेयता वैश्विक स्तर पर मान्य है। इसीलिए मीडिया और समाज का रिश्ता अभिन्न है, अटूट है। भारत जैसे लोकतांत्रिक देश में यह लोकतंत्र की आत्मा का रक्षा कवच है। वस्तुतः सोशल मीडिया एक मनोरंजक शब्द युग्म है। जनसंचार का यह माध्यम अभिव्यक्ति के विस्तार का प्रभावी मंच है। यह न सिर्फ समाज के दर्पण होने का दावा मुखर करता है वरन प्रत्यक्षतः प्रत्येक व्यक्ति को अपने विचारों को बिना किसी भेदभाव के सार्वजनिक रूप से उजागर करने के अवसर भी उपलब्ध कराता है। इसका नेटवर्क इतना विराट है कि समग्र विश्व को इसने अपनी मुट्ठी में कैद कर लिया है। संसार का कोई भी क्षेत्र सोशल मीडिया से न तो छूटा है न ही अछूता है। चाहे वह अंतरराष्ट्रीय संबंधों को प्रभावित करने का प्रश्न हो या विश्वव्यापी कोरोना महामारी से जंग लड़ने की चुनौती। कला संस्कृति, साहित्य और खेलकूद को नये आयाम देकर सुव्यवस्थित स्वरूप प्रदान करने की पहल हो या छोटे से छोटे स्थानों से भी उभरती हुई प्रतिभाओं, कलाकारों और खिलाड़ियों को प्रसिद्ध हस्तियां बनने के लिए सार्थक मंच उपलब्ध कराने का अवसर हो। सोशल मीडिया ने अभिव्यक्ति की आजादी को भी नए आयाम दिए हैं। महिलाओं और बच्चों के विरुद्ध अपराधों और यौन शोषण की घटनाओं के विरुद्ध हैश टैग मी टू जैसे परिणाम मूलक अभियानों के माध्यम से बच्चों और महिलाओं के अधिकारों की पैरवी गंभीरता के साथ की है। यही नहीं कार्यपालिका और व्यवस्थापिका पर सकारात्मक दवाब निर्मित कर जनहितैषी योजनाओं के निर्माण का मार्ग प्रशस्त किया है। इस प्रकार सोशल मीडिया ने लोकतंत्र की आत्मा के सुरक्षा कवच के रूप में कार्य कर लोकतंत्र के चौथे स्तंभ होने की संज्ञा को भी साकार किया है। पिछले दिनों संयुक्त राज्य अमेरिका में एक अफ्रीकी अमेरिकी युवक की मौत पर प्रतिरोध के जनसैलाब को आंदोलित करने में सोशल मीडिया की केन्द्रीय भूमिका रही है। सोशल मीडिया के पक्ष में उत्कृष्ट और सराहनीय कार्यों की एक लंबी श्रृंखला है। बावजूद इसके सामाजिक सद्भाव के तानेबाने को नफरत और हिंसा की आग में झुलसाने वाले संदेशों, भाषणों, फेक न्यूज और हेट स्पीच की बाढ़ ने सोशल मीडिया की विश्वसनीयता, निष्पक्षता और प्रामाणिकता पर प्रश्नचिह्न लगा दिया है। सोशल मीडिया के कतिपय माध्यम ऐसे भी हैं जो 'जिसकी देखें तवे परात उसकी गावें सारी रात' की तर्ज पर कार्य कर राजनीतिक दलों के हितार्थ नैतिक मूल्यों और आदर्शों को तिरोहित कर अपने निजी स्वार्थों के लिए किसी की भी छवि विकृत कर उनका चरित्र हनन अथवा चरित्र हत्या कर रहे है। दुनिया के अनेक लोकतांत्रिक देशों की संप्रभुता के लिए ट्रोल आर्मी और टुकड़े टुकड़े गैंग के उत्पातों ने गंभीर खतरा पैदा किया है। आभासी दुनिया में किसी व्यक्ति के बारे में मनगढ़ंत झूठी भ्रामक सूचना फैलाकर अपराधी सिद्ध किया जा रहा है। फलस्वरुप अनियंत्रित हिंसात्मक भीड़ उस व्यक्ति की सरेआम हत्या कर देती है। ऐसी घटनाओं पर भारत का सुप्रीम कोर्ट चिंता जता चुका है। अदालत ने सरकार से कहा है कि सोशल मीडिया पर ऐसी गैरकानूनी गैर जिम्मेदाराना हरकतों को नियंत्रित करने के लिए कठोर कानूनों का निर्माण किया जाए। अदालत ने राज्य सरकारों को निर्देशित किया है कि इस संबंध में वे जवाबदेह नोडल अधिकारी को नियुक्त करें। यह काफ हद तक सच है कि आभासी दुनिया का अत्यधिक प्रयोग नशे से भी ज्यादा घातक और दुष्प्रभावी है। यह मस्तिष्क को अवसाद, तनाव, बेचैनी, व्याकुलता और नकारात्मक सोच से भर देता है। यूजर्स को सोशल मीडिया एक तरह से प्रोग्राम्ड कर उनमें हर चीज पर सामाजिक प्रतिक्रिया की इच्छा में वृद्धि कर कुंठा से भरता है। ■

> ***यह मीडिया साइबर अपराध के रूप में नए-नए छल प्रपंच (हैकिंग और फिशिंग, साइबर बुलिंग, फेक न्यूज, हेट स्पीच, निजी डेटा चोरी, गोपनीयता भंग करने और निजता के अधिकार का उल्लंघन) के लिए भी उत्तरदायी है। बावजूद इसके सोशल मीडिया की बेपनाह मकबूलियत को देखते हुए न तो इसे सिरे से खारिज किया जा सकता है और न ही पूर्णतः निरापद माना जा सकता है। वस्तुतः इसके उपयोग के लिए संतुलित मानक प्रचालन प्रक्रिया और आदर्श आचरण संहिता की आवश्यकता है।***

डॉ. वंदना पालीवाल

BEBER

BATH FITTINGS

Make way for iconic luxury....

Mathura
Mobile +91-9412280225

आजादी का महामहोत्सव

आजादी के 75 साल-कुछ पाया, बहुत कुछ बाकी

आम जनता ने आजादी के 75 सालों में बहुत कुछ हासिल किया पर बहुत पाना अभी बाकी है। भारत की तुलना चीन, जापान, दक्षिण कोरिया, ताइवान, सिंगापुर से की जाए तो साबित होगा कि लोगों की हालत तो ठीक ही नहीं। ऐसे में शासन को खंगालने व वर्तमान को टटोलने की जरूरत है। भारत देश आजादी के 75 साल पूरे कर चुका है। इस साल का आजादी दिवस हर साल की तरह खास इसलिए नहीं कि हम 76वें स्वतंत्रता दिवस को राष्ट्रीय उत्सव के रूप में मना रहे हैं बल्कि यह दिन अपने इतिहास को खंगालने और वर्तमान को टटोलने का मौका होता है। यह दिन भविष्य की रूपरेखा भी तय करता है। यह गाड़ी में लगे उस साइड मिरर की तरह होता है जो पीछे के दृश्य तो दिखाता ही है साथ ही आगे की दुर्घटनाओं से आगाह भी कराता है।

अजय शर्मा

यह गुलामी के उस काल की याद दिलाता है जिस के खिलाफ लंबी लड़ाई लड़ी गई और कई देशवासियों की शहादत हुई। यह एक रिमाइंडर है जो आंकलन करता है कि हम अपने कदम किस ओर बढ़ा रहे हैं, कहीं हम रुक तो नहीं गए या उलटी दिशा में तो नहीं जा रहे। अगर पीछे मुड़ कर देखें तो आजादी का आंदोलन अपनेआप में बलिदानों की गाथा गाता है। कई जननायकों ने अपनी जवानी कालकोठरी में गुजार दी, कई युवाओं ने आजादी के लिए अपनी पढ़ाई व कैरियर दांव पर लगा दिया, कई हंसते-हंसते फांसी के तख्त को चूम गए, कई लाठी-गोलियों से शहीद हो गए। यह इसलिए कि इन का एक न्यूनतम एजेंडा यह था कि आजादी के बाद देशवासी अपने जीवन को अपनी शर्तों पर जी सकें।

वे अपनी सरकार, अपने नेताओं को चुन सकें जो जनता को अशिक्षा, बदहाली व गरीबी से छुटकारा दिलाएं और हर स्तर पर मजबूत देश का निर्माण कर सकें। ऐसा देश जहां आर्थिक और सामाजिक उन्नति हो, जहां न कोई रंग और जन के आधार पर राज करने वाला हो न कोई गुलाम, न ऊंचा न नीचा। आजाद भारत में लोगों का यह सपना केवल राजनीतिक ऊंचनीच से ही संबंधित नहीं था बल्कि लोग आर्थिक तथा सामाजिक बराबरी भी चाहते थे। 1947 में पार्टीशन का कड़वा घूंट पिए लोग धर्म के जंजालों में पड़ना नहीं चाहते थे, वे काफी कुछ खो चुके थे और अब शांति से देश को आगे बढ़ते देखना चाहते थे। खैर, आजादी के 75 सालों बाद यह देशवासियों के लिए गनीमत रहा कि इतने साल देश का लोकतंत्र वोटतंत्र से ही सही पर चलता जरूर रहा। लोगों ने अपने प्रतिनिधियों को चुन कर संसद व विधानसभाओं में भेजा। उन्होंने अपने अनुसार सहीगलत जो भी फैसले लिए या कानून बनाए, उन फैसलों ने देश को ठोकपीटधकेल कर आगे बढ़ाया।

अभी बहुत पाना रह गया

सवाल हैं कि क्या यह सिर्फ हमारे देश में ही संभव हो पाया? तकनीक क्या यहीं आई? डिजिटलाइजेशन क्या यहीं हुआ? चमचमाती इमारतें और आईटी हब क्या हमारे देश में ही बने? सड़क और रेल का जाल क्या भारत में ही बिछा? बिजली क्या यहीं पहुंच पाई? दरअसल, ऊपर गिनाए गए बिंदु, दुनिया के कुछ बेहद पिछड़े गृहयुद्धों के मारे देशों को छोड़ दिया जाए तो लगभग हर देश में संभव हो चुके हैं। जब हम अपने देश की बड़ाई करते हैं तो चीजें गिनती में आती तो हैं पर असल में भारत को जितना ध्यान तकनीकों के विकास के लिए लगाना चाहिए था वह लगाया ही नहीं गया। नई तकनीक विदेशों से हो कर हम तक तक पहुंचती है। घर में मौजूद किसी भी तकनीकी सामान, फ्रिज, टीवी, एसी, लैपटौप, इंटरनेट, मोबाइल किसी को भी उठा कर देखा जा सकता है, क्या ये खोजें भारत में हुईं? क्या फेसबुक या माइक्रोसॉफ्ट, गूगल, यूट्यूब हमारे देश की पैदाइश हैं? जवाब है नहीं। दरअसल हकीकत यह है कि साइंस और टैक्नोलॉजी में जितने बजट की जरूरत होती थी, उतना कभी दिया ही नहीं गया। उलटे, जितना दिया जाता रहा उसे भी घटा दिया गया। इसी साल का आंकड़ा है केंद्रीय विज्ञान और प्रौद्योगिकी मंत्रालय को 2022-2023 के केंद्रीय बजट में 14,217 करोड़ रुपए दिए गए हैं जो पिछले साल की तुलना में 3.9 प्रतिशत कम है, जो कि कुल केंद्रीय बजट 39,44,908 करोड़ रुपए का केवल 0.3 प्रतिशत ही बनता है। इस से जुड़े वैज्ञानिकों और जानकारों ने सरकार के इस तरह के बजट को ले कर कई सवाल खड़े किए। शिक्षा के क्षेत्र में लगातार बजट कम किया गया, जो कि टोटल बजट का 2.5 फीसदी के आसपास है। जबकि इस से जुड़े जानकार इसे 10 प्रतिशत बढ़ाए जाने की मांग काफी सालों से करते रहे। आज जब हम देश की आजादी की बात कर रहे हैं तो इस का तुलनात्मक अध्ययन किया जाना जरूरी है, क्योंकि ऐसा कर के हम अपनी स्थिति का सही आंकलन कर सकते हैं। तुलना उन देशों से जिन्होंने तकरीबन हमारे साथ अपनी यात्रा शुरू की, जो आजादी के समय हमारी ही तरह लगभग एक स्टार्टिंग पॉइंट से अपना रास्ता तय कर रहे थे पर उस के बावजूद उन से हमारा फासला कोसों दूर का हो चला है। 1950 में साथ चले हॉगकॉग, मंगोलिया, जापान, ताइवान, साउथ कोरिया की जीडीपी पर कैपिटा इनकम के मामले में भारत से कहीं बेहतर हैं। कुछ लोगों का तर्क रहता है कि ये देश भारत के मुकाबले छोटे व कम जनसंख्या घनत्व वाले हैं पर हकीकत यह भी है कि इन देशों में जिस तरह की उठापटक और युद्ध जैसे हालात बने रहते हैं वैसे भारत में लंबे समय से रहे नहीं। साउथ कोरिया का नौर्थ कोरिया से और ताइवान का चीन से युद्ध जैसे टसल चलते रहते हैं और जहां तक जनसंख्या वाली बात है तो चीन हमारे सामने बड़ा उदाहरण बन कर सामने है जिस की जीडीपी पर कैपिटा भारत से काफी बेहतर है। यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगी कि भारत को चीन से व्यापार के कुछ गुर सीखने की जरूरत है, जो 1990 तक प्रति व्यक्ति जीडीपी के मामले में भारत से गरीब देश था। आज चीन की प्रति व्यक्ति जीडीपी भारत का 4.6 गुना है। हम इन देशों से अपनी तुलना कभी नहीं करते, हमेशा पाकिस्तान, अफगानिस्तान, बंगलादेश जैसे देशों को चुनते हैं, क्योंकि ये देश हमें तुलना के लिए सहज दिखाई देते हैं। कुछ वर्षों पहले खबर आई कि भारत जापान को पछाड़ कर परचेजिंग पावर पैरिटी में अमेरिका, चीन के बाद तीसरे नंबर पर पहुंच गया। इस पर होहल्ला हुआ कि देश तीसरे नंबर की इकोनॉमी बन गया पर फैक्ट यह कि यह सिर्फ इसलिए हो पाया कि हमारे देश की जनसंख्या इतनी है कि किसी भी समय वह टॉप 5 में ही रहेगी। कोई यह क्यों नहीं कहता कि हम ने तकनीक के मामले में जापान को पछाड़ दिया है, क्योंकि यह बात हास्यास्पद लगेगी, जो कि दुनिया में तकनीक के मामले में पहले नंबर पर है।

क्या कुछ हासिल किया

आज जब बीते 75 सालों की बात हो रही है तो यह भूलना नहीं चाहिए कि आजादी के दौरान बंटवारे का घाव और शरणार्थियों की समस्या भारत के लिए बड़ी चुनौती से कम नहीं थी। ऐसे में सब से बड़ी प्राथमिकता देश की एकता और अखंडता बनाए रखने की भी थी। लोग धर्मों में उलझ कर न रह जाएं और देश कई टुकड़ों में न बंट जाए, इस का ध्यान रखना जरूरी था। इस के अलावा अंतर्राष्ट्रीय कूटनीति और उन में भारत की स्वतंत्र पहचान बनाना एक चुनौती थी। अंगरेजों के शासनकाल में कई लघु कुटीर उद्योग जर्जर हो गए थे। ऐसे में अर्थव्यवस्था और बेरोजगारी की समस्या, 20वीं सदी में यूरोप और अमेरिका के मुकाबले में औद्योगीकरण में पिछड़ जाने की चिंता, कृषि विकास की समस्या, स्वास्थ्य व शिक्षा की बदहाल स्थिति देश के आगे मुंहबाए खड़ी थीं। देश स्वदेशी पैरों पर खड़ा हो रहा था तो सबकुछ शुरू से शुरू करना था, फिर चाहे वह उद्योगों का निर्माण हो या स्कूल, अस्पतालों, भवनों का निर्माण हो। पहले बहाना था कि हम तो गोरों के गुलाम हैं इसलिए गरीब हैं। आजादी के बाद 26 जनवरी, 1950 को संविधान लागू हुआ तो सारी व्यवस्थाओं को आकृति मिली, जिस में विधायिका देश के लोगों की चिंताओं का ध्यान रखने के लिए बनाई गई जिस का मूल काम कानून बनाने का रहा। कार्यपालिका सरकार की नीतियों एवं कार्यक्रमों को लागू करने के लिए बनाई गई तथा सब से ऊपर न्यायपालिका कानूनों की व्याख्या एवं न्याय देने और संविधान को लागू कराने के लिए बनाई गई। ऐसा नहीं कि इन 75 सालों में देश ने कुछ हासिल नहीं किया। सब से जरूरी वोटिंग का अधिकार मिला। आज छोटेबड़े शहरों में बड़ी-बड़ी चमचमाती इमारतें दिखाई देती हैं। उन इमारतों में कॉर्पोरेट मंडियां सजी हुई हैं। कई शहरों में आईटी हब बन गए हैं। सड़कों और रेल पटरियों का जाल लगभग पूरे देश में बिछ चुका है। बिजली तकरीबन हर घर-गांव में पहुंच गई है। बड़े महानगरों में मैट्रो सरपट दौड़ने लगी है। देश का डिजिटलाइजेशन हो चुका है। मोबाइल एक्सेस हर हाथ में है। उस के लिए सुदूर इलाकों में नेटवर्क टावर भी लग गए हैं। बड़े शहरों से लेकर कई छोटे शहरों तक मौल, सिनेमाहौल और रैस्तरां खुल गए हैं। अमेरिका, यूरोप और दुनियाभर की इंटरनेशनल कंपनियां भारत में स्थापित हो गई हैं। इन देशों के बड़े-बड़े शोरूम लोकल इलाकों में भी खुल गए हैं। आयात-निर्यात सुचारु रूप से चलने लगा है। विदेशों से इनवैस्टमैंट भारत आ रहा है। देश में सैकड़ों सफल पूंजीपति और उद्योगपति उभरे हैं जिन में से कुछ दुनिया के टॉप में जगह बना चुके हैं। इस के अलावा इस लंबे अंतराल में देश में उच्चशिक्षा के लिए प्रशिक्षण संस्थान खुले। आईआईएम, आईआईटी और एम्स बने। कई जनकल्याण की नीतियां बनीं। ग्रामीण इलाकों तक में स्कूलों का निर्माण हुआ। बच्चों को शिक्षा का अधिकार मिला। उन स्कूलों में लड़कियां और दलित, वंचित तबकों के बच्चों को स्वीकार्यता मिली। इन्हीं वंचित तबकों से निकले लोग बड़े अधिकारी पदों पर भी बैठे। ऐसे ही विज्ञान के क्षेत्र में भी इसरो जैसी संस्था का निर्माण हुआ जिस ने विज्ञान के क्षेत्र में अच्छा काम भी किया।

आजादी का मतलब

आजादी होती क्या है? आजादी जैसे विषयों पर तार्किक विचार करना शायद कुछ लोगों को देशविरोधी लगे पर इस प्रश्न से बचा तो नहीं जा सकता। कितना मुश्किल है इसे सम झना कि देश लोगों से बनता है, इसलिए देश की आजादी का मतलब लोगों की आजादी होनी चाहिए पर हकीकत यह है कि आजाद भारत आज गरीब लोगों का अमीर देश है। हमें दुनिया के टॉप अमीरों में हमारे अमीर तो दिखाई देते हैं पर असंख्य गरीब दिखाई नहीं देते। जिन उपलब्धियों की बात ऊपर गिनाई गई, वे उपलब्धियां किन के लिए उपयोगी हो पाईं, इस पर सोच-विचार किया जाए तो देश की 80 फीसदी आबादी अभी भी दूर दिखाई देगी। भारत की आजादी से संसाधनों पर भारत के लोगों का हक कायम हुआ पर हम क्या देख रहे हैं कि आज भी उन संसाधनों पर मुठ्टीभर लोगों का ही अधिकार है। भारत माता की जय का नारा तो बराबर लगवाया जा रहा है पर उसी मां के सपूतों में भारी आर्थिक विषमताएं दिखाई देती हैं जो बढ़ती ही जा रही हैं। इस समय भारत के एक प्रतिशत अमीर लोगों के पास देश की कुल राष्ट्रीय संपत्ति का 58.4 प्रतिशत है, वहीं देश की 70 प्रतिशत जनता के पास कुल राष्ट्रीय संपत्ति का केवल 7 प्रतिशत ही है। वहीं, 85 फीसदी आबादी 2 डॉलर यानी 150-160 रुपए से भी कम में अपना गुजारा कर रही है। एसबीआई रिसर्च रिपोर्ट के मुताबिक कोरोना संकट में 2018 के मुकाबले 2021 में आम आदमी का कर्ज दोगुना हो चुका है। अमीरों और गरीबों की संपत्ति में फैलते फर्क को ले कर सरकारी सर्वे कहता है कि भारत की 10 प्रतिशत सब से अमीर आबादी देश की आधी से भी ज्यादा संपत्ति की मालिक है। वहीं 50 प्रतिशत आबादी के पास देश की 10 प्रतिशत से भी कम संपत्ति है। क्या आर्थिक आजादी के माने में देश बेहतर साबित हो पाया? जवाब इस देश की भुखमरी, कुपोषण और गैरबराबरी के कई आंकड़ों से मिल जाएंगे। आम इंसान के लिए आजादी का मतलब है कि वह अपने विचारों को अभिव्यक्त कर सके, अपनी इच्छा के अनुसार अपना भोजन चुन सके, पसंद के अनुसार सिनेमा देख सके तथा अपना पहनावा खुद चुन सके और सब से जरूरी यह कि बिना डरे सवाल कर सके। ये सब अधिकार हमें आजादी के बाद हमारे संविधान ने दिए हैं। लेकिन वर्तमान में ये सब अधिकार कूड़ा पेटी में डाल दिए गए हैं। विभिन्न तरीकों से आम नागरिक को पाबंद किया जा रहा है।

सत्ताधारी जनता के नेता नहीं शासक

75 साल देश में कई सरकारें आईं और गईं, अधिकतर राजपाट कांग्रेस-भाजपा के हाथ में रहा। तकरीबन 55 साल कांग्रेस और मोदी के 8 साल के कार्यकाल को मिला कर 14 साल भाजपा सत्ता में रही। देश में 15 प्रधानमंत्री बने। कुछ के कार्यकाल 2 या उस से अधिक बार भी रहे पर इतनी स्थिरता के बावजूद देश की स्थिति सतही बढ़ती रही। जवाहरलाल नेहरू से शुरू हुई प्रधानमंत्रियों की गिनती नरेंद्र मोदी तक पहुंच चुकी है। इस बीच गुलजारीलाल नंदा, लालबहादुर शास्त्री, इंदिरा गांधी, मोरारजी देसाई, चौधरी चरण सिंह, राजीव गांधी, विश्वनाथ प्रताप सिंह, चंद्रशेखर, नरसिंह राव, अटल बिहारी वाजपेयी, एच डी देवगौड़ा, इंद्रकुमार गुजराल और मनमोहन सिंह प्रधानमंत्री रहे। फिलहाल नरेंद्र मोदी प्रधानमंत्री हैं। नेहरू के काल में चुनौतियां जरूर थीं पर उन चुनौतियों को पार पाने व जिस तरह का सुनहरा विजन ले कर वे सत्ता में आए, उस से वे भी बहुत बदलाव लाने में असफल रहे। उस के बाद लालबहादुर शास्त्री कम समय के लिए आए। इंदिरा गांधी काल आया तो जनता का नेता कम, शासक वाली छवि भारतीय राजनीति में पनपती दिखाई दी। सत्ता की ललक नेताओं पर हावी होने लगी। राजीव गांधी के बाद राजनीति में टूटफूट, जोड़तोड़ खूब हुई। इस के बाद जोड़तोड़ राजनीति और देश में धार्मिक चैप्टर के शुरू होने से देश इन्हीं मसलों में उल झा रहा। समस्या यह कि इन मसलों को सुल झाने वाले नेता ही इन्हें उल झाते रहे। ध्यान देने वाली बात यह कि यह वही दौर था जिस समय चीन, जो हम से पिछड़ा था, वह प्रगति पथ पर दौड़ लगा रहा था और हम इन झमेलों में फंसते रहे। वी पी सिंह, चंद्रशेखर, नरसिंह राव, एच डी देवगौड़ा व गुजराल कम-कम समय के लिए सरकार में आए। 1996 के बाद तो 2 वर्षों के भीतर 3 प्रधानमंत्री बने। अटल बिहारी वाजपेयी, पहले गैरकांग्रेसी प्रधानमंत्री, 1999 से 2004 तक अपना कार्यकाल पूरा कर पाए पर उन 5 सालों में वे भी देश को दिशा नहीं दे पाए। 10 साल मनमोहन काल से परेशान जनता ने आखिरकार 2014 में प्रधानमंत्री मोदी को चुना पर जनता के विश्वास के बावजूद चीजें बनने की जगह बिगड़ती चली गईं। मोदी काल के पिछले 8 साल देश फिर उन्हीं धार्मिक और जातीय मसलों में फंसा रह गया। फूट डालो राज करो की नीति देश में चलाई जा रही है। हालत यह है कि लोगों में पहले के मुकाबले असुरक्षा की भावना ज्यादा बढ़ी। देश इकोनॉमी के मामले में पिछड़ता जा रहा है। गृहयुद्ध जैसे हालात बनने लगे हैं।

समस्याएं जो खत्म होनी चाहिए थीं

आजादी के 75 साल बाद भी आज तक हम उन्हीं समस्याओं से लड़ रहे हैं जो कब की खत्म हो जानी चाहिए थीं। सही मानो में हम ने कभी उन समस्याओं को हल करने की दिशा में काम नहीं किया। हमारे नेता जनता के नेता बनने की जगह उन के शासक बनने लगे हैं। हमारे राजनीतिज्ञ वही करते रहे हैं जो 200 वर्ष तक अंगरेज भारत में किया करते थे। उन्होंने 2 संप्रदायों के बीच फूट डाली, आजकल हमारे राजनीतिज्ञ भी यही कर रहे हैं। जाति भावना की प्रबलता अभी तक गई नहीं। इन सभी के चलते राजनेताओं की नीतियों ने ऐसे सवाल खड़े कर दिए हैं जिन का जवाब ढूंढ़ा जाना चाहिए। बदलती सरकारों के साथ बस जवाब बदलते रहे हैं, कोई हल नहीं मिला। दिक्कत यह कि जिन देशों से तुलना में हम सहूलियत महसूस करते भी हैं उन से भी कुछ मामलों में हमारे आंकड़े चिंताजनक हंगर इंडैक्स रिपोर्ट बताती है कि भारत, पाकिस्तान और नेपाल जैसे देशों के मुकाबले खराब हालत में 101वें स्थान पर है। यह तब की हालत है जब सरकार 80 करोड़ लोगों को मुफ्त अनाज दे रही है। तमाम कानून होने के बावजूद दलितों को सिर उठाने की सजा तो ऊंची जाति के लोग आज भी दे ही देते हैं। यही कारण भी है कि देश में जाति आधारित अपराधों में हर साल बढ़ोतरी दर्ज हो रही है। अल्पसंख्यक विरोधी घटनाओं में वृद्धि हुई है। बलात्कार के मामले बढ़ रहे हैं। स्वास्थ्य को ले कर तैयारियां किस स्तर पर हैं, यह हम कोरोनाकाल में देख ही चुके हैं। बेरोजगारी के आंकड़े किसी से छिपे नहीं। डैमोक्रेसी इंडैक्स में भी हम कोई बहुत अच्छे पायदान पर नहीं। प्रैस फ्रीडम में देश रिकॉर्ड खराब 150वें पायदान पर पहुंच गया है। ■

कर्तव्य जरूरी

यह अच्छी बात है कि मौजूदा प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी इस दिन को ग्रैंड बनाने के लिए 21 मार्च, 2021 को अहमदाबाद से आजादी के अमृत महोत्सव कैंपेन की शुरूआत कर चुके हैं, वहीं देशवासियों से अपील भी कर चुके हैं कि 13 से ले कर 15 अगस्त तक अपने घरों में तिरंगा फहराएं। आजादी दिवस एक राष्ट्रीय गर्व का दिन है तो इस का सैलिब्रेशन भी बड़ा होना चाहिए पर सवाल यह कि जिन घरों में तिरंगा फहराने की बात हो रही है उन घरों को नौकरी देने की बात क्यों नहीं हो रही? यह बिलकुल सही है, इस आजादी दिवस को जज्बे के साथ मनाना हमारी जिम्मेदारी है क्योंकि यह हमारी आजादी है, हमारे पुरखों ने बेहतर कल के लिए इस आजादी को हासिल किया है पर यह ध्यान रखना होगा कि देश की आजादी का मतलब है लोगों की आजादी। सिर्फ 2 प्रतिशत लोगों की नहीं। जब लोग गरीबी, जाति, मनुवाद, पितृसत्ता के गुलाम रहेंगे तो आजादी का जश्न भी फीका पड़ जाता है। ऐसे में जरूरी है कि सब से पहले इस गुलामी से खुद को आजाद किया जाए।

उस्ताद बिस्मिल्ला खां ने बजाई थी

आजाद भारत में पहली शहनाई

ठुकरा दिया था अमेरिका का प्रस्ताव

बिस्मिल्लाह खान के पिता भी एक अच्छे और बेहतरीन शहनाई वादक थे। भोजपुर रियासत में अपनी कला का प्रदर्शन भी करते थे। यही कारण रहा कि बिस्मिल्लाह खान भी अपने पिता के रास्ते पर चलते गए, उनके चाचा भी अच्छे शहनाई वादक थे।

अंकित सिंह

शहनाई का जिक्र आते ही हमारे दिमाग में शादी-ब्याह के ख्याल आने लगता हैं। लेकिन, शहनाई को देश दुनिया में ख्याति दिलवाने वाले उस्ताद बिस्मिल्लाह खान को आप कितना जानते हैं? बेहद साधारण जीवन बिताने वाले उस्ताद बिस्मिल्लाह खान को दुनिया में शहनाई के बेताज फनकार के रूप में जाना जाता है। उस्ताद बिस्मिल्लाह खान ने गंगा के घाट से लेकर अमेरिका तक शहनाई की गूंज को स्थापित किया। उन्हें दुनिया के प्रख्यात शहनाई वादकों में शुमार किया जाता है। बिस्मिल्लाह खान का जन्म 21 मार्च 1916 को बिहार के डुमराव में हुआ था। उनके पिता का नाम पैगंबर खां और माता का नाम मिट्ठन बाई था। वे अपने माता-पिता के दूसरे संतान थे। उन्हें उनके दादाजी से बिस्मिल्लाह नाम मिला था। बिस्मिल्लाह खान का बचपन बेहद गरीबी में बीता था। हालांकि, परिवार में संगीत का माहौल था। यही कारण रहा कि उनका भी संगीत की तरफ रुझान बढ़ता गया। बिस्मिल्लाह खान के पिता भी एक अच्छे और बेहतरीन शहनाई वादक वे। भोजपुर रियासत में अपनी कला का प्रदर्शन भी करते थे। यही कारण रहा कि बिस्मिल्लाह खान भी अपने पिता के रास्ते पर चलते गए। उनके चाचा भी अच्छे शहनाई वादक थे। 6 साल की उम्र में उस्ताद बिस्मिल्लाह खान वाराणसी आ गए थे। तब से यह वहीं के होकर रह गए। शुरूआत में वाराणसी के घाटों पर बैठकर वह शहनाई सीखते रहे। बाद में इन्हीं घाटों पर बैठकर उन्होंने शहनाई की गूंज को पूरी दुनिया में पहुंचाया। बिस्मिल्लाह खान ने पारंपरिक गीतों पर ही शहनाई को पहले बजाया जिसमें कजरी, चैता और झूला की धुने शामिल थीं। बाद में उन्होंने अपनी कला में और निखार करने लाने की कोशिश की। उन्होंने शहनाई को नए गाने में पेश करने की भी शुरूआत कर दी थी। उस्ताद बिस्मिल्लाह खान की शादी महज 16 साल की उम्र में हो चली थी। हालांकि, शहनाई के प्रति उनका प्यार हमेशा बहुत बड़ा रहा। तभी वे शहनाई को अपनी दूसरी बेगम भी कहते थे। उनका बहुत बड़ा परिवार था जिसका भरण पोषण की जिम्मेदारी भी बिस्मिल्लाह खान के ऊपर थी। इसमें हमेशा बिस्मिल्लाह खान अव्वल साबित हुए। बिस्मिल्लाह खान को बनारस के घाट और भारतीय संस्कृति से बहुत प्यार था। वह भारतीय रीति-रिवाजों के भी कट्टर समर्थक थे। अगर वह 5 बार नमाज पढ़ते थे तो हिंदू-तीज त्योहारों में भी बढ़-चढ़कर भाग लेते हैं। वह बाबा काशी विश्वनाथ मंदिर में भी जाकर शहनाई बजाते थे। घंटो गंगा किनारे बैठना उन्हें बेहद पसंद था। कहते हैं कि बिस्मिल्लाह खान कभी भी काशी और गंगा घाट छोड़ने को तैयार नहीं थे। एक बार उन्हें अमेरिका से इसको लेकर ऑफर भी आया था। उन्हें कहा गया था कि आप सिर्फ हमारे यहां आ जाओ। लेकिन बिस्मिल्लाह खान ने अमेरिका के इस प्रस्ताव को अस्वीकार कर दिया। इसका सबसे बड़ा कारण था कि बिस्मिल्लाह यह बहुत मानते थे कि अमेरिका जाने से वह गंगा और काशी के घाटों से बिछड़ जाएंगे। बिस्मिल्लाह खान ने शहनाई वादकों के लिए एक कमाई का जरिया भी स्थापित किया। उन्होंने बड़े-बड़े संगीतकारों के साथ जुगलबंदी की। उस्ताद बिस्मिल्लाह खान को आजाद भारत के पहले शहनाई बजाने का भी गौरव प्राप्त है। पंडित जवाहरलाल नेहरू ने उस्ताद बिस्मिल्लाह खान से 15 अगस्त 1947 को शहनाई बजाने का आग्रह किया था जिसे उन्होंने स्वीकार भी किया। वर्षों से जो दूरदर्शन और आकाशवाणी की सिग्नेचर ट्यून हमें सुनाई देती है, उसका भी धुन अपनी शहनाई के जरिए बिस्मिल्लाह खान ने भी तैयार किया था। बिस्मिल्लाह खान की शहनाई में एक जादू ही तो थी जो सभी को आकर्षित करती थी। बिस्मिल्लाह खान ने देश और दुनिया में बड़ी ख्याति हासिल की। महज 14 साल की उम्र में बिस्मिल्लाह खान ने इलाहाबाद के संगीत परिषद में पहली बार शहनाई वादाक के तौर पर हिस्सा लिया था। इसमें उन्हें खूब सराहना मिली थी जिसके बाद बिस्मिल्लाह खान कभी पीछे मुड़कर नहीं देखे। वे लगातार सफलता के आयाम छूते गए। 1956 में उन्हें संगीत नाटक अकादमी का पुरस्कार दिया गया। 1961 में बिस्मिल्लाह खान को पद्मश्री से सम्मानित किया गया। 1968 में पद्म भूषण से, 1980 में पद्म विभूषण तो वहीं 2001 में भारत के सर्वोच्च नागरिक सम्मान भारत रत्न से उन्हें सम्मानित किया गया। बिस्मिल्लाह खान के दिल के बेहद करीब बनारस था। 21 अगस्त 2006 को 90 वर्ष की उम्र में उनका निधन हो गया। भले ही बिस्मिल्लाह खान हमारे बीच नहीं है लेकिन उनकी शहनाई की मधुर गूंज आज भी हमें उनकी याद दिलाती है। ■

अब देश में आर्थिक विकास के नारे करने होंगे बुलंद

पूरन डावर
सामाजिक चिंतक एवं आर्थिक विश्लेषक

मैं, देश के प्रति अति आशान्वित हूँ। हमने आजादी के 75 वर्ष अभी पूरे किए हैं इन वर्षों में कई बड़े परिवर्तन देखने को मिले हैं। आज देश के नारे बदले गये हैं। पहले नारे हुआ करते थे - अंग्रेजो भारत छोड़ो, इंकलाब ज़िंदाबाद, हमारी जरुरत अंग्रेजों से छुटकारा पाकर आजादी हासिल करने की थी, मगर आज आवश्यकता है आत्मनिर्भरता की। अब देश में आर्थिक विकास के नारे मेक इन इंडिया, स्टार्टअप इंडिया, स्टैंडअप इंडिया, स्पीडअप इंडिया, डिजिटल इंडिया, स्किल इंडिया, अपस्किल इंडिया, री-स्किल इंडिया के रूप में बदल चुके हैं।

जनता आजादी के नारे अंग्रेजी हुकूमत के खिलाफ लगाती थी। आज यह बदले हुए नारे विश्व के सबसे बड़े लोकतंत्र की सरकार दे रही है जिसे हमने चुना है देश के विकास और आत्मनिर्भरता के लिये। लेकिन क्या सरकार के यह नारे हम सबका साथ दिये बगैर अथवा सुर में सुर मिलाए बिना पूरे हो सकते हैं, शायद कतई नहीं..? हमें सरकार के इन प्रयासों के साथ खड़ा होना होगा, सुर में सुर मिलाकर एक जन आंदोलन के रूप में सकारात्मक भागीदारी करनी होगी। एक व्यक्ति के जीवन में 75 वर्ष का समय लम्बा होता है लेकिन किसी देश के लोकतंत्र के लिये यह समय अधिक नहीं है। अमेरिका की स्वतंत्रता के पहले 75 वर्ष का अगर इतिहास देखें तो शायद इस स्थिति पर भी नहीं था। इसमें विचलित होने का कोई कारण नही है लोकतंत्र एक हैंडपंप की तरह होता है पहले मिट्टी निकलती है फिर गंदा पानी निकलता है, उसके बाद धीरे-धीरे साफ पानी निकलने लगता है। गीता का सबसे महत्वपूर्ण वाक्य है कि जब अति होती है तब 'मैं' आता हूँ। लोकतंत्र में आजादी के उन्माद में हम अति तक पहुँचते हैं फिर हमारे अंदर से ही निकलता है 'बस और नहीं' यह बंद होना ही चाहिए। आज करुणा और ओज के कवि दुष्यंत कुमार की यह पंक्तियाँ कमोबेश हर कार्यशाला में सुनाई देती है 'हो गयी पीर पर्वत सी अब पिघलनी चाहिये, अब इस हिमालय से एक और गंगा निकालनी चाहिए'। आज भारत तेजी से आगे बढ़ रहा है जहां कोविड के बाद अनेक देशों की अर्थव्यवस्था ध्वस्त हो गयी है और विकसित देश भी महंगाई की मार से त्रस्त हैं मुद्रा स्फीति की दर दहाई पार कर गयी है। हम सीमित मुद्रास्फीति के साथ तेजी से आगे बढ़ रहे हैं। कोविड काल को अभी मात्र एक वर्ष ही पूरा हुआ है तमाम हाय तोबा थी। चर्चाएं थीं कि भारत में वैक्सिनेशन हो ही नहीं सकता इसमें कम से कम 15 वर्ष लग जाएँगे आज 200 करोड़ से ऊपर टीकाकरण हो चुका है और एक क्लिक पर सर्टिफिकेट भी जारी हो रहे हैं। अमेरिका भी ऐसा नहीं कर सका है और भारत देश 100 से अधिक देशों में विश्वास के साथ वैक्सीन का निर्यात भी कर रहा है यह भारत की गतिशीलता को दर्शाता है। अब बात करते हैं डिजिटल इंडिया की इसको लेकर सोच थी भारत जैसे ग्रे मार्केट वाले देश में डिजिटल कैसे होगा? आज डिजिटल लेन-देन में हम विश्व में एक नंबर पर हैं मुझे लगता है इस प्रकार आने वाले समय में ग्रे मार्केट दूर की कौड़ी हो जायेगी। भारत को लेकर आज विश्व की धारणा बदली है प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी के रूप में एक ऐसा नेतृत्व मिला है जिसमें केवल भारत की आशायें ही नहीं बल्कि पूरा विश्व

उनकी ओर देख रहा है। हमें तैयार रहना है उद्यमिता के लिये भारत का विश्व की ग्लोबल फैक्टरी बनना निश्चित है। महज नौकरी के लिये डिग्री हांसिल करना शिक्षा का अर्थ कतई नहीं है। शिक्षा ज्ञान के लिये है मात्र नौकरी के लिये नहीं। आपके पास ज्ञान होगा तो 10 को नौकरी देंगे माँगेंगे नहीं। उस जमाने में अंग्रेजी शिक्षा नौकरी और अंग्रेजों की चाकरी के लिए थी। आज भी हम उसी शिक्षा का शिकार हैं नई शिक्षा नीति उद्यम आधारित है तेजी से लागू करनी होगी। अंग्रेजी भाषा नहीं आपकी अपनी मात्र भाषा ही आपको आगे बढ़ा सकती है। कभी भी कोई देश दूसरे देश की भाषा पर विकसित नहीं हो सकता। वैश्य कोई जाति नहीं थी जो व्यापार करता था वही वैश्य कहलाता था, जो शास्त्रों का ज्ञाता होता था वो ब्राह्मण कहलाता था। हमारी जातियाँ जिन्हें आज हमने पिछड़ा और दलित घोषित किया है, वह जातियाँ नहीं बल्कि उनके काम की पहचान थी जोकि देश की अर्थव्यवस्था और रोजगार की रीढ़ थी। यदि आवश्यकता थी तो उनको शिक्षित कर उनके काम को सम्मानजनक बनाने की, उनके कौशल को निखार कर घरेलू उद्योग से लघु एवं मध्यम दर्जे के उद्योग में बदलने की, हमने आरक्षण का झुनझुना पकड़ाकर उन्हें ताउम्र पिछड़ा और दलित घोषित कर दिया, आज वही डिग्री लेकर घूम रहा है। चंद लोग विधायक, सांसद, सरकारी अधिकारी बन कर भी दलित और पिछड़े ही कहलाते हैं। विडम्बना यह है की लाभ लेने के लिए उसे पिछड़ा कहलाने में कोई गुरेज भी नहीं है।

शिक्षा नाई को सैलून, ब्यूटी पार्लर या मेकओवर आर्टिस्ट में बदल सकती है, दर्जी को फैशन डिजाइनर - मेक टू मेजर में बदल सकती है, कुक को शेफ में, ड्राइवर को शोफेर में, मोची को शू क्लिनिक में, चाय वाले को चयोस में, कॉफी कैफे डे में, पकोड़े वाले को मेक डोनाल्ड में, हलवाई को हल्दीराम में, धोबी को लॉन्ड्री और ड्राई क्लीनर्स में, गाय भैंस चराने वाले यादवों को डेरी संचालक में। भेड़ चराने वाले गड़रिया या किसान जैसे पेशेवर आधुनिक तकनीक अपनाकर अपना जीवन बदल सकते हैं, आधुनिक तकनीक से की गई खेती से पानी की बचत भी की जा सकती है। किसानों के बच्चों को किसानी छोड़कर शहरों में नौकरी की कतई आवश्यकता नहीं बल्कि वे स्वयं कई लोगों को नौकरी दे सकते हैं। सफाई वाले पढ़-लिखकर हाउसकीपर कहलाते हैं। इन सारे कार्यों को सम्मान जनक बनाया जा सकता है उद्योगों की शक्ल दी जा सकती है। युवा एप के माध्यम से जोड़कर अव्यवस्थित कार्यों को व्यवस्थित कर सकते हैं दोनों के लिए जीत है। माली, पलम्बर, इलेक्ट्रीशन, हाउस कीपिंग, सिक्योरिटी को एप पर जोड़कर आय बढ़ा सकते हैं और बड़ी बचत भी करा सकते हैं। गाँवों में बन रहे छोटे-छोटे उत्पादों को विश्व के किसी भी कोने में बेच सकते हैं। 5जी सेवा आने से इसकी गति और तेज हो सकती है। कुल मिलाकर एक तरफ देश का रोड इन्फ्रास्ट्रक्चर दूसरी तरफ तेजी से बड़ती 5 जी डिजीटल तकनीक एक बड़ी गति देने वाली है। यहाँ यह समझना आवश्यक है कि भारत में रोजगार या नौकरियाँ नहीं हैं तो विकसित देशों में कैसे हो सकती हैं, जहाँ आधे से अधिक कार्यों को मानव के बजाय तकनीक के माध्यम से किया जाता है। ■

अगर आप धार्मिक स्थलों पर जाना पसंद करते हैं

तो जरूर जाएं अयोध्या

अगर आप अयोध्या घूमने आ रहे हैं तो यहां मंदिर ही मंदिर हैं जहां कुछ समय गुजार कर आपको एक अलग ही प्रकार की अनुभूति होगी। अब तो रामलला भी टैंट से निकल कर फाइबर से बने अस्थायी मंदिर में विराजमान हैं जहां उनके दिव्य दर्शन आसानी से किये जा सकते हैं।

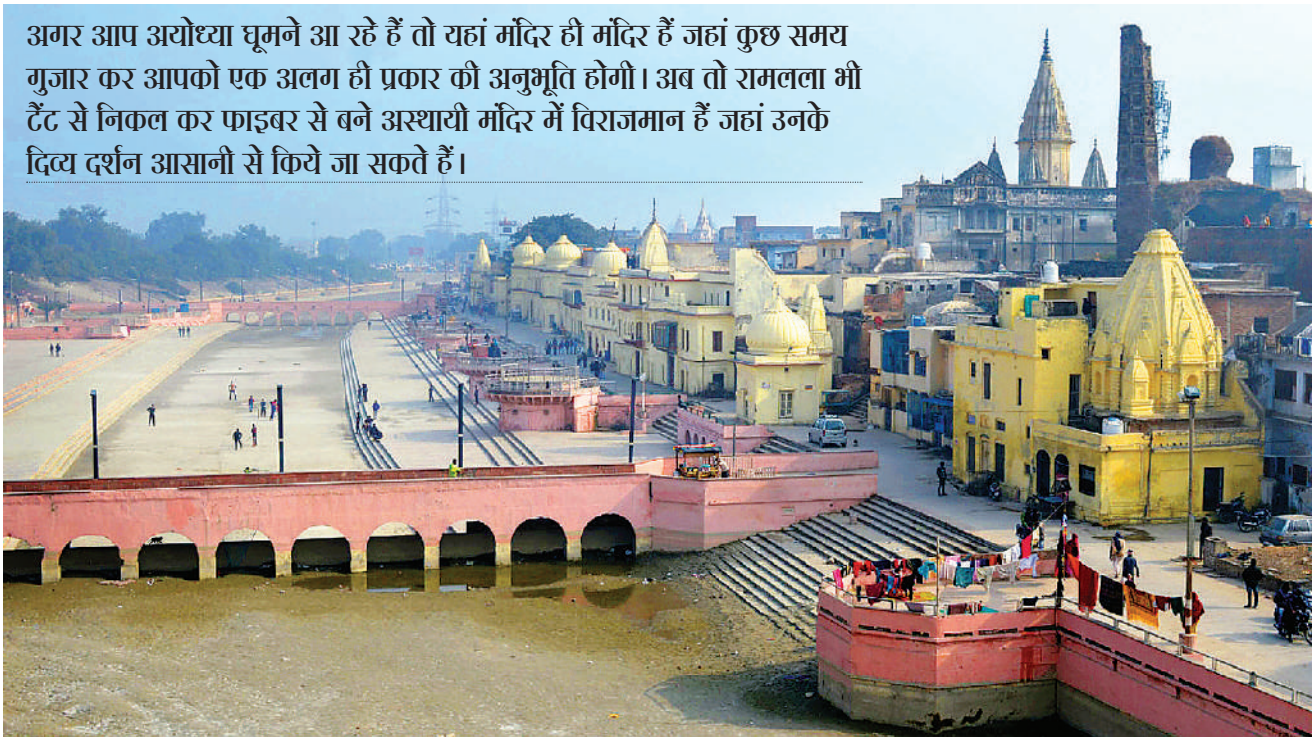

प्रीती कुमारी

प्रभु श्रीराम की नगरी अयोध्या पूरे विश्व में विख्यात है। विश्व भर में धार्मिक पर्यटन के एक प्रमुख केंद्र अयोध्या का इन दिनों कायाकल्प हो रहा है जिससे आने वाले दिनों में लोगों को अलग प्रकार का अनुभव होगा। यहां विश्व स्तरीय हवाई अड्डा, विश्व स्तरीय रेलवे स्टेशन, सभी तरह की सुविधाओं से युक्त छोटे-बड़े होटल, पर्यटक केंद्र और संग्रहालयों का निर्माण कार्य तेजी से चल रहा है। माना जा रहा है कि जनवरी 2024 में राम मंदिर के उद्घाटन के समय तक दिव्य नगरी अयोध्या भव्य स्वरूप ले चुकी होगी। इस समय सरयू तट पर आप जाएंगे तो तमाम तरह की सुविधाओं के साथ-साथ आपको नदी का जल भी एकदम स्वच्छ मिलेगा। यही नहीं अयोध्या को पिछले कुछ वर्षों से जिस तरह दीपावली पर सजाया जा रहा है वह दृश्य देखकर पूरी दुनिया अचम्भित हुए जा रही है। अगर आप अयोध्या घूमने आ रहे हैं तो यहां मंदिर ही मंदिर हैं जहां कुछ समय गुजार कर आपको एक अलग ही प्रकार की अनुभूति होगी। अब तो रामलला भी टैंट से निकल कर फाइबर से बने अस्थायी मंदिर में विराजमान हैं जहां उनके दिव्य दर्शन आसानी से किये जा सकते हैं। सप्त पुरियों में से एक नगरी माने जाने वाली अयोध्या के बारे में कहा जाता है कि इसकी स्थापना मनु ने की थी। यहां आप श्रीराम जन्मभूमि देखने के अलावा कनक भवन, हनुमानगढ़ी, राजद्वार मंदिर, दशरथ महल, श्रीलक्ष्मण किला, कालेराम मंदिर, मणिपर्वत, श्रीराम की पैड़ी, नागेश्वरनाथ, क्षीरेश्वरनाथ श्री अनादि पञ्चमुखी महादेव मंदिर, गुप्तार घाट समेत अनेक मंदिर देख सकते हैं। इसके अलावा बिरला मंदिर, श्रीमणिरामदास जी की छावनी, श्रीराम वल्लभाकुंज, श्रीलक्ष्मण किला, श्रीसियारामकिला, उदासीन आश्रम रानोपाली तथा हनुमान बाग जैसे अनेक आश्रम भी जा सकते हैं। इसके अलावा विश्व हिन्दू परिषद की कार्यशाला को भी देखना चाहिए क्योंकि बरसों से राम मंदिर निर्माण की तैयारी में यहां बड़ी संख्या में मजदूर लगे हुए थे। वैसे तो अयोध्या में लगभग हर समय कोई मेला या त्योहार चल ही रहा होता है लेकिन श्रीरामनवमी, श्रीजानकीनवमी, गुरुपूर्णिमा, सावन झूला, कार्तिक परिक्रमा, श्रीराम विवाहोत्सव आदि उत्सव यहाँ बड़े उत्साह के साथ मनाये जाते हैं। मार्च-अप्रैल में मनाया जाने वाला रामनवमी पर्व यहां सर्वाधिक जोश और धूमधाम से मनाया जाता है। उस समय यहां लाखों की संख्या में श्रद्धालु आते हैं। वैसे तो अयोध्या नगरी के हर साधु-संत का काफी मान-सम्मान किया जाता है लेकिन कई उच्चकोटि के संतों की भी यह साधना भूमि रही है। स्वामी श्रीरामचरणदास जी महाराज, स्वामी श्रीरामप्रसादाचार्य जी, स्वामी श्रीयुगलानन्यशरण जी, पं. श्रीरामवल्लभाशरण जी महाराज, श्रीमणिरामदास जी महाराज, स्वामी श्रीरघुनाथ दास जी, पं. श्रीजानकीवरशरण जी, पं. श्री उमापति त्रिपाठी जी आदि ने यहां जो प्रतिष्ठित आश्रम बनाये उनकी बहुत महत्ता है। ■

शुक्रिया एवं कृतज्ञता से संवरती है जिन्दगी

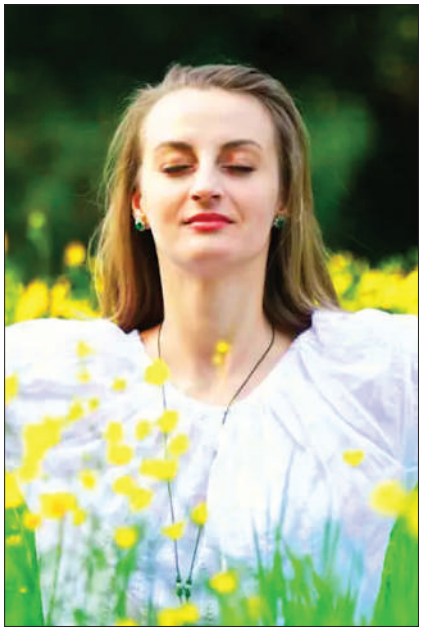

इंसानी जीवन का एक सत्य है कि आदमी दुख भोगना नहीं चाहता, किन्तु काम ऐसे करता है, जिससे दुख पैदा हो जाता है। यह आश्चर्य की ही बात है कि आदमी चाहता है सुख और इस प्रयत्न में निकाल लेता है दुख। यह बहुत विरोधाभासी बात है। लेकिन यह समझ की भूल भी है। आदमी की अज्ञानता भी है। उसके पुरुषार्थ में कहीं कोई कमी है, खोट है। जीवन को जीने और उसके लिये अपनायी जाने वाली सोच गलत है। सही विधि उसे मालूम नहीं है तभी उसके कार्य का उचित परिणाम नहीं मिल पाता। चालाकी छोड़कर एवं लोभ-स्वार्थ की मानसिकता को दरकिनार करने से ही वास्तविक सुख को प्राप्त किया जा सकता है और इसके लिये आदमी को कृतज्ञता का भाव अपनाना जरूरी है।

सौरभ सिंह

वास्तविकता यह है कि सुख प्राप्ति के लिए आदमी दुख के उत्पादन का कारखाना चला रहा है। अपने मिथ्या दृष्टिकोण के कारण वह दुख को जेनरेट कर रहा है। सुख को पाने की चाह है तो दृष्टिकोण को सम्यक बनाकर सुख प्राप्ति के अनुरूप कार्य करना होगा। हमारे पास दो रास्ते हैं या तो हम दीप हो जाएं, जो उसे दुगुना कर देता है, लेकिन इसके लिये कुछ सार्थक करना होता। धन से प्रेरित होकर नहीं, बल्कि मानवीय मूल्यों से प्रेरित होकर। क्योंकि बड़े-बड़े धन के अम्बार और महंगे साज-ओ-सामान के बजाय सार्थक संकल्प एवं कृतज्ञता का भाव जीवन को अधिक सुख देते हैं, प्रसन्न बनाते हैं।

देखा जाए तो संकीर्ण एवं स्वार्थी मनोवृत्ति दुख का सबसे बड़ा कारण है। मन में किसी को कष्ट पहुंचाने का भाव है, किसी का अनिष्ट करने का भाव है तो यह दुख का सबसे बड़ा कारण है। किसी की भावना को आहत करना स्वयं के लिये दुख को आमंत्रण देना है। हिंसा का चरमबिन्दु है, उसके पहले जो भाव या विचार हमें नकारात्मक रूप से आंदोलित और उद्वेलित करते हैं, वे हमारे दुख के लिए उत्तरदायी है। उन मनोभावों को नियंत्रित करना, उन्हें करुणा में परिवर्तित करना ही सुख है। इसका अवतरण जीवन में अगर हो गया तो डर-भय सब अपने आप तिरोहित हो जाएंगे, जीवन सुखी बन जाएगा। यह जरूरी नहीं कि माझी की तरह हम पहाड़ काटें, लेकिन जीवन को सुखमय बनाने की राह में पड़े छोटे-छोटे पत्थर हो हटा ही सकते हैं। न हों बड़े-बड़े परिवर्तन, लेकिन आशाओं के ऐसे छोटे-छोटे दीप तो हमारे ये संकल्प जला ही सकते हैं। दूसरों के सुखों की पीड़ा ही मनुष्य के दुख का कारण है। ऐसी ही संकीर्ण सोच एवं स्वार्थी मनोवृत्ति के कारण महाभारत युद्ध हो गया, मनों में गांठें बनती जा रही है। द्रौपदी द्वारा कही गई मर्मभेदी बात से दुर्योधन इतना आहत हुआ कि उसके मन में हमेशा के लिए एक गांठ बन गई। आज समाज में न दुर्योधन जैसे पुरुषों की कमी है, न द्रौपदी जैसी महिलाओं की। परिणाम हर जगह महाभारत के रूप में आ रहा है। हर घर कुरूक्षेत्र का मैदान बनता जा रहा है। महान दार्शनिक संत आचार्य महाप्रज्ञ ने कहा भी है कि यह बड़ी विचित्र बात है कि सद्गुण आदमी प्रयत्न करने पर भी जल्दी नहीं सीख पाता और दुर्गुण बिना किसी प्रयत्न के ही सीख लेता है, वैसे ही अच्छे बोल और मृदुभाषिता आदमी प्रयास करने पर भी जल्दी से नहीं सीख पाता और गाली तथा अपशब्द बिना प्रयास के ही सीख लेता है। इस प्रवृत्ति को बदलकर ही सुख पाने के प्रयत्न सफल हो सकते हैं। सोच को बदलना होगा, जिस संकीर्ण एवं विकृत सोच के साथ रहने से मन और भावों पर विपरीत प्रभाव पड़ रहा हो, वृत्तियां कलुषित और उच्छृंखल हो रही हों, जीवनशैली में विकृति आ रही हो, उनका साथ छोड़ देना ही हितकर है। हर व्यक्ति जितना अपने दुःखों से पीड़ित नहीं है, उससे ज्यादा वह दूसरों के सुखों से पीड़ित है। इसीलिये वह दुखी होता जारहा है। उसकी संकीर्ण मानसिकता एवं छोटी सोच का ही परिणाम है कि वह दुखों का सृजन करता है। इसके बावजूद वह सोचता है कि ऐसा मेरे साथ ही क्यों हुआ या फिर दुनिया के सारे दर्द मेरे लिए ही क्यों बने हैं, जबकि अगर सोचा जाए तो महत्वपूर्ण यह नहीं होता कि आपके पास पीड़ाएं कितनी हैं, जरूरी यह होता है कि आप उस दर्द के साथ किस तरह खुश रह जाते हैं। इसलिए जो कुछ भी बचा है, उसे गले लगाएं बजाए कि खोए हुए का गम मनाने के। जब हमारी दिशाएं सकारात्मक होती है जो हम सृजनात्मक रच ही लेते हैं। हमें कृतज्ञ तो होना ही होगा, क्योंकि इसके बिना छोटी-छोटी तकलीफे भी पहाड़ जितनी बड़ी बन जाती है। एक जिंदगी जीता है, दूसरा उसे ढोता है। एक दुःख में भी सुख ढूंढ लाता है, दूसरा प्राप्त सुख को भी दुःख मान बैठता है। एक अतीत भविष्य से बंधकर भी वर्तमान को निर्माण की बुनियाद बनाता है, तो दूसरा अतीत और भविष्य में खोया रहकर वर्तमान को भी गंवा देता है। कृतज्ञता जरूरी है। सभी धर्मों में कृतज्ञता का एक महत्वपूर्ण स्थान है। कृतज्ञता धार्मिक और सांस्कृतिक सीमाओं को पार करती है। सिसरो से लेकर बुद्ध तक और अन्य कई दार्शनिक व आध्यात्मिक शिक्षकों ने भी कृतज्ञता को भरपूर बांटा है और उससे प्राप्त खुशी को उत्सव की तरह मनाया है। दुनिया के सभी बड़े धर्म हिन्दू, मुस्लिम, सिख, ईसाई और बौद्ध मानते हैं कि किसी के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करना एक भावनात्मक व्यवहार है और अंत में इसका अच्छा प्रतिफल प्राप्त होता है। बड़े-बड़े पादरी और पंडितों ने इस विषय को लेकर बहुत-सा ज्ञान बांटा है, लेकिन आज तक इन विद्वानों ने इसे विज्ञान का रूप नहीं दिया है। बाल्मीकि ने रामायण में भी इस बात का उल्लेख किया है कि परमात्मा ने जो कुछ तुमको दिया है, उसके लिए उनके प्रति कृतज्ञता प्रकट करो। हालांकि इसका विज्ञान बस इस छोटे से वाक्य में समाहित है कि जितना आप देंगे, उससे कहीं अधिक यह आपके पास लौटकर आएगा, लेकिन इसे समझ पाना हर किसी के वश की बात नहीं है। कितना दें और क्यों इस बात में बिल क्लिंटन ने देने का गणित बेहतर ढंग से समझाया है। ■

झंडेवाला पार्क के नायक थे अमर शहीद

गुलाब सिंह लोधी

भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन का इतिहास ऐसे वीर वीरांगनाओं की कहानियों से भरा पड़ा है जिनके योगदान को कोई मान्यता नहीं मिली है। ऐसे ही हमारे अमर शहीद गुलाब सिंह लोधी हैं जिनका योगदान भी भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में अग्रणी रहा है। लेकिन दुर्भाग्य यह रहा है कि अमर शहीद गुलाब सिंह लोधी को इतिहासकारों ने पूरी तरह से उपेक्षित रखा है।

ब्रह्मानंद राजपूत

भारत के स्वतंत्रता संग्राम में अनेक वीर वीरांगनाओं ने अपने प्राणों की बाजी लगाकर अंग्रेजी हुकूमत के विरुद्ध खुला विद्रोह किया और स्वतंत्रता की खातिर शहीद हो गये। इन्हीं शहीदों में क्रांतिवीर गुलाब सिंह लोधी का नाम भी शामिल है। जिन्होंने अपने प्राणों की बाजी भारत माँ को आजादी दिलाने के लिए लगा दी। उनका जन्म एक किसान परिवार में उत्तर प्रदेश के उन्नाव जिले के ग्राम चन्दीकाखेड़ा (फतेहपुर चौरासी) के लोधी परिवार में सन 1903 में श्रीराम रतनसिंह लोधी के यहां हुआ था। लखनऊ के अमीनाबाद पार्क में झण्डा सत्याग्रह आन्दोलन में भाग लेने उन्नाव जिले के कई सत्याग्रही जत्थे गये थे, परन्तु सिपाहियों ने उन्हें खदेड़ दिया और ये जत्थे तिरंगा झंडा फहराने में कामयाब नहीं हो सके। इन्हीं सत्याग्रही जत्थों में शामिल वीर गुलाब सिंह लोधी किसी तरह फौजी सिपाहियों की टुकड़ियों के घेरे की नजर से बचकर आमीनाबाद पार्क में घुस गये और चुपचाप वहां खड़े एक पेड़ पर चढ़ने में सफल हो गये। क्रांतिवीर गुलाब सिंह लोधी के हाथ में डंडा जैसा बैलों को हांकने वाला पैना था। उसी पैना में तिरंगा झंडा लगा लिया, जिसे उन्होंने अपने कपड़ों में छिपाकर रख लिया था। क्रांतिवीर गुलाब सिंह ने तिरंगा फहराया और जोर-जोर से नारे लगाने लगे- तिरंगे झंडे की जय, महात्मा गांधी की जय, भारत माता की जय। अमीनाबाद पार्क के अन्दर पर तिरंगे झंडे को फहरते देखकर पार्क के चारों ओर एकत्र हजारों लोग एक साथ गरज उठे और तिरंगे झंडे की जय, महात्मा गांधी की जय, भारत माता की जय। झंडा सत्याग्रह आन्दोलन के दौरान देश की हर गली और गांव शहर में सत्याग्रहियों के जत्थे आजादी का अलख जगाते हुए घूम रहे थे। झंडा गीत गाकर, झंडा ऊंचा रहे हमारा, विजय विश्व तिरंगा प्यारा, इसकी शान न जाने पावे, चाहे जान भले ही जाये, देश के कोटि कोटि लोग तिरंगे झंडे की शान की रक्षा के लिए अपना सर्वस्व बलिदान करने के लिए दीवाने हो उठे थे। समय का चक्र देखिए कि क्रांतिवीर गुलाब सिंह लोधी के झंडा फहराते ही सिपाहियों की आंख फिरी और अंग्रेजी साहब का हुकुम हुआ, गोली चलाओ, कई बन्दूकें एक साथ ऊपर उठीं और धांय-धांय कर फायर होने लगे, गोलियां क्रांतिवीर सत्याग्रही गुलाबसिंह लोधी को जा लगीं। जिसके फलस्वरूप वह घायल होकर पेड़ से जमीन पर गिर पड़े। रक्त रंजित वह वीर धरती पर ऐसे पड़े थे, मानो वह भारत माता की गोद में सो गये हों। इस प्रकार वह आजादी की बलिवेदी पर अपने प्राणों को न्यौछावर कर 23 अगस्त 1935 को शहीद हो गये। क्रांतिवीर गुलाबसिंह लोधी के तिरंगा फहराने की इस क्रांतिकारी घटना के बाद ही अमीनाबाद पार्क को लोग झंडा वाला पार्क के नाम से पुकारने लगे और वह आजादी के आन्दोलन के दौरान राष्ट्रीय नेताओं की सभाओं का प्रमुख केन्द्र बन गया, जो आज शहीद गुलाब सिंह लोधी के बलिदान के स्मारक के रूप में हमारे सामने है। मानो वह आजादी के आन्दोलन की रोमांचकारी कहानी कह रहा है। क्रांतिवीर गुलाब सिंह लोधी ने जिस प्रकार अदम्य साहस का परिचय दिया और अंग्रेज सिपाहियों की आँख में धूल झोंककर बड़ी चतुराई तथा दूरदर्शिता के साथ अपने लक्ष्य को प्राप्त किया, ऐसे उदाहरण इतिहास में बिरले ही मिलते हैं। भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के समय अग्रणी भूमिका निभाने के लिए उनकी याद में केंद्र सरकार द्वारा जनपद उन्नाव में 23 दिसंबर 2013 को डाक टिकट जारी किया गया। एक सच्चा वीर ही देश और तिरंगे के लिये अपने प्राण न्यौछावर कर सकता है। ऐसे ही अमर शहीद गुलाब सिंह लोधी एक सच्चे वीर थे जिन्होंने अपने देश और तिरंगे की खातिर अपना बलिदान दे दिया और तिरंगे को झुकने नहीं दिया। अमर शहीद गुलाब सिंह लोधी का बलिदान देशवासियों को देशभक्ति और परमार्थ के लिये जीने की प्रेरणा देता रहेगा। आज हम वीर शहीद गुलाब सिंह लोधी को उनके 87वें बलिदान दिवस पर नमन करते हुए यही कह सकते हैं कि-

शहीदों की चिताओं पर लगेंगे हर वर्ष मेले।
वतन पर मरने वालों का यह बाकी निशां होगा।
जय हिंद, जय भारत ■

मराठा साम्राज्य को बुलंदियों तक ले जाने वाले योद्धा थे

पेशवा बाजीराव प्रथम

1731 को पेशवा बाजीराव ने महाराजा छत्रसाल की बेटी से विवाह किया। पेशवा ने मोहम्मद खान बंग्स की सेना को पराजित कर महाराजा छात्रसाल की जान बचाई थी और उन्हें वापस उनका बुन्देलखण्ड राज्य लौटाया था।

निधि अविनाश

पेशवा बाजीराव प्रथम एक हिन्दू सेनानी सम्राट थे। 1720 से 1740 तक उन्होंने मराठा सम्राज्य के चौथे छत्रपति शाहूजी महाराज के पेशवा का नेत्तव किया। ब्राह्मण परिवार में जन्में बाजीराव को थोरले बाजीराव के नाम से भी जाना जाता है। अपने कौशल और तेज बुद्धि से बाजीराव ने मराठा साम्राज्य का विस्तार किया और यहीं कारण है कि पेशवा बाजीराव प्रथम को सभी 9 महान पेशवाओं में से सबसे सर्वश्रेष्ठ माना जाता है। पेशवा बाजीराव के पिता पेशवा बालाजी विश्वनाथ भी छत्रपति शाहूजी महाराज के पेशवा थे। वह बचपन से ही घूड़सवारी, तलवारा, भाला चलाने के शौकिन थे। बचपन से लेकर पेशवा जबतक 20 साल के नहीं हो गए तब तक वह अपने पिता के साथ धूमते और दरबारी चालों को देखते और समझते थे। जब बाजीराव के पिता का निधन हुआ तब उनकी उम्र केवल 20 साल की थी और उसी दौरान उन्हें पेशवा बना दिया गया। पेशवा बनने के अगले 20 सालों तक बाजीराव ने अपने तेज कौशल और साहस से मराठा सम्राज्य का नेतृत्व किया। इस दौरान उन्होंने कई लड़ाईया लड़ी और हर युद्ध को जीतते गए। एक शूरवीर योद्धा के साथ-साथ वह एक कुशल घुड़सवार भी थे। वह घोड़े पर ही बैठकर सामने दुशमन की ओर भाला फेंकते थे कि धुड़सवार अपने घोड़े सहित घायल हो जाता था। पेशवा बाजीराव का नाम इतिहास के उन महान योद्धाओं में आता है जिन्होंने कभी भी अपने जीवन में युद्ध नहीं हारा।

मुस्लिम महिला मस्तानी से शादी

1731 को पेशवा बाजीराव ने महाराजा छत्रसाल की बेटी से विवाह किया। पेशवा ने मोहम्मद खान बंग्स की सेना को पराजित कर महाराजा छात्रसाल की जान बचाई थी और उन्हें वापस उनका बुन्देलखण्ड राज्य लौटाया था। इसी से खुश होकर उन्होंने अपनी बेटी मस्तानी की शादी पेशवा बाजीराव से करा दिया। एक मुस्लिम महिला से शादी करने और उनसे संबंध होने कारण पेशवा बाजीराव को अपने अंतिम दिनों में काफी कलेश झेलने पड़े और इसका परिणाम महाराष्ट्र के शासन को भुगतना पड़ा। 28 अप्रैल

1740 को अचानक रोग के कारण उनकी असामयिक मृत्यु हो गई।

पेशवा बाजीराव प्रथम के सैन्य अभियान

सन 1724 में शकरखेडला में बाजीराव पेशवा ने मुबारिज खाँ को परास्त किया था।

सन 1724 से 1726 तक मालवा तथा कर्नाटक पर प्रभुत्व स्थापित कर लिया।

सन 1731 में दभोई में त्रिंबकराव को नतमस्तक कर बाजीराव ने आंतरिक विरोध का दमन किया।

सीदी, आंग्रिया तथा पुर्तगालियों एवं अंग्रेजो को भी बहुत ही बुरी तरह पराजित किया। हैदराबाद के (प्रथम) निजाम आसफ जाह प्रथम ने छत्रपति शाहू के अधिकार को मान्यता देने से इनकार कर दिया और सिंहासन के प्रतिद्वंद्वी दावेदार को स्थापित करने के लिए मराठा क्षेत्रों पर आक्रमण किया। इस युद्ध में बाजी राव ने निजाम को हरा दिया था। इसे पालखेड़ की लड़ाई भी कहा जाता है। अपने छोटे भाई चिमाजी अप्पा को अपनी सेना का एक बड़ा हिस्सा सौंपते हुए, मराठा सेना ने अमझेरा की लड़ाई के दौरान गिरधर बहादुर और दया बहादुर के नेतृत्व में एक बहुत बड़ी मुगल सेना को शामिल किया और हराया। राजा छत्रसाल अपने मुगल अधिपतियों के खिलाफ विद्रोह में उठे थे और 1728 में बुंदेलखंड में अपना राज्य स्थापित किया था। बाद में मुहम्मद खान बंगश के तहत एक मुगल सेना ने राजा छत्रसाल का किला घेर लिया था। राजा छत्रसाल ने बाजीराव को सहायता के लिए एक अनुरोध भेजा लेकिन अपने मालवा अभियान के कारण वह व्यस्त थे। बाजीराव ने अंततः 1729 में 70,000 की सेना के साथ बुंदेलखंड की ओर मार्च किया। इस लड़ाई में मुहम्मद खान तुरंत हार गए और राजा छत्रसाल को उनका राज्य वापस मिल गया। इसी दौरान बाजीराव की शादी राजा छत्रसाल की बेटी मस्तानी से करा दी गई। ■

कोलाहल में भी गूंजती थी

राकेश झुनझुनवाला की आवाज

कोलाहल में भी राकेश झुनझुनवाला की आवाज को साफतौर पर सुना जा सकता था। उनकी आवाज में विश्वास और अनुभव को महसूस किया जा सकता था। वे जब किसी से मिलते तो ये ही कहते थे- क्या हाल है आपका ? क्या कर सकता हूं मैं आपके लिए? मार्केट किस तरफ जायेगी... जाहिर है, वे जब मार्केट का जिक्र करते थे तब वे शेयर बाजार की चाल के बारे में अपने करीबियों से भी उनकी राय पूछते थे। हां, पर वे किसी भी कंपनी के स्टॉक में निवेश करते हुये अपने शेयर मार्केट के अनुभव का ही सहारा लेते थे। उनके आकस्मिक निधन से देश के उन लाखों निवेशकों का एक तरह से विश्वस्त मार्गदर्शक विदा हो गया है, जिसे देखकर वे हजारों निवेशक भी शेयर मार्केट में निवेश करके अच्छा पैसा कमाने लगाने थे।

आर.के. सिन्हा

वे बेशक आज के दिन के देश की शेयर मार्केट के सबसे बड़े ब्रांड एंबेसेडर थे। भारत के शेयर बाजार का जिक्र उनकी चर्चा किये बगैर अधूरा ही रहता था। राकेश झुनझुनवाला का संबंध मुंबई में बस गये एक मारवाड़ी परिवार से था। उनके पिता राजस्थान के मारवाड़ क्षेत्र से मुंबई में आकर बस गये थे। वे इनकम टैक्स विशेषज्ञ थे। वे मेहनत करके घर चलाने वाले इंसान थे। राकेश झुनझुनवाला ने अपने पिता को कड़ी मेहनत करते हुये देखा था। वे स्कूल के दिनों से ही मेधावी छात्र थे। वे चार्टर्ड एकाउंटेंट बने और उसके बाद वे देखते-देखते स्टॉक मार्केट के सबसे खास निवेशक और विशेषज्ञ बन गये। उन्हें देश के लाखों निवेशक रोज बिजनेस चैनलों पर सुनकर शेयर बाजार में निवेश करने के संबंध में अपनी राय बनाते थे। हालांकि, वे बार-बार अपने सुनने वालों को कहते थे कि किसी भी कंपनी के शेयर में निवेश करने से पहले कंपनी का पूरा विश्लेषण कर लो। आपको अच्छे से विश्लेषण किये बगैर निवेश करने से बचना होगा। इसके अलावा कंपनी की भविष्य की योजनाओं और उसके टॉप मैनेजमेंट पर भी नजर रखनी होगी। अगर आप ये सब कर सकते हैं तब ही आपको स्टॉक मार्केट में निवेश करने के बारे में सोचना चाहिए, अन्यथा नहीं। उनसे टिप्स लेकर लाखों निवेशकों ने शेयर मार्केट से अच्छा पैसा कमाया। कहते ही हैं कि जो इंसान बिजनेस में रिस्क लेने से घबराता हो उसे बिजनेस की दुनिया से दूर ही रहना चाहिये। बिजनेस और निवेश में कभी-कभी तगड़े झटके भी लगते हैं। राकेश झुनझुनवाला ने भी बिजनेस में कई बार भारी नुकसान उठाया था। पर वे हमेशा ही रिस्क लेने के लिये तैयार रहते थे। इस लिहाज से राकेश झुनझुनवाला सौ फीसद व्यापारी मन के इंसान थे। वे बिजनेस में घाटा उठाने से घबराते नहीं थे। उनकी योजनाएं भी दीर्घकालिक होती थीं। वे मानते थे कि उस धंधे में निवेश करना चाहिए जिसमें आगे चलकर ठोस संभावनाएं बनती हों। इसी सोच को ध्यान में रखते हुये उन्होंने अकासा एयर नाम की एयरलाइन एक अल्ट्रा-लो कॉस्ट विमान सेवा में मोटा निवेश भी किया था। राकेश झुनझुनवाला इस एयरलाइन में 3.5 करोड़ डॉलर या करीब 264 करोड़ रुपए का निवेश कर चुके थे। वो इसके लिए 70 विमान खरीदने की तैयारी कर रहे थे। राकेश झुनझुनवाला एविएशन सेक्टर में तगड़ा निवेश करने लगे तो कहते हैं कि उन्हें उनके एक उद्योगपति मित्र ने कहा कि यह (एविएशन) इस तरह का बिजनेस है जहां पर अरबपति आते है और वे लखपति बनकर रह जाते हैं। उन्होंने अपने मित्र को फौरन जवाब दिया कि भारत का एविएशन सेक्टर लंबी छलांग लगाने के लिये तैयार है। अब देश का चप्पल पहनने वाला शख्स भी विमान से सफर करने लगा है। देश के अनेक हवाई अड्डों पर रेलवे स्टेशनों से अधिक मुसाफिरों की भीड़ रहती है। इसलिये एविएशन सेक्टर की ग्रोथ को अब कोई नहीं रोक सकता। उनकी बात सही थी। देश में मिडिल क्लास की बढ़ती संख्या और एविएशन सेक्टर का विकास एक साथ हो रहा है। अब मिडिल क्लास सिर्फ हवाई यात्रा करके ही अपने गंतव्य स्थान की तरफ जाना पसंद करता है, इसलिये देश में नए-नए हवाई अड्डों का निर्माण हो रहा है। यह क्रम जारी ही रहने वाला है। देश के एविएशन सेक्टर में रोजगार के अवसर भी भरपूर पैदा हो रहे हैं। जाहिर है, राकेश झुनझुनवाला जैसा समझदार निवेशक पैसा फूंकने के लिए तो कहीं निवेश करेगा नहीं। इसलिए ही उन्होंने अकासा एयर में निवेश किया था। सरकार ने जब आकासा एयर को अपनी सेवा को शुरू करने की मंजूरी थी उसके कुछ समय के बाद वे प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी से भी मिले थे। इस मुलाकात की एक तस्वीर में वे कुर्सी पर बैठे दिख रहे हैं, जबकि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और राकेश की पत्नी रेखा झुनझुनवाला खड़े होकर उनसे बात करते नजर आ रहे थे। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी भी भारत के वॉरेन बफेट, बिग बुल और दिग्गज निवेशक राकेश झुनझुनवाला का सदा सम्मान करते थे। राकेश झुनझुनवाला के निधन पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने

उन्हें याद करते हुए कहा कि वे अदम्य थे। वह काफी मजाकिया और व्यावहारिक थे। भारत को वित्तीय दुनिया में उन्होंने अमिट योगदान दिया। वह भारत की प्रगति के प्रति अति भावुक भी थे। उनका आकस्मिक जाना दुखद है। उनके परिवार और प्रशंसकों के प्रति मेरी संवेदनाएं।

राकेश झुनझुनवाला मलंग किस्म के शख्स थे। वे कभी-कभी अपने दफ्तर में बिना प्रेस की हुई शर्ट पहनकर भी चले जाते थे। एक बार राकेश झुनझुनवाला से किसी पत्रकार ने पूछा कि आपकी शर्ट में सिलवटें क्यों रहती हैं। राकेश झुनझुनवाला ने कहा था, मैंने 600 रुपये देकर अपनी शर्ट प्रेस कराई थी, इसके बाद भी उसमें सिलवटें पड़ गईं तो मैं क्या कर सकता हूं? दरअसल वह शर्ट ही ऐसी थी। मुझ पर इससे क्या फर्क पड़ता है? मुझे कौन सा वहां क्लाइंट बनाना या कस्टमर बनाना है? मैं तो शॉर्ट्स पहनकर भी ऑफिस चला जाता हूं। राकेश झुनझुनवाला कई कंपनियों के बोर्ड में डायरेक्टर भी थे। वे जब बोर्ड की बैठकों में भाग लेते थे तो कंपनी के सीईओ और दूसरे आला अफसर पूरी तैयारी के साथ उसमें भाग लेते थे क्योंकि, वे खामियां दिखने पर तो सवालों की झड़ी लगा देते थे। वे सिर्फ सवाल ही नहीं पूछते थे। राकेश झुनझुनवाला उचित सुझाव भी देते थे, ताकि कंपनी को लाभ होने लगे और उसके निवेशक भी कमाने लगें। उनके निधन से देश ने वन एंड ऑनली राकेश झुनझुनवाला को खो दिया है। वे जीवंत, अर्तदृष्टिपूर्ण और भारत को लेकर बहुत आशावादी इंसान थे। ■

(लेखक वरिष्ठ संपादक, स्तंभकार और पूर्व सांसद हैं)

भारत के वॉरेन बफेट, बिग बुल और दिग्गज निवेशक राकेश झुनझुनवाला एक ऐसी शख्सियत थे जिन्होंने जोखिमों से भरे बाजार में निवेशकों के बीच विश्वसनीयता का मजबूत रिश्ता कायम किया था, झुनझुनवाला की जीवन यात्रा निवेशकों के प्रति सदैव पाक साफ रही। इसी का नतीजा था कि उनके ऊपर कभी किसी प्रकार के फरेब का आरोप नहीं लगा।

हर दौर में रहस्य, रोमांच और रोमांस से भरपूर पुनर्जन्म की कहानियों पर बनी फिल्मों ने

दर्शकों का किया है मनोरंजन

पुनर्जन्म भले आज भी सबके लिए पहेली हो मगर इस विषय पर फिल्में बनाना हिंदी सिनेमा के लिए हर दौर में सुपरहिट सब्जेक्ट रहा है। इससे जुड़ी कहानियाँ शुरू से ही लोगों में कौतूहल जगाती रही हैं। इस विषय ने हिंदी सिनेमा को भी बेहतरीन फिल्मों की विरासत दी है। जो कि न सिर्फ बेहतरीन कहानी और संवाद बल्कि दिलकश गीत-संगीत के कारण भी सिने दर्शकों के लिए यादगार फिल्में बन गयी हैं। हिंदुस्तानी सिनेमा में रहस्य, रोमांच और रोमांस से सराबोर ये फिल्में सिने दर्शकों की रूह को स्पर्श कर संवेदनाओं को झंकृत करती रही हैं। इनमें सिनेमा के पर्दे पर प्रेमी-प्रेमिका के बीच के रूमानी संवाद रोंगटे खड़े करते रहे हैं। श्वेत-श्याम चित्रपट युग से ही इस विषय पर फिल्मकार अपने-अपने अंदाज में फिल्में बना रहे हैं। ईस्टमैन कलर फिल्मों के दौर में भी ये पसंदीदा विषय रहा, आज के अत्याधुनिक तकनीक से लैस सिनेमा के लिए भी पुनर्जन्म बॉक्स ऑफिस का हिट फॉर्मूला है।

डॉ. महेश चंद्र धाकड़

कमाल अमरोही ने देवानंद और आशा पारिख को लेकर वर्ष 1949 में पुनर्जन्म पर फिल्म 'महल' बनाई थी, निर्देशन शंकर मुखर्जी ने किया। किशोर कुमार और आशा भौंसले की आवाज में कल्याण जी आनंद जी के संगीत में सजा आनंद बक्शी का लिखा यह गाना बहुत पसंद किया गया-

"ये दुनिया वाले पूछेंगे...
मुलाकात हुई क्या बात हुई,
ये बात किसी से न कहना...!"

इसके बाद 1967 में राजश्री प्रोडक्शन्स की फिल्म 'मिलन' आयी जिसमें सुनील दत्त, नूतन जैसे स्टार थे। फिल्म का निर्देशन अदुर्ती सुब्बाराव ने किया था। इसमें दो प्रेमियों की प्रेम कहानी है, जो कि एक-दूसरे को पाने के लिए दोबारा जन्म लेते हैं। आनंद बक्शी का लिखा फिल्म का एक गीत लक्ष्मीकांत प्यारेलाल के संगीत और मुकेश व लता मंगेशकर की आवाज में मानो अमर हो गया, इसको आज भी सुनो तो सुखानुभूति दे जाता है-

"सावन का महीना, पवन करे सोर
सावन का महीना, पवन करे शोर...!"

फिल्म 'मिलन' का मुकेश की आवाज में एक और गीत है, जो बेहद लोकप्रिय रहा-

"राम करे ऐसा हो जाए, मेरी निंदिया
तोहे मिल जाए,
मैं जागूँ, तू सो जाए मैं जागूँ, तू सो जाए...!"

साल 1968 में राम माहेश्वरी के निर्देशन में 'नीलकमल' फिल्म आयी, इसमें मनोज कुमार, वहीदा रहमान और राजकुमार मुख्य भूमिका में थे। फिल्म चित्रसेन नाम के चित्रकार के एकतरफा प्यार की कहानी है। राजकुमार ने चित्रसेन का मुख्य किरदार निभाया। इस फिल्म में साहिर लुधियानवी का लिखा मोहम्मद रफी की आवाज और रवि शंकर शर्मा के संगीत में सजा यह गीत जबर्दस्त हिट रहा-

"आजा.. आजा... आजा... आजा...!
तुझको पुकारे मेरा प्यार...
आजा मैं तो मिटा हूँ तेरी चाह में...!"

फिल्म का एक और बेहद लोकप्रिय गाना आज भी याद आता है-

"बाबुल की दुआएं लेती जा, जा तुझको सुखी संसार मिले,
मैके की कभी न याद आयें, ससुराल में इतना प्यार मिले...!"'

सन 1976 में निर्माता मुशीर रियाज की शक्ति सामंत के निर्देशन में राजेश खन्ना और हेमा मालिनी अभिनीत फिल्म आयी थी 'महबूबा', इसका एक गीत बहुत लोकप्रिय रहा जो दो बार फिल्माया था, एक में आवाज लता मंगेशकर की है, दूसरे में किशोर कुमार की, वहीं संगीत आरडी बर्मन का है-

"मेरे नैना सावन भादो
फिर भी मेरा मन प्यासा...!
बात पुरानी है एक कहानी है,
हो ओ बात पुरानी है,
अब सोचूँ तुम्हें याद नहीं है,
अब सोचूँ नहीं भूले...वो सावन के झूले...!"

सन 1980 में फिल्म आयी 'कर्ज', शोमैन सुभाष घई

दो प्रेमियों की जन्म-जन्मांतर की कहानी

वर्ष 1958 में फिल्म आयी 'मधुमती' जिसमें निर्देशक बिमल रॉय ने मुख्य भूमिका में दिलीप कुमार और वैजंयती माला को लिया, फिल्म की कहानी दो प्रेमियों की जन्म-जन्मांतर की कहानी है, जो 30 साल बाद दोबारा जन्म लेते हैं। सलिल चौधरी के संगीत में सजा, शैलेन्द्र का लिखा, मुकेश की आवाज में ये गाना लोकप्रिय रहा-

"सुहाना सफर और ये मौसम हसीं...
हमें डर है हम खो न जाए कहीं...!"

इसी फिल्म का मोहम्मद रफी की आवाज में एक गीत यह भी बहुत पसंद किया गया-

"दर्दे दिल, दर्दे जिगर दिल में जगाया आपने...
पहले तो मैं शायर था, आशिक बनाया आपने...!"

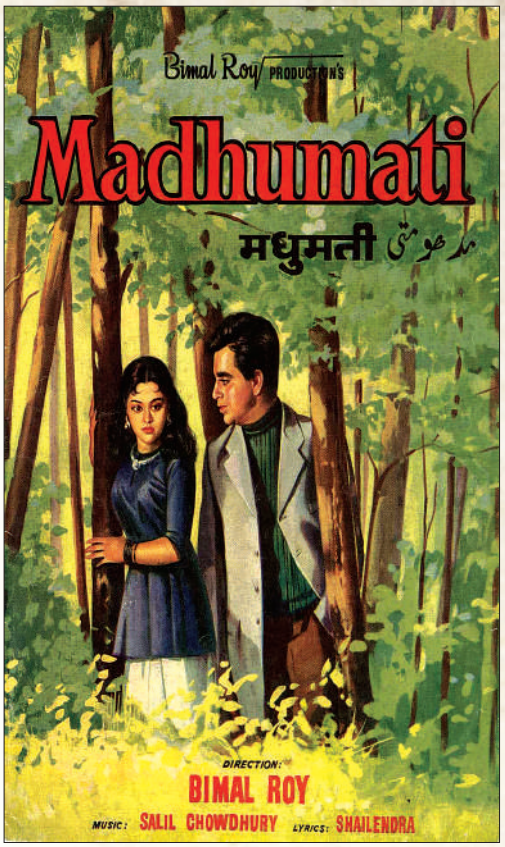

के निर्देशन में बनी इस फिल्म की कहानी रवि वर्मा नाम के लड़के की है, जिसकी बीवी ही उसकी हत्या कर देती है और वह बदला लेने के लिए मॉन्टी के रूप में दोबारा जन्म ले लेता है। फिल्म में ऋषि कपूर, टीना मुनीम और सिमी ग्रेवाल मुख्य भूमिकाओं में थे। इस फिल्म के संगीतकार लक्ष्मीकांत प्यारेलाल के संगीत से सजे कई गाने बेहद हिट रहे। इसमें किशोर कुमार और लता मंगेशकर की आवाज में आनंद बक्शी का लिखा यह गाना बहुत मशहूर हुआ-

"तू कितने बरस का,
तू कितने बरस की,
मैं सोलह बरस की,
तो मैं सत्रह बरस का,
सोलह सत्रह सत्रह सोलह,
मिल न जायें नैना,
एक दो बरस जरा दूर रहना,
एक दो बरस जरा दूर रहना,
कुछ हो गया तो फिर न कहना...!"

वर्ष 1981 में चेतन आनंद द्वारा लिखित और निर्देशित फिल्म 'कुदरत' में राजेश खन्ना, हेमा मालिनी, राजकुमार और विनोद खन्ना थे। फिल्म में आरडी बर्मन ने जबर्दस्त संगीत दिया। लिरिक्स मजरूह सुल्तानपुरी ने लिखे। लता मंगेशकर की आवाज में यह गीत हिट रहा-

"तुने ओ रंगीले कैसा जादू किया
पिया पिया बोले मतवाला जिया...
बाहों में छुपाके ये क्या किया
ओ रे पिया ओ ओ
तुने ओ रंगीले कैसा जादू किया...!"

फिल्म में किशोर कुमार व परवीन सुल्ताना की आवाज में यह गीत भी हिट रहा, जिसको दो बार अलग अलग आवाज में फिल्माया-

"हमें तुमसे प्यार कितना, ये हम नहीं जानते
मगर जी नहीं सकते तुम्हारे बिना,
हमें तुमसे प्यार कितना, ये हम नहीं जानते
मगर जी नहीं सकते तुम्हारे बिना,
हमें तुमसे प्यार!"

नब्बे के दशक में भी यह विषय लुभाता रहा। सन 1992 में फिल्म 'सूर्यवंशी' आयी, 1995 में 'करन अर्जुन' आयी। इसी विषय पर ओम शांति ओम, मक्खी, हाउसफुल-4, मगाधीरा, प्रेम, डेंजरस इश्क, लव स्टोरी 2050, तेरी मेरी कहानी आदि फिल्में भी उल्लेखनीय रही हैं। ■

पर्यावरण बचाने के लिए जरूरी चिंतन

संतोष उत्सुक

जागरूकता, शरीर और दिमाग में घुस जाए तो हर असंभव काम संभव हो जाता है। महान संतुष्टि का होना है कि अनेक अध्यात्मिक गुरु यानी सामान्य व्यक्ति बिल्कुल नहीं, इस पुनीत कार्य के चिंतन में व्यस्त हैं। पर्यावरण बचाने और सजाने के लिए सिर्फ चिंतन जरूरी है। जिस भवन में ज्ञान विज्ञान की छत्रछाया हमेशा रहती है वहां बैठकर यह जरूरी काम आसानी से किया जा सकता है। भवन के नाम के कारण प्रभाव उगना निश्चित है। जब खुशनुमा, सुगंधित माहौल में बात की जाएगी तो वह चिंतन में बदल जानी स्वभाविक है। आन्दोलन या उद्देश्य का नाम हिंदी में न रखकर अंग्रेजी में रखा जाए तो वास्तव में गहन प्रभाव पैदा होता है। बहुत गहरे बैठ, चिंतन कर योजनाओं का प्रारूप बनाया जाता है। ऐसे गहन चिंतन सत्र को आयोजित करने का एक मात्र उद्देश्य, आज के पर्यावरण को किसी भी तरह बचाना ही नहीं, ज्यादा समझदार हो चुकी आने वाली पीढ़ियों के लिए जागरूक दुनिया तैयार करना होता है। जागरूकता, शरीर और दिमाग में घुस जाए तो हर असंभव काम संभव हो जाता है। महान संतुष्टि का होना है कि अनेक अध्यात्मिक गुरु यानी सामान्य व्यक्ति बिल्कुल नहीं, इस पुनीत कार्य के चिंतन में व्यस्त हैं। यह प्रशंसनीय और दिलचस्प है कि ऐसे गहन विचार सत्रों में राजनीतिजी जरूर तशरीफ लाती हैं क्यूंकि उनके बिना कुछ भी नहीं हो सकता। वह बात दीगर है कि पर्यावरण पर चिंतन से भी ज्यादा गहन चिंतन मनन की जरूरत है। आम आदमी को क्या समझ कि पर्यावरण के लिए उचित चिंतन, किस आसन पर बैठकर, किस मुद्रा में, किस दिशा में देखकर कैसे किया जाता है। यहां वही लोग चिंतन करने आते हैं जिन्हें दुनिया अधिकृत चिंतक मानती है। वैसे हमारे आध्यात्मिक गुरु नदिया किनारे आध्यात्मिक संगीत समारोह आयोजित करते हैं। पर्यावरण दूषित करते हैं। इतना ही नहीं सरकारजी द्वारा बड़ी हिम्मत के बाद किया गया जुमार्ना भी अदा नहीं करते। पर्यावरण पर चिंतन शिविर में, अपनी नहीं पड़ोसी की, अपने मोहल्ले की नहीं दूसरे मोहल्ले की, अपने शहर की नहीं पड़ोसी शहर की, अपने राज्य की नहीं किसी और राज्य की, अपने देश की नहीं दूसरे देशों की गलती माननी चाहिए। अपने प्रयासों की खूब तारीफ करनी चाहिए। प्रयास न किए हों तो संभावित प्रयास और देखे जाने वाले खवाबों की प्रशंसा करनी चाहिए। श्रेष्ठ चिंतन से जब हमारा मन निर्मल हो जाएगा तो हम सकारात्मक सोचने लगेंगे। निश्चित ही हमें लगने लगेगा कि हम ठीक राह पर हैं, उचित कर रहे हैं, नाहक परेशान होने की जरूरत नहीं है। मानव जीवन में सब मिथ्या है, जब जीवन मिथ्या है तो वातावरण, पर्यावरण और चिंताओं का वरण मिथ्या है। मन में यह सोच विकसित होते ही हमें बेहतर महसूस होना शुरू हो जाएगा। लगने लगेगा कि चिंतन बैठक से हमें बहुत लाभ हुआ है। आस पास का वातावरण सुधरा है यानी पर्यावरण को फायदा हुआ है। पर्यावरण बारे सामान्य संकल्प लेने से ही कई बार बहुत लाभ पहुंचता है। विधिवत संकल्प लेने से और अधिक फायदा होता है। उचित रंग के वस्त्र, सही उच्चारित मंत्र और शुभ मुहूर्त में, बहुत से प्रिय लोगों के साथ समूह में विधिवत संकल्प यज्ञ करने से होने वाला लाभ निराला होता है। ■

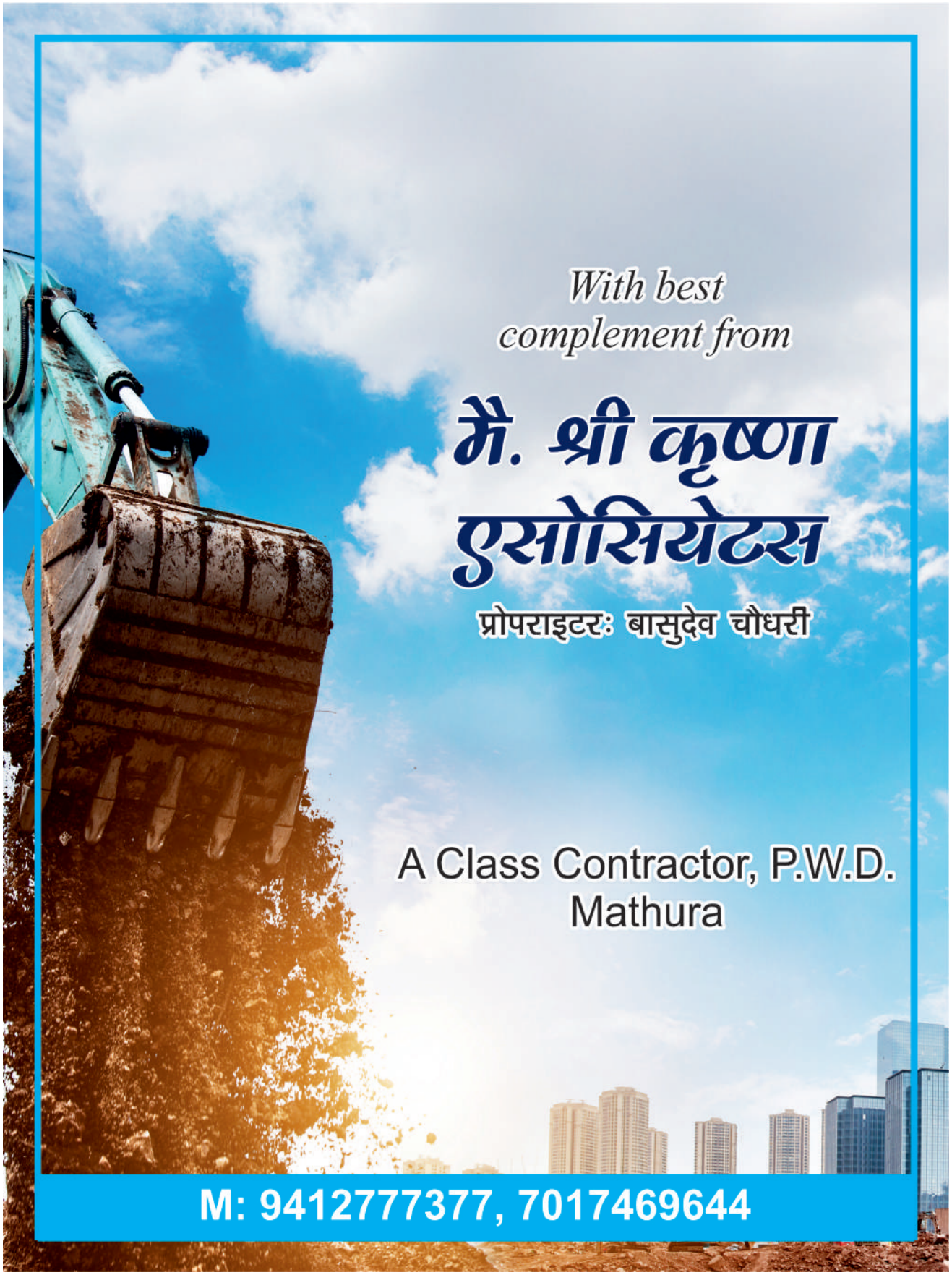
With best
complement from
मै. श्री कृष्णा
एसोसियेटस
प्रोपराइटरः बासुदेव चौधरी
A Class Contractor, P.W.D.
Mathura
M: 9412777377, 7017469644

कारोबारी बंटवारे के बाद रखी नई आधारशिला

साल 1972 में तीनों ताऊजी और पिताजी के बीच कारोबारी बंटवारा हो इसके बाद पिताजी ने अपने व्यापार की नए सिरे से श्रॉफ सेल्स कॉर्पोरेशन के नाम से आधार शिला रखी। अनिल मगन बताते हैं हम तीन भाई और 2 बहनें है छोटे भाई सुशील मगन, राजेश मगन है। बड़ी बहन सरोज हैं, वहीं मुझसे छोटी वर्षा है। क्योंकि मैं परिवार का बड़ा बेटा था, तो कारोबार और परिवार में मेरे दायित्व भी अधिक रहे। साल 1972 में ही मैं सेंट जॉन्स कॉलेज से स्नातक की पढ़ाई कर पिताजी के साथ कारोबार में सक्रिय हो गया। आगे चलकर 1978 तक दोनों छोटे भाई भी अपनी पढ़ाई पूरी कर कारोबार में आ गए और धीरे-धीरे कारोबार का विस्तार होता गया।

वचनबद्धता ही निर्धारित करती है कामयाबी

अनिल मगन

सपने जरुर देखें लेकिन खुली आखों से और वो भी दिन के उजाले में, यह कामयाबी के सफर में आगे बढ़ने के लिए आपकी पहली शुरूआत है, यह कहना है श्रॉफ ग्रुप के चेयरमैन अनिल मगन का। पिता श्री शांति स्वरुप मगन और मां श्रीमती सत्यवती मगन के तीन बेटों में 29 जनवरी 1953 को आगरा में जन्मे बड़े बेटे अनिल मगन ने सेंट जॉन्स कॉलेज से स्नातक करने के बाद अपने पारिवारिक कारोबार से अपने करियर की शुरूआत की। लगभग पांच दशक के अपने कारोबारी सफर में निरंतर कदम दर कदम सफलता की सीढ़ियां चढ़ने वाले अनिल मगन फुटवियर कम्पोनेंट्स के क्षेत्र में प्रथम पंक्ति के लोगों में शुमार किये जाते हैं। एक इंटरव्यू के दौरान *युवक पत्रिका के कांसेप्ट एडिटर अजय शर्मा* ने अनिल मगन से उनकी जीवन यात्रा से जुड़े अनुभवों पर चर्चा की। इस दौरान उनसे बातचीत में तमाम अनकहे पहलू कुछ इस तरह हमारे सामने आए...

बंटवारे के संघर्ष में परिवार ने शून्य से उठकर खुद को किया खड़ा

पारिवारिक संघर्ष से जुड़ी स्मृतियों को साझा करते हुए अनिल मगन कहते हैं कि 1947 में भारत-पाक बंटवारे वह क्रूरकाल भले ही हमने नहीं देखा, लेकिन पिताजी और दादाजी से जो किस्से सुनते थे उनसे हमें यह अहसास जरुर हुआ कि पाकिस्तान में अपना सबकुछ छोड़कर नए सिरे से यहाँ खुद को स्थापित करना उनके लिए कितना चुनौतीपूर्ण रहा होगा। ताऊजी रामनाथ मगन, हरिवंश लाल, गुरुदयाल मल और पिताजी ने मिलकर आगरा में आकर शून्य से अपनी कारोबारी शुरूआत की। 1952 में उन्होंने श्रॉफ ग्रुप की बुनियाद रखी, प्रारम्भ सूक्ष्म स्तर पर चमड़े की ट्रेडिंग से ही हुआ। वक्त के साथ उनकी मेहनत रंग लाई और उन्होंने कारोबार खड़ा करने के साथ साल 1956 में मोती कटरा में अपना एक शानदार आशियाना भी बना लिया।

साल दर साल कारोबारी सफर

1952
श्रॉफ ग्रुप की हुई शुरूआत

1972
श्रॉफ सेल्स कॉर्पोरेशन

1975
एलीगेंट फुटवियर प्राइवेट लिमिटेड

1995
श्रॉफ पॉलीटेक

1999
एआरएस ग्लोबल प्राइवेट लिमिटेड

2000
एलीगेंट एंटरप्राइजेज

2016
श्रॉफ ओवरसीज

2017
श्रॉफ इम्पैक्स प्राइवेट लिमिटेड

पाक में था कारोबार का बड़ा साम्राज्य

दादाजी का पाक में बड़ा कारोबार था। शुगर मिल और ट्रेडिंग से लेकर कई प्रकार के कारोबारों में सक्रिय थे। दिग्गज उद्यमियों में उनको शुमार किया जाता था, लेकिन सेकेंड वर्ल्ड वॉर के समय एक विशेष परिस्थिति के चलते उनका कारोबार डूब गया। वक्त ने फिर पलटी मारी और उन्होंने फिर अपने कारोबार को उबारा।

वचनबद्धता से ही मिला मुकाम

एक सवाल के जबाब में अनिल कहते हैं कि एक आदर्श कारोबारी के लिए सबसे पहली जरुरत वचनबद्धता है, जिससे बाजार में आप लोगों के बीच भरोसा पाते हैं और अगर अपने बाजार में लोगों के बीच भरोसा कायम कर लिया तो फिर आपको कामयाब होने से कोई नहीं रोक सकता।

दिन में खुली आंखों से देखे सपने

अपने पिताजी को अपना आदर्श मानने वाले अनिल युवाओं को सन्देश देने की बात पर कहते हैं कि सपने जरुर देखें लेकिन खुली आखों से और वो भी दिन के उजाले में। यह कामयाबी के सफर में आगे बढ़ने के लिए आपकी पहली शुरूआत है। दूरदर्शी सोच का होना भी महत्वपूर्ण है। असफलता से डरे नहीं, उसपर चिंतन करें आगे बढ़ें, कामयाबी आपको अवश्य मिलेगी।

बच्चों ने मिलकर दी करोबार को नई दिशा

बेटा निमित और भतीजे मोहित, रोहित और सौरभ ने अपनी पढ़ाई पूरी कर अपने पारिवारिक कारोबार को आगे बढ़ाने की परम्परा को कायम रखते हुए आधुनिक बाजार के अनुसार करोबार को नई दिशा देते हुए शू कम्पोनेंट्स- रबर शीट, एडेसिव, सोल, थ्रेड आदि का व्यवसाय बढ़ाया और आगरा के अतिरिक्त दिल्ली और कोलकाता में अपने ऑफिस शुरू किये।

इसलिए श्रॉफ ग्रुप बना हमारे कारोबार का ब्रांड नेम

हमारे पूर्वज सर्राफा कारोबार से जुड़े थे इसलिए सर्राफा उनके सर नेम के रूप में पहचाना जाने लगा। आगे चलकर अगली पीढ़ी ने इसे श्रॉफ के रूप में परिवर्तित करते हुए समूह को श्रॉफ ग्रुप का नाम दिया।

समाजसेवा के क्षेत्र में पत्नी ने बनाई अलग पहचान

एक सवाल के जवाब में अनिल कहते हैं कि पत्नी रश्मि मगन समाजसेवा के क्षेत्र में संकल्प चेरिटेबल ट्रस्ट के माध्यम सक्रिय हैं। मुझे खुशी है कि एक समय उनको मेरे नाम से जाना जाता था, लेकिन आज इसके उलट लोग मुझे मेरी पत्नी के नाम से पहचानते हैं। वे एक दूसरी संस्था मुस्कान के नाम से भी चलाती हैं। समाज सेवा से जुड़े कई कार्यों को जिस प्रकार वे कर रही हैं वह आज हमारे लिए भी एक प्रेरणा है। ■

संयुक्त परिवार का है अनुपम उदाहरण

मगन परिवार ने संयुक्त परिवार की एक अनूठी मिशाल कायम की है। अनिल मगन कहते हैं कि हम तीनों भाई आज लगभग पांच दशक से संयुक्त रूप से व्यापार कर रहे हैं। घर भले है सभी के अलग हैं लेकिन कारोबार सभी भाई एक साथ करते हैं।

राष्ट्र को दागी नेताओं से मुक्ति कब मिलेगी?

भारतीय राजनीति में आपराधिक छवि वाले या किसी अपराध के आरोपों का सामना कर रहे लोगों को जनप्रतिनिधि बनाए जाने एवं महत्वपूर्ण मंत्रालय की जिम्मेदारी देने के नाम पर गहरा सन्नाटा पसरा है, जो लोकतंत्र की एक बड़ी विडम्बना बनती जा रही है। कैसा विरोधाभास एवं विसंगति है कि एक अपराध छवि वाला नेता कानून मंत्री बन जाता है, एक अनपढ़ या कम पढ़े-लिखे प्रतिनिधि को शिक्षा मंत्री बना दिया जाता है। ऐसे ही अन्य महत्वपूर्ण मंत्रालय के साथ होता है। यह कैसी विवशता है राजनीतिक दलों की? अक्सर राजनीति को अपराध मुक्त करने के दावे की हकीकत तब सामने आ जाती है जब किसी राज्य या केंद्र में गठबंधन सरकार के गठन का मौका आता है। बिहार में नई सरकार में कानून मंत्री बने राष्ट्रीय जनता दल के विधायक कार्तिकेय सिंह हैं। जिन्हें मंगलवार को पटना के दानापुर में अदालत के सामने समर्पण करना था, मगर वे राजभवन में शपथ लेने पहुंच गए।

ललित गर्ग

बिहार में नीतीश कुमार को एक सुशासन के तौर पर जाना जाता है जिन्होंने राज्य में अपराध के खात्मे की घोषणा के बूते ही अपने राजनीतिक कद को ऊंचा किया। लेकिन ताजा उलटफेर में जिन लोगों को मंत्रीमंडल में शामिल किया गया है, उनमें से कई पर लगे आरोपों के बाद एक बार फिर इस सवाल ने जोर पकड़ा है कि जो लोग राजनीति को अपराधीकरण से मुक्त बनाने की बात करते हैं, वे हर बार मौका मिलने पर अपने संकल्प एवं बेदाग राजनीति के दावों से पीछे क्यों हट जाते हैं? गौरतलब है कि 2014 में कार्तिकेय सिंह सहित सत्रह अन्य लोगों पर पटना के बिहटा थाने में अपहरण का मामला दर्ज कराया गया था। कार्तिकेय सिंह पर आरोप है कि उन्होंने एक बिल्डर को मारने के मकसद से अपहरण की साजिश रची थी। यह अजीब स्थिति है कि अक्सर साफ-सुथरी और ईमानदार सरकार देने के दावों के बीच आपराधिक छवि के लोगों को उच्च पद देने का सवाल उभर जाता है। सवाल है कि क्या नीतीश कुमार अपने ही दावों को लेकर वास्तव में गंभीर हैं? ऐसे जिम्मेदार राजनेता अपने दावों से पीछे हटेंगे तो राजनीति को कौन नैतिक संरक्षण देगा? आज भारत की आजादी का अमृत महोत्सव की परिसम्पन्नता पर एक बड़ा प्रश्न है भारत की राजनीति को अपराध मुक्त बनाने का। यह बेवजह नहीं है कि देशभर में अपराधी तत्त्वों के राजनीति में बढ़ते दखल ने एक ऐसी समस्या खड़ी कर दी है कि अपहरण के आरोपी अदालत में पेश होने की जगह मंत्री पद की शपथ लेने पहुंच जाते हैं। हम ऐसे चरित्रहीन एवं अपराधी तत्वों को जिम्मेदारी के पद देकर कैसे सुशासन स्थापित करेंगे? कैसे आम जनता के विश्वास पर खरे उतरेंगे? इस तरह अपराधी तत्वों को महिमामंडित करने के बाद नीतीश कुमार के उन दावों की क्या विश्वसनीयता रह जाती है कि वे बिहार को अपराध और भ्रष्टाचार से मुक्त कराएंगे? बड़ा प्रश्न है कि आखिर राजनीति में तब कौन आदर्श उपस्थित करेगा? क्या हो गया उन लोगों को जिन्होंने सदैव ही हर कुर्बानी करके आदर्श उपस्थित किया। लाखों के लिए अनुकरणीय बने, आदर्श बने। चाहे आजादी की लड़ाई हो, देश की सुरक्षा हो, धर्म की सुरक्षा हो, अपने वचन की रक्षा हो अथवा अपनी संस्कृति और अस्मिता की सुरक्षा का प्रश्न हो, उन्होंने फर्ज और वचन निभाने के लिए अपना सब कुछ होम दिया था। महाराणा प्रताप, भगत सिंह, दुर्गादास, छत्रसाल, शिवाजी जैसे वीरों ने अपनी तथा अपने परिवार की सुख-सुविधा को गौण कर बड़ी कुबार्नी दी थी। गुरु गोविन्दसिंह ने अपने दोनों पुत्रों को दीवार में चिनवा दिया और पन्नाधाय ने अपनी स्वामी भक्ति के लिए अपने पुत्र को कुर्बान कर दिया। ऐसे लोगों का तो मन्दिर बनना चाहिए। इनके मन्दिर नहीं बने, पर लोगों के सिर श्रद्धा से झुकते हैं, इनका नाम आते ही। लेकिन आज जिस तरह से हमारा राष्ट्रीय जीवन और सोच विकृत हुए हैं, हमारी राजनीति स्वार्थी एवं संकीर्ण बनी है, हमारा व्यवहार झूठा हुआ है, चेहरों से ज्यादा नकाबें ओढ़ रखी हैं, उसने हमारे सभी मूल्यों को धराशायी कर दिया। राष्ट्र के करोड़ों निवासी देश के भविष्य को लेकर चिन्ता और ऊहापोह में हैं। वक्त आ गया है जब देश की संस्कृति, गौरवशाली विरासत को सुरक्षित रखने के लिए कुछ शिखर के व्यक्तियों को भागीरथी प्रयास करना होगा। दिशा शून्य हुए नेतृत्व वर्ग के सामने नया मापदण्ड रखना होगा। अगर किसी हत्या, अपहरण या अन्य संगीन अपराधों में कोई व्यक्ति आरोपी है तो उसे राजनीतिक बता कर संरक्षण देने की कोशिश या राजनीतिक लाभ उठाने की कुचेष्ठा पर विराम लगाना ही होगा। सीमाओं पर राष्ट्र की सुरक्षा करने वालों की केवल एक ही मांग सुनने में आती है कि मरने के बाद हमारी लाश हमारे घर पहुंचा दी जाए। ऐसा जब पढ़ते तो हमारा मस्तक उन जवानों को सलाम करता है, लगता है कि देश भक्ति और कुबार्नी का माद्दा अभी तक मरा नहीं है। लेकिन राजनीति में ऐसा आदर्श कब उपस्थित होगा। राजनीति में चरित्र एवं नैतिकता के दीये की रोशनी मन्द पड़ गई है, तेल डालना होगा। दिल्ली सरकार में मंत्रियों के घरों पर सीबीआई के छापे और जेल की सलाखें हो या बिहार मंत्री परिषद के गठन में अपराधी तत्वों की ताजपोशी-ये गंभीर मसले हैं, जिन पर राजनीति में गहन बहस हो, राजनीति के शुद्धिकरण का सार्थक प्रयास हो, यह नया भारत -सशक्त भारत की प्राथमिकताएं होनी ही चाहिए। सभी अपनी-अपनी पहचान एवं स्वार्थपूर्ति के लिए दौड़ रहे हैं, चिल्ला रहे हैं। कोई पैसे से, कोई अपनी सुंदरता से, कोई विद्वता से, कोई व्यवहार से अपनी स्वतंत्र पहचान के लिए प्रयास करते हैं। राजनीति की दशा इससे भी बदतर है कि यहां जनता के दिलों पर राज करने के लिये नेता अपराध, भ्रष्टाचार एवं चरित्रहीनता का सहारा लेते हैं। ■

धर्म की जकड़न में कोर्ट

बच्चों की चाहत हर औरत में प्राकृतिक है। वह गर्भपात तब कराती है जब उसे होने वाला बच्चा बोझ लगने लगे।

मुनेश सिंह

अमेरिका में चर्च का दबाव उसी तरह बढ़ रहा है जैसे भारत में भगवा गैंग का बढ़ रहा है। चर्च का बिजनैस तभी चलता है जब चर्च किसी न किसी मामले को ले कर अपने शिष्यों को लगातार भड़काऊ हालत में रख सकें। औरतों के गर्भपात के हक पर चर्च ने खूब हल्ला मचाया है और अपने शिष्यों को कुछ भी करने की छूट दे कर अपना धंधा बढ़ाया है। नतीजा यह है कि 1973 में अमेरिकी सुप्रीम कोर्ट ने जिस गर्भपात के अधिकार को संवैधानिक माना था, चर्च जाने वाले कट्टरपंथी सुप्रीम कोर्ट के जजों ने जून 2022 में उस फैसले को उलट दिया और गर्भपात का अधिकार अब मौलिक अधिकार नहीं रह गया। राज्यों को अधिकार है कि वे चाहें तो गर्भपात को अवैध कर दें। गर्भपात पर बहस चर्च में शुरू होती है जहां धार्मिक कट्टर हर सप्ताह संडे को जमा होते हैं और बाइबिल के चुने हुए अंशों को ईश्वरवाणी मान कर प्रवचन देते पादरी के आगे नतमस्तक हो कर हां में हां मिलाते हैं। राज्यों के अधिकांश राजनीतिबाज भारत की तरह चर्च में मत्था टेके बिना जीत नहीं सकते क्योंकि धर्म के धंधे की खासीयत यह है कि इस में इकट्ठा होने की एक जगह बनवा दी जाती है और बचपन से ही धर्म का पाठ घोटघोट कर पढ़ा दिया जाता है। चर्च की बातों में आए पोलिटीशियनों की यह हिम्मत नहीं होती कि वे काल्पनिक, अतार्किक व भ्रमित बातों, जो धर्मग्रंथों में लिखी हैं, का विरोध कर सकें। बाइबिल में सैकड़ों कहानियां ऐसी हैं जिन्हें किसी भी युग में सत्य नहीं माना जा सकता था, फिर भी उन्हें सुनने वाले मस्त हो जाते थे और उन का इस्तेमाल घर की औरतों, बच्चों, पड़ोसियों व दोस्तों के साथ-साथ दुश्मनों पर भी करते रहे हैं। इन्हीं लोगों की सेना आज चर्च का एजेंडा चला रही है और अमेरिकी सुप्रीम कोर्ट का नया फैसला इसी का नतीजा है। जज भी बेहद धार्मिक होते हैं क्योंकि धर्म की चाशनी में डूबे राजनीतिबाज उन्हें पहले छोटा जज बनवाते हैं, फिर सुप्रीम कोर्ट तक ले जाते हैं। हमारे यहां भी ऐसे सुप्रीम कोर्ट जज रहे हैं और अभी हैं जो सत्ता में बैठे लोगों को लगभग ईश्वर सा सम्मान देते रहे हैं क्योंकि उन्होंने ही उन्हें यह पद दिलाया। गर्भपात का हक औरत का और सिर्फ औरत का है और यह फैसला कि गर्भपात होना चाहिए या नहीं, डाक्टर और पेशेंट के बीच का है, इस में न चर्च बीच में आता है न कोई धर्म। पर अगर बच्चे नहीं हुए तो दान कौन देगा, कौन धर्म के नाम पर दूसरों की जान लेगा, अपनी जान देगा। बच्चे औरतों को घर की गुलाम बनाने में भी बड़ा योगदान देते हैं। बच्चों की खातिर औरतें पतियों की गुलामी करती हैं, पिटती हैं, रातदिन खटती हैं और बेसमय बूढ़ी हो जाती हैं। उन्हें भी लगने लगता है कि उन को कहीं सुकून मिलेगा तो ईश्वर की दुकान पर जहां धर्म का दुकानदार, जो चिकनी-चुपड़ी बातें कहने का एक्सपर्ट है, उन्हें पति या पिता के अधीन रहने का आदेश देता है और क्षणिक सुख के लिए अपने साथ सुला भी लेता है। अगर बच्चों का जबरन बोझ न हो तो औरतें स्वतंत्र रह कर अपना कैरियर बना सकती हैं, ऊंचाइयों पर जा सकती हैं। बच्चों की चाहत हर औरत में प्राकृतिक है। वह गर्भपात तब कराती है जब उसे होने वाला बच्चा बोझ लगने लगे। जिंदा बच्चे को वह मार नहीं सकती पर जो अभी पैदा ही नहीं हुआ उस पर उस का पूरा हक है और होना चाहिए। अमेरिकी सुप्रीम कोर्ट ने उलटा फैसला दे कर अमेरिका को पश्चिमी एशिया के इराक, ईरान, सऊदी अरब और अफगानिस्तान जैसे मुसलिम कट्टरपंथी देशों की कतार में ला खड़ा कर दिया है। अमेरिकी सुप्रीम कोर्ट अब लोगों को शांति व हक के साथ जीने की छत नहीं दे रहा, वह तो एकएक कर के पिछले 200-300 सालों में मिले मौलिक अधिकारों को छीन कर चर्च या चर्च समर्थक नेताओं के हाथों में दे रहा है। रो बनाम वेड के फैसले को उलटना वैसा ही है जैसे भारत में आपातकाल को सही ठहराने या राममंदिर को बनाने की जगह देने के फैसले थे। ये ऐसे खंजर हैं जो पूरे समाज को गहरा घाव देते हैं, दिखते नहीं, खून नहीं बहता पर शरीर अधमरा हो जाता है। अमेरिका अब लोकतांत्रिक मूल्यों के रक्षक होने का दावा नहीं कर सकता। वह रूस व चीन की तरह कट्टरपंथी देश है जो फिलहाल आर्थिक तौर पर उन्नत है पर उस का पतन निश्चित है। ■

रुश्दी पर हमला

किताब का जवाब किताब से दिया जाये

अगर आप कभी हिमाचल प्रदेश के बेहद खूबसूरत शहर सोलन में घूमने के लिये जायें तो आपको वहां कोई स्थानीय शख्स बता ही देगा कि यहां पर मशहूर लेखक सलमान रुश्दी का भी बंगला है। इसे उनके पिता अनीस अहमद ने बनवाया था। उसे लेने के लिये सेटेनिक वर्सेज तथा मिडनाइट चिल्ड्रन जैसी बहुचर्चित कृतियों के लेखक सलमान रुश्दी ने कानूनी जंग लड़ी थी और अंत में विजयी भी रहे थे। सलमान रुश्दी को हम मोटा-मोटी एक प्रख्यात लेखक के तौर पर ही जानते हैं। वैसे वे भारतीय मूल के लेखक हैं जो इंग्लैंड-अमेरिका में रहते हैं। उनके पिता दिल्ली वाले थे और रुश्दी का जन्म मुंबई में हुआ था। इसलिये उन पर हाल ही में न्यूयार्क में हुये जानलेवा हमले को किसी भी सच्चे भारतीय द्वारा नजरअंदाज करना मुश्किल है।

हरिश्चन्द्र शर्मा

अफसोस तो यह है कि हमारे यहां हमले को लेकर न तो सेक्युलर ब्रिगेड ने कोई तीखी प्रतिक्रिया व्यक्त की और न ही मुस्लिम समाज ने। सलमान रश्दी पर न्यूयॉर्क में चाकू से आक्रमण हुआ है। सलमान रुश्दी एक कार्यक्रम में मंच पर बैठे थे कि एक आतंकी ने उनपर चाकू से हमला कर दिया। गर्दन पर 10 से 15 बार वार किया गया। उन्हें एयरलिफ्ट कर तत्काल अस्पताल पहुंचाया गया है। आक्रमण करने वाले को भी गिरफ्तार किया गया है। विदित हो कि सेटेनिक वर्सेज किताब को लेकर कुछ इस्लामिक कट्टरपंथी लंबे समय से रुश्दी को मारने के फिराक में थे। लंबे समय तक वह ब्रिटेन में अंडरग्राउंड रहे। अब वह साहित्यिक कार्यक्रमों में जाने लगे थे, मगर कट्टरपंथियों को यह नहीं पसंद आया। इसीलिए तो कट्टरपंथियों को इंसानियत का दुश्मन कहा जाता है ।

किसी लेखक से सहमति-असहमति अपनी जगह है, लेकिन, उस पर हमला करना कायरता का सबसे घटिया प्रदर्शन है। कट्टरपंथ हर धर्म का दुश्मन है और ऐसी कायरता का प्रेरक बनता है। सलमान रुश्दी का हमलावर पेशेवर गुंडे से कम नहीं हैं। दुनिया मध्यकाल से आगे बढ़ चुकी है और हर धर्म को अपने भीतर आलोचना सहने की ताकत तो विकसित करनी ही होगी। सलमान रुश्दी पर हमले ने एक बार फिर सेटेनिक वर्सेज के बारे में दुनिया की दिलचस्पी जगा दी है। भारत में यह किताब प्रतिबंधित है, इसलिए अमेजोन जैसी ऑनलाइन शॉपिंग साइटों पर भी यह नहीं मिलती। लेकिन कुछ साइटों पर इसका पीडीएफ संस्करण उपलब्ध है। जिस व्यक्ति ने सलमान रुश्दी पर हमला किया है, वह खुद को बड़ा हीरो और अल्लाह और इस्लाम का बड़ा सेवक समझ रहा होगा। सोच रहा होगा, मरने पर उसे जन्नत मिलेगी। लेकिन हकीकत यह है कि ऐसा करके वह सेटेनिक वर्सेज को और ज्यादा लोकप्रिय बना रहा है और नई पीढ़ी के लोगों तक पहुँचा रहा है और अपने धर्म के बारे में नकारात्मक राय फैला रहा है। ऐसे जाहिलों की बबार्दी में ही सभी धर्मों के नागरिकों और दुनिया का भला है। सलमान रुश्दी आज के दिन ब्रिटिश नागरिक हैं। जब वहां इनके खिलाफ विरोध प्रदर्शन हुए तो ब्रिटिश समाज ने ये कहकर इन लोगों की निंदा की और कहा कि आप यहां हमारी मिलों-कारखानों में काम करने आते है, तो काम कीजिए। आपका कोई मतलब नहीं हमारे कानूनों के बारे में उंगलियां उठाने का, न हमारे खिलाफ विरोध प्रदर्शन करने का। ये देश हमारा है यहां हमारे कानून चलेंगे। पश्चिम आज भी अपनी उसी पॉलिसी पर खड़ा है अभिव्यक्ति के मामले में वो कभी पाबंदी नहीं लगाता। भारत पाकिस्तान या खाड़ी के देश इनसे अलग हैं। खासकर भारत पाकिस्तान के मुसलमान ही सबसे ज्यादा इस्लाम का झंडा उठाते हैं। यहां भी और बाहर के मुल्कों में भी। देखिए मुसलमानो को हर देश के कल्चर को समझना होगा क आप हर जगह अपनी मनमानी नहीं कर सकते। किताब का जवाब किताब ही होना चाहिए, बंदूक की गोली या चाकू की धार नहीं। सलमान रुश्दी ने एक बार सही कहा था कि इस्लाम का हिंसक रूप भी इस्लाम ही है जो पिछले वर्षों के दौरान बहुत ही ताकतवर बनकर उभरा है। रुश्दी अपनी बेबाक राय के लिए हमेशा से ही कट्टरपंथियों के निशाने पर रहे हैं और उनके उपन्यास से नाराज ईरान ने उनके सिर कलम करने का फतवा तक जारी कर दिया था। ईरान के शासक अयतुल्ला खोमैनी ने रुश्दी का सिर काटकर लाने वालों को भारी इनाम देने का ऐलान कर दिया था। अगर रुश्दी की राय से इतर बात हो तो माना जा सकता है कि आतंकवाद और इस्लाम का कोई संबंध हो ही नहीं सकता। जो मुसलमान इस्लाम का नाम लेकर कभी और कहीं भी आतंकवादी घटना में लिप्त होते हैं, दरअसल वे मुसलमान नहीं हैं। उनका इस्लाम से हरगिज कोई संबंध नहीं हो सकता। पर यह भी सच है कि पेशावर में बड़ी संख्या में स्कूली बच्चों का कत्लेआम करने वाले अपने को मुसलमान ही बता रहे थे। मुंबई में साल 2008 में पाकिस्तान से आए आतंकियों की अंधाधुंध गोलियों से देश दहल गया था। कितने ही निर्दोष लोग मार डाले गये थे। उस कत्लेआम को अंजाम भी तो मुसलमानों ने ही दिया था। केन्या के वेस्टगेट मॉल में साल 2014 में बीसियों लोगों को मारने वाले अल-शबाब के आतंकवादी भी मुसलमान ही थे। हालांकि, यह सुनने में बहुत ही अच्छा लगता है कि किसी भी आतंकी वारदात में शामिल होने वाला शख्स सिर्फ इन्सानियत का दुश्मन है। भारत में तो सलमान रुश्दी पर हमले की हर इंसान को निंदा करनी चाहिये। वे भले ही सारी दुनिया में मशहूर हों, पर वे अपने को भारत से जोड़कर ही देखते हैं। सलमान रूश्दी पिछले कई बरसों से अपने परिवार के दिल्ली के घर को लेने की कोशिश कर रहे हैं। उनके पिता का राजधानी के फ्लैग स्टाफ रोड पर बंगला है। सलमान रुश्दी के पिता अनीस अहमद दिल्ली के मशहूर वकील थे। उन्होंने सन 1946 फ्लैग स्टाफ रोड का बंगला खरीदा था। कहते हैं, अनीस अहमद 1960 के दशक में लंदन चले गए। वे देश के बंटवारे के समय भी पाकिस्तान नहीं गए थे। लंदन से कभी-कभार ही दिल्ली आते। वे 1970 में दिल्ली आए। तब उन्होंने अपना बंगला स्वाधीनता सेनानी और कारोबारी भीखूराम जैन को रेंट पर दे दिया। भीखूराम जैन ने 4 फ्लैग स्टाफ रोड के बंगले को तुरंत किराए पर ले लिया। इस डील के चंदेक दिनों के बाद अनीस अहमद फिर से भीखूराम जैन से मिले। उन्होंने जैन से अपने बंगले को खरीदने की पेशकश की। 1980 में चांदनी चौक से लोकसभा के लिए चुने गए भीखूराम जैन अनीस अहमद के बंगले को खरीदने के लिए राजी हो गए। तय हुआ कि वे 3.75 लाख रुपए में बंगला खरीद लेंगें। उन्होंने 50 हजार रुपए बयाना अनीस अहमद को दे दिया। शेष रकम 15 महीने में दी जानी थी। अनीस अहमद बयाना लेकर एक बार जो लंदन गए तो वे फिर कभी नहीं लौटे। वहां पर ही उनकी 1984 में मृत्यु हो गई। भीखूराम जैन बताते थे कि उन्होंने अनीस अहमद को बार-बार भारत बुलाया ताकि डील को अंतिम रूप दिया जा सके। पर वे नहीं आए। ताजा स्थिति यह है कि 4 फ्लैग स्टाफ रोड के बंगले के स्वामित्व को लेकर विवाद जारी है। अब भीखूराम जैन तथा अनीस अहमद गुजरे हुए भी एक जमाना हो गया। बहरहाल, 4 फ्लैग स्टाफ रोड बंगले के मालिकाना हक के लिए आधी सदी से केस चल रहा है। जैन साहब के बाद उनके पुत्र नरेन केस को लड रहे हैं। वे सलमान रुश्दी पर हुए हमले से आहत हैं। बहरहाल, इतना तो तय है कि सलमान रुश्दी भारत को चाहते हैं। इसलिये ही वे यहां की अपनी अचल संपत्तियों को वापस लेने की कोशिशें कर रहे हैं। ■

अरविंद केजरीवाल को दिल्ली की जनता ने मुख्यमंत्री बनाया लेकिन वह तो प्रधानमंत्री बनने का ख्वाब देखते हैं इसलिए दिल्ली की जनता से मिली जिम्मेदारियों को निभाने के प्रति उनका पूरा ध्यान ही नहीं है। केजरीवाल से अगर आपको मिलना है तो दिल्ली की बजाय गुजरात या हिमाचल प्रदेश जाकर मिलना होगा क्योंकि आजकल वह इन्हीं राज्यों में ज्यादा पाये जाते हैं। आपको जानकर हैरानी होगी कि केजरीवाल ऐसे मुख्यमंत्री हैं जिन्होंने अपने पास एक भी विभाग नहीं रखा है। उन्होंने अपने डिप्टी मनीष सिसोदिया को 18 विभागों की जिम्मेदारी सौंपी हुई है।

यदि सचमुच 2024 का चुनाव

मोदी बनाम केजरीवाल हो गया तो क्या होगा?

नरेंद्र मोदी के मुकाबले में कौन होगा यह कांग्रेस तथा अन्य विपक्षी दल अभी तक तय नहीं कर पाये हैं लेकिन आम आदमी पार्टी के दो बड़े नेताओं ने साफ कर दिया है कि 2024 का लोकसभा चुनाव मोदी बनाम केजरीवाल होगा।

नीरज कुमार दुबे

केजरीवाल ने यह सब इसलिए किया है ताकि उनका ध्यान आम आदमी पार्टी को राष्ट्रीय स्तर पर खड़ा करने में लगा रहे और दिल्ली की सफलता का ढिंढोरा पीट-पीट कर वह अपने प्रधानमंत्री पद की दावेदारी को मजबूत कर सकें। आप एक बात पर ध्यान दीजिये। केजरीवाल दिल्ली की शिक्षा और स्वास्थ्य क्षेत्र में सफलता का जो ढिंढोरा पीट रहे हैं यदि उसे सही मान भी लिया जाये तो शिक्षा मंत्री मनीष सिसोदिया हैं और स्वास्थ्य मंत्री हाल तक सत्येंद्र जैन रहे हैं। केजरीवाल ने खुद किस विभाग का कायापलट किया है इसके बारे में भी उन्हें जनता को बताना चाहिए। साथ ही शिक्षा और स्वास्थ्य यदि दिल्ली सरकार की बड़ी उपलब्धियां हैं तो राज्य सरकार को यह भी बताना चाहिए कि उसके कार्यकाल में कितने स्कूल खोले गये और कितने नये अस्पताल बनाये गये। दिल्ली में शराब की दुकानों को बढ़ाने में रुचि दिखाने वाली केजरीवाल सरकार को यह भी बताना चाहिए कि उसने कितने नये शिक्षकों की भर्ती कर शिक्षा व्यवस्था को सुधारा है? बहरहाल, भाजपा की ओर से हाल ही में ऐलान कर दिया गया है कि 2024 में भी उनकी तरफ से प्रधानमंत्री पद के उम्मीदवार नरेंद्र मोदी ही होंगे। नरेंद्र मोदी के मुकाबले में कौन होगा यह कांग्रेस तथा अन्य विपक्षी दल अभी तक तय नहीं कर पाये हैं लेकिन आम आदमी पार्टी के दो बड़े नेताओं ने साफ कर दिया है कि 2024 का लोकसभा चुनाव मोदी बनाम केजरीवाल होगा। पहले आम आदमी पार्टी के राज्यसभा सांसद संजय सिंह ने ऐलान किया कि 2024 का चुनाव भाजपा बनाम आम आदमी पार्टी होगा तो उसके दूसरे दिन दिल्ली के उपमुख्यमंत्री मनीष सिसोदिया ने दावा कर दिया कि 2024 का लोकसभा चुनाव मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल बनाम प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी होगा। उन्होंने आरोप लगाया कि प्रधानमंत्री मोदी आम आदमी पार्टी के राष्ट्रीय संयोजक केजरीवाल को डराने के लिए सभी हथकंडे आजमा रहे हैं इसलिए सीबीआई के छापे पड़वाये जा रहे हैं। जहां तक केजरीवाल और मोदी की भिड़ंत की बात है तो केजरीवाल 2014 में भी प्रधानमंत्री पद का ख्वाब देख रहे थे और इसीलिए उन्होंने दिल्ली के मुख्यमंत्री का पद छोड़कर वाराणसी संसदीय क्षेत्र से भाजपा उम्मीदवार नरेंद्र मोदी के खिलाफ लोकसभा का चुनाव लड़ा था। परिणाम क्या रहा यह सभी जानते हैं। यही नहीं, 2020 के दिल्ली विधानसभा चुनावों के दौरान आम आदमी पार्टी के पक्ष में वोट डालने के लिए दिल्ली के लोगों से अपील करते हुए केजरीवाल ने कहा था कि इस छोटे चुनाव में हमें वोट दे दीजिये बड़े चुनाव में आप मोदी जी को वोट दे देना। वैसे कई बार लगता है कि 2014 और 2019 में राहुल गांधी से मुकाबला कर चुके मोदी भी इस बार चाहते हैं कि 2024 के लोकसभा चुनावों में केजरीवाल से मुकाबला किया जाये। इसलिए वह कांग्रेस के परिवारवाद के साथ ही आम आदमी पार्टी की ओर से बढ़ावा दिये जा रहे रेवड़ी कल्चर के खिलाफ लगातार बोल रहे हैं। दूसरी ओर, जहां केजरीवाल खुद को प्रधानमंत्री की रेस में मान रहे हैं तो दूसरे नेता भी अपने नाम को आगे करवाने में लग गये हैं। बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार के विपक्ष की ओर से प्रधानमंत्री पद के उम्मीदवार के रूप में उभरने की चर्चा के बीच, उनकी पार्टी जनता दल यूनाइटेड ने कहा है कि अगर अन्य दल चाहें तो नीतीश कुमार एक विकल्प हो सकते हैं। जद (यू) अध्यक्ष ललन सिंह ने कहा कि नीतीश कुमार का मुख्य ध्यान 2024 के लोकसभा चुनावों में भाजपा से मुकाबला करने के लिए विपक्षी दलों को एकजुट करने पर है। यानि नीतीश अब पटना की बजाय दिल्ली पर पूरा ध्यान लगाना चाहते हैं। बताया जा रहा है कि अगले सप्ताह बिहार विधानसभा में विश्वास मत हासिल करने के बाद विभिन्न दलों के नेताओं से मिलने के लिए नीतीश कुमार राष्ट्रीय राजधानी का दौरा करेंगे और उसके बाद ऐसे दौरे करते रहेंगे। यानि जिस तरह से प्रधानमंत्री पद की रेस में शामिल ममता बनर्जी लगातार दिल्ली का दौरा कर आगे की संभावनाएं टटोल रहीं हैं उसी तरह अब नीतीश कुमार भी दिल्ली आ आकर अपने लिए संभावनाएं टटोलेंगे। लेकिन इन नेताओं को हम 2019 के लोकसभा चुनावों के दौरान आंध्र प्रदेश के मुख्यमंत्री रहे एन. चंद्रबाबू नायडू का हश्र याद दिलाना चाहेंगे। उस समय चंद्रबाबू नायडू को लग रहा था कि वह देशभर में विपक्ष को जोड़ने का माद्दा रखते हैं इसलिए अपने राज्य के विधानसभा और लोकसभा चुनावों की चिंता नहीं करते हुए वह कभी दिल्ली, कभी मुंबई, कभी कोलकाता, कभी लखनऊ तो कभी अन्य किसी स्थान के चक्कर लगाते रहे और विपक्षी नेताओं के साथ फोटो खिंचवाते रहे। इस व्यस्तता के बीच कब जनता ने चंद्रबाबू की जमीन पूरी तरह खिसका दी इसका पता उन्हें चुनाव परिणाम आने के बाद लगा। बहरहाल, प्रधानमंत्री पद के दावेदारों की बढ़ती संख्या की बात है तो ऐसे बहुत से नेता हैं जो इस रेस में शामिल हैं। कुछ ने अपने नाम सार्वजनिक कर दिये हैं तो कुछ मौके की तलाश में हैं। लेकिन यहां गौर करने वाली बात यह है कि इस रेस में शामिल सभी विपक्षी नेताओं में एकता की कमी है। पीएम पद की रेस में शामिल नेताओं के नाम पर गौर करें तो एक के नाम पर दूसरा राजी नहीं होगा तो दूसरे के नाम पर तीसरा राजी नहीं होगा। साथ ही यह नेता देश के लिए विजन पेश करने की बजाय सिर्फ इस बात के गुणा-भाग में लगे हैं कि किस राज्य में भाजपा की कितनी सीट कम हो सकती है और फिर कैसे किसको मिलाकर अपना नंबर लग सकता है। ऐसे में देश को तय करना होगा कि वापस खिचड़ी सरकारों के दौर में जाना है या फिर 2047 तक भारत को विकसित राष्ट्र बनाने के संकल्प के साथ काम कर रहे लोगों के साथ खड़ा रहना है। ■

ज्ञान और प्रकाश का प्रवाह पुंज हैं शिक्षक

गुरु अथवा शिक्षक हमारे समाज का मार्गदर्शक है, वे ज्ञान और प्रकाश का प्रवाह पुंज है। अपने शिष्य के प्रति गुरुतर दायित्व निभाते हुए एक कुम्हार की भांति उसके जीवन को रचता और संवारता है। गुरु हमें शिक्षा के साथ-साथ संस्कार, संस्कृति, नैतिकता और अनुशासन की शिक्षा देता है। जीवन के बहुयामी विकास में गुरु का योगदान अतुलनीय है। गुरु सिर्फ हमें शिक्षा ही नहीं देता बल्कि हमारे सर्वांगीण विकास का सहभागी होता है। 'गुरु' का अर्थ व्यापक है। सिर्फ दो शब्दों में ही उसकी व्यापकता समाहित नहीं है। धर्म शास्त्रों से लेकर साधु-संत, रागी और बैरागियों ने भी गुरु को सर्वोपरि बताया है। हमारे संस्कार की शुरूआत ही गुरुकुल से होती है। हमारे आराध्य प्रभु श्रीराम और श्रीकृष्ण जी ने भी गुरु आश्रम में जाकर शिक्षा ग्रहण की थी। रामचरितमानस में इसका उल्लेख भी है कि 'गुरु गृह पढ़न गए रघुराई, अल्प काल सब विद्या पाई। भगवान कृष्ण और उनके मित्र सुदामा गुरु संदीपन के यहां शिक्षा ग्रहण करने के लिए गए थे। हमारी गुरुकुल परम्परा बेहद शानदार रहीं है।

बृजेश शर्मा

हिंदू धर्म संस्कृत में गुरु महिमा को विशेष स्थान मिला है। गुरु के लिए हमारे यहां विशेष दिन 'गुरु पूर्णिमा' भी मनाई जाती है। हमारे धर्मशास्त्रों में कहा गया है 'गुरूर्ब्रह्मा गुरूर्विष्णु गुरूर्देवो महेश्वरः। गुरुः साक्षात परं ब्रह्म तस्मै श्री गुरवे नमः अर्थात भारतीय संस्कृति और समाज में गुरुकुल की परंपरा बेहद प्राचीन रही है। गुरु को ब्रह्मा, विष्णु और महेश माना गया है। रामायण और महाभारत काल के पूर्व में भी हमारे यहां गुरुकुल जैसी व्यवस्था कायम थी। हमारे यहां गुरु का स्थान ईश्वर से भी पवित्र और बड़ा है। क्योंकि हमारे आराध्य देव श्रीराम के गुरु भी वशिष्ठ जी रहे। गुरु हमारा मार्गदर्शक और चरित्र निर्माता होता है। हमें गुरु के गुणों को ग्रहण करना चाहिए। ठीक उसी तरह जिस तरह कबीर ने कहा है 'सार-सार को गहि रहै थोथा देहि उड़ाय' गुरु का सम्मान हमारे लिए सर्वोच्च प्राथमिकता होनी चाहिए। गुरु का कभी अपमान नहीं करना चाहिए। शास्त्रों ने गुरु निंदा भी वर्जित है। महाभारत काल में गुरु द्रोणाचार्य ने धनुर्धर एकलव्य का अंगूठा दान में मांग लिया था। एकलव्य ने गुरु की वाणी का सम्मान करते हुए अपना अंगूठा सहर्ष दान कर दिया। क्योंकि उसने सीधे गुरुदेव द्रोणाचार्य के आश्रम में जाकर धनुर्विद्या नहीं सीखी थी। उनकी मूर्ति स्थापित कर उन्हें अपना गुरु मानकर एकलव्य धनुर्विद्या में पारंगत हुआ था। अंगूठा दान के बाद भी वह सर्वश्रेष्ठ धनुर्धर हुआ। गुरु शब्द का निर्माण दो शब्दों से हुआ है। 'गु' का अर्थ 'अंधकार' होता है जबकि 'रु' का अर्थ 'प्रकाश' होता है। गुरु शब्द का अभिप्राय है कि अंधकार से प्रकाश यानी ज्ञान की तरफ ले जाने वाला ही हमारा गुरु है। गुरु चाहे जिस क्षेत्र का हो वह हमारे लिए सम्माननीय है। आप चाहे गुरुकुल, स्कूल, कॉलेज, तकनीकी शिक्षा व कौशल विकास या कंप्यूटर शिक्षा के क्षेत्र में शिक्षा ग्रहण कर रहे हों, बगैर गुरु के आपको मार्गदर्शन नहीं मिलेगा। हर कर्म क्षेत्र में हमें गुरु की आवश्यकता होती है। बगैर गुरु के शिक्षा, कौशल और तकनीकी ज्ञान की प्राप्ति नहीं होती है। जीवन के क्षेत्र में अगर हमें आगे बढ़ना है तो एक योग्य गुरु की आवश्यकता होती है। हमें गुरु के गुणों को ग्रहण करना चाहिए उसकी बुराइयों पर गौर नहीं करना चाहिए। हम प्रगतिवादी और प्रयोगवादी युग में जी रहे हैं। बदलते समय के साथ गुरु और शिष्य के संबंध भी बदल गए हैं। दोनों के बीच लक्ष्मण रेखाएं खत्म हो गई। शिक्षक दिवस के पूर्व झारखंड के दुमका से एक वीडियो वायरल हुआ है। जिसमें स्कूली बच्चों ने शिक्षकों को पेड़ से बांधकर स्कूल में फेल होने की नायाब सजा दी है। छात्रों का आरोप है कि शिक्षकों ने उन्हें प्रैक्टिकल में कम मार्क दिए जिसकी वजह से उन्हें डी ग्रेड मिला। जिसका मतलब फेल होना बताया जाता है। राजस्थान से भी एक घटना सुर्खियों में थी जब कथित तौर पर एक दलित छात्र ने शिक्षक के लिए घड़े में रखे पानी को निकाल कर पी लिया था। शिक्षक पर आरोप है कि दलित होने के कारण छात्र की खूब पिटाई की जिसकी वजह से उसकी मौत हो गई। दोनों घटनाओं के तथ्य पर हम बहुत दावा नहीं कर सकते हैं। यह जांच का विषय है। लेकिन गुरुतर दायित्व और शिष्यों के संबंध को लेकर ऐसी घटनाएं हमारी चिंता बढ़ाती हैं। ऐसी स्थिति से छात्रों और गुरुओं को बचना चाहिए। दोनों को एक दूसरे का सम्मान करना चाहिए। गुरु के लिए शिक्षा ग्रहण करने वाले सभी छात्र एक समान होते हैं। ईर्ष्या, द्वेष और जातीय विद्वेष से बचाना चाहिए। गुरु के अंतःहृदय में ऐसी दूषित भावना नहीं होनी चाहिए जिसका असर गुरु के सम्मान और सामाजिक संस्कार एवं प्रतिष्ठा पर पड़े। आधुनिक परिवेश में गुरु और शिष्य के संबंधों पर भी मीडिया में सुर्खियां बनती है। गुरु और शिष्य के बीच अनैतिक संबंध बनते हैं। इस तरह की स्थितियां हमारे चरित्र और नैतिकता को गिराती हैं। गुरु और शिष्य के पारदर्शी एवं पवित्र संबंध पर ग्रहण लगाती हैं। इस तरह के अनैतिक व्यवहार से हमें बचना चाहिए। गुरु या शिक्षक के अनादर से जहाँ हमारी सामाजिक प्रतिष्ठा गिरती है वही मान्य परंपराओं की परिभाषाएं भी बदलती है। तमाम ऐसी खबरें आती हैं जहां निर्ममता से शिक्षक छात्रों की पिटाई करते हैं। नाराज छात्र भी शिक्षक की गोली मार या दूसरे प्रकार से हत्या कर देते हैं। यह स्थित सिर्फ भारत में ही नहीं पूरी दुनिया में पाई जाती है। इस तरह के हालातों से बचना चाहिए। हमें अपने भीतर ऐसे गुरु, शिक्षक और मार्गदर्शक की छवि विकसित करनी चाहिए जिसकी तस्वीर छात्र के जीवन में हमेशा बनी रहे। वह आने वाली पीढ़ियों को भी अपने गुरु के बारे में बताएं। गुरु ज्ञान का ऐसा भंडार है जो लोहे को भी कंचन बना देता है जैसे 'गुरु पारस को अन्तरो, जानत हैं सब सन्त। वह लोहा कंचन करे, ये करि लये महन्त' हमारे यहां गुरु को भगवान से भी बड़ा माना गया है। कहा गया है गुरु गोविंद दोऊ खड़े काके लांगू पांय,बलिहारी गुरु आपने गोविंद दियो बताए। ईश्वर से भी अधिक श्रद्धा गुरु के प्रति पाई जाती है। रामचरितमानस में गोस्वामी तुलसीदास ने लिखा है 'तुम तें अधिक गुरहिं जिय जानी'। शिक्षक यानी गुरुओं को सम्मान देने के लिए पूरी दुनिया में 'शिक्षक दिवस' मनाया जाता है। लेकिन सबका अपना निर्धारित कैलेंडर है। विश्व के तकरीबन 100 देशों में शिक्षक दिवस मनाया जाता है। भारत में पूर्व राष्ट्रपति सर्वपल्ली डॉ राधाकृष्णन का जन्मदिन 5 सितंबर शिक्षक दिवस के रूप में मनाया जाता है। उन्होंने अपने छात्रों से जन्मदिन को शिक्षक दिवस में मनाने की इच्छा जाहिर की थी। डॉ. राधाकृष्णन का जन्म 5 सितंबर 1988 को तमिलनाडु के तिरूमानी गांव में ब्राह्मण परिवार में हुआ था। फिर आइए शिक्षक दिवस पर हम गुरुओं के सम्मान का संकल्प लें और एक बेहतर देश, समाज निर्माण के निर्माण में आगे कदम बढ़ाएं। ■

ADVANCE GROUP OF GLASS INDUSTRIES

MANUFACTURERS AND EXPORTERS

*Handicraft Glass Art Wares *Lead Glass Tubing *Soda Lime Glass Tubing *Fancy Glass Tumblers & Giftware Items* Glass Lanterns Chimneys *Glass Inner For Vacuum Flasks *Table Wares * Glass Bangles *Liquor Bottles *Perfume Bottles *Biological Equipments *Thermo Ware Items *GLS Lamp Shells

With Best Compliments For

PRADEEP KUMAR GUPTA

CHAIRMAN

ASSOCIATE CONCERNS

* ADVANCE GLASS WORKS
* ORIENTAL GLASS WORKS
* OM GLASS WORKS PRIVATE LIMITED
* MODERN GLASS INDUSTRIES
* ADARSH KANCH UDHYOG PRIVATE LIMITED
* ADVANCE LAMP COMPONENT & TABLE WARES PRIVATE LIMITED
* GREEN ORCHID

HEAD OFFICE
105, Hanuman Ganj, Firozabad- 283203 (Uttar Pradesh) INDIA
TEL: +91 5612 221796, MOB: +91 9837 082 127, 9897 012 063
email: info@advanceglassworks.com
omglassworkspvtltd@gmail.com
website: www.advanceglass.in

संसदीय बोर्ड से क्यों हटाए गए गडकरी...?

केंद्रीय स्तर पर भाजपा का शीर्ष सांगठनिक विस्तार यानी संसदीय बोर्ड और चुनाव समिति का गठन विमर्श का विषय बना है। भाजपा ने केंद्रीय परिवहन मंत्री नितिन गडकरी जैसे साफ-सुथरे छवि वाले राजनेता को संसदीय बोर्ड से अलग कर एक नई बहस छेड़ दी है। पार्टी के सांगठनिक ढांचे में अगर व्यक्तिवाद का विश्लेषण करें तो नितिन गडकरी जैसा राजनेता कोई नहीं दिखता है। गडकरी की नीति समता और समानतावादी है। वे सत्ता और विपक्ष को एक साथ लेकर चलने वाले हैं। उनकी सोच और विचारधारा में कहीं न कहीं अटल बिहारी बाजपेयी की छवि दिखती है।

प्रभुनाथ शुक्ल

सार्वजनिक मंचों पर उन्होंने कई बार ऐसी टिप्पणियां की है जो भाजपा की विचारधारा से मेल नहीं खाती। पार्टी के इस निर्णय से साबित हो गया है कि अंदर कहीं ना कहीं वैचारिक मतभेद हैं। फिलहाल आने वाला वक्त नितिन गडकरी के लिए चुनौतियों भरा दिखता है। केंद्रीय मंत्री नितिन गडकरी भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष भी रह चुके हैं। गडकरी महाराष्ट्र के नागपुर से आते हैं। नागपुर यानी संघ। कहा जाता है कि नितिन गडकरी की संघ में अच्छी खासी पैठ है। फिर संसदीय बोर्ड से बाहर होना सवाल खड़े करता है। जबकि देवेंद्र फडणवीस को प्रमोट किया गया है। हालांकि गडकरी के आगे फडणवीस की वजनदारी नहीं ठहरती है। फडणवीस को आगे लाकर पार्टी नितिन गडकरी को नीचा दिखाना चाहती है या गडकरी को संगठन में उनकी हैसियत बताने का प्रयास किया गया है लेकिन इस निर्णय का असर महाराष्ट्र की राजनीति पर पड़ सकता है। वर्तमान समय में मोदी के बाद भाजपा संसदीय बोर्ड में गडकरी के कैडर का कोई राजनेता नहीं है। अपने मंत्रालय में जितना बेहतरीन काम उन्होंने किया है शायद मोदी मंत्रिमंडल का कोई भी मंत्री इतना अच्छा कार्य किया हो।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और नितिन गडकरी के विचारों में हमेशा द्वंद देखा गया है। कई बार उन्होंने पार्टी लाइन से हट कर अपने विचार रखें हैं। प्रधानमंत्री मोदी कांग्रेस मुक्त भारत की बात करते हैं, लेकिन नितिन गडकरी ने कहा था कि विपक्ष का जिंदा होना जरूरी है। कांग्रेस के जो राजनेता बुरे दिन में पार्टी छोड़ रहे हैं उन्हें ऐसा नहीं करना चाहिए। उन्हें पार्टी का साथ देना चाहिए। स्वतंत्रता दिवस पर भी प्रधानमंत्री ने लालकिले की प्राचीर से परिवारवाद पर हमला बोला। यह हमला सीधा नेहरू-गांधी परिवार था। गडकरी ने हाल के दिनों में एक बयान दिया था जिसमें कहा था कि राजनीति में अब रहने का मन नहीं करता है। संसदीय बोर्ड से किनारे रखने का मतलब उनकी यह बयानबाजी भी हो सकती है। हालांकि देवेंद्र फडणवीस का बॉर्ड में लिया जाना महाराष्ट्र में महाविकास आघाडी सरकार गिराने का इनाम भी माना जा रहा है।

मीडिया विश्लेषण पर गौर करें तो यह बात सामने आती है कि भाजपा में अमित शाह के मुकाबले नितिन गडकरी का कद बड़ा दिखने लगा था। उनके मंत्रालय के कार्य को लेकर देश भर में अलग-अलग चर्चाएं होती हैं। क्योंकि उन्होंने राष्ट्रीय राजमार्गों का संजाल बिछा दिया है। नरेंद्र मोदी के बाद प्रधानमंत्री पद के लिए नितिन गडकरी सबसे योग्य उम्मीदवार हो सकते हैं। लेकिन पार्टी उन्हें संसदीय बोर्ड से निकाल कर बाहर कर दिया। भाजपा में यह लंबी राजनीति का संदेश है। मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान के साथ भी ऐसा कुछ है। मीडिया में शरद

पवार की पार्टी के प्रवक्ता का एक बयान आया है जिसमें कहा गया है कि भाजपा में जिसका कद बड़ा होता है उसे कम कर दिया जाता है। लालकृष्ण आडवाणी और मुरली मनोहर जोशी जैसे राजनेता इसके उदाहरण है। केंद्रीय मंत्रिमंडल में महाराष्ट्र से नेतृत्व करने वाले नितिन गडकरी एक विशेष व्यक्तित्व के राजनेता हैं। महाराष्ट्र में उनकी अपनी एक अलग छवि है। भारत के सीमावर्ती इलाकों लेह और लद्दाख जैसे दुर्गम क्षेत्रों में उनका मंत्रालय बढ़िया कार्य किया है। कैलाश मानसरोवर जाने के लिए नए राजमार्ग का निर्माण किया जा रहा है। इसकी जानकारी उन्होंने खुद लोकसभा में दी। राष्ट्रीय मीडिया के विश्लेषण की बात करें तो उसमें यह बात उभर कर आयी है कि अमितशाह को मोदी के बाद दूसरे नंबर का राजनेता बनाया जा रहा है। पार्टी का संसदीय बोर्ड संगठन की रीढ़ होता है। पार्टी के सारे अहम फैसले बोर्ड की तरफ से लिए जाते हैं। इस फैसले से कहीं न कहीं महाराष्ट्र की राजनीति पर व्यापक असर पड़ेगा। क्योंकि भाजपा जिस तरह महाराष्ट्र में शिवसेना को दो भागों में बांट कर अपनी चाल चली है उसे बहुत अच्छा नहीं कहा जा सकता है। इस घटनाक्रम के बाद महाराष्ट्र की जनता की सहानुभूति देवेंद्र फडणवीस और शिंदे के बजाय उद्धव ठाकरे के साथ है। भाजपा ने जानबूझकर देवेंद्र फडणवीस को मुख्यमंत्री नहीं बनाया। जबकि देवेंद्र फडणवीस मुख्यमंत्री बनने की पूरी तैयारी में थे। उप मुख्यमंत्री की जिम्मेदारी लेने के लिए उन्हें शीर्ष नेतृत्व की तरफ से मनाया गया। शिवसेना का असली वारिस तो बालासाहब ठाकरे का परिवार ही रहेगा। उद्धव ठाकरे भी नितिन गडकरी की तरह एक उदारवादी और सबको साथ लेकर चलने वाले राजनेता है। नितिन गडकरी और शिवराज सिंह चौहान जैसे राजनेता को बाहर रख भाजपा यह संदेश देने की कोशिश की है कि पार्टी में व्यक्ति नहीं विचारधारा का महत्व है। शिवराज सिंह चौहान को इसलिए बाहर किया गया कि राज्य विधानसभा चुनाव में उन्होंने बहुत अच्छा काम नहीं किया था। पार्टी को हार का सामना करना पड़ा था। लिहाजा उनका भी विकल्प तलाशने की कोशिश शुरू कर दी गई है। सबसे अहम सवाल यह उठता है कि देवेंद्र फडणवीस और नितिन गडकरी नागपुर से आते हैं। इसके बावजूद संसदीय बोर्ड से नितिन गडकरी का डिमोशन कर केंद्रीय चुनाव समिति में फडणवीस को लिया जाना सवाल खड़े करता है। हालांकि फडणवीस के लिए यह उद्धव सरकार गिराने और मुख्यमंत्री पद त्यागने का इनाम हो सकता मना है।

भाजपा के संसदीय बोर्ड में जेपी नड्डा अध्यक्ष होंगे। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी, अमितशाह, राजनाथ सिंह को शामिल किया गया है। जबकि पार्टी के पुराने अध्यक्षों को लेने की परंपरा रही है, लेकिन ऐसा नहीं किया गया। बीएस येदुरप्पा को पहली बार शामिल किया गया है। पूर्वी भारत से सर्वानंद सोनेलाल के इतर के लक्ष्मण, पंजाब से लालपुरा जैसे नए चेहरे को शामिल किया गया। बीएल संतोष के साथ हरियाणा की सुधा यादव को भी जगह मिली है। जातीय गणित को फिट करने के लिए सत्यनारायण जटिया को भी लिया गया है। बीएस येदुरप्पा को लाकर दक्षिण भारत से संगठन में महत्वपूर्ण व्यक्ति को रखने की कोशिश की गई। सभी जातियों और समुदाय से लोगों को शामिल कर सर्वसमाज की भागीदारी बनाने की कवायद है। लेकिन गडकरी जैसे राजनेता के साथ नाइंसाफी है। यह निर्णय भाजपा की राजनीति और उसके असली चरित्र को उजागर करता है। ■

गलत और अपराध का साथ तो न दें

कुछ ऐसे व्यक्ति सभी जगह होते हैं जिनसे हम असहमत हो सकते हैं, पर जिन्हें नजरअन्दाज करना मुश्किल होता है। ऐसे ही सिद्धान्त एवं मूल्यहीन व्यक्तियों की विडम्बनाओं से समाज एवं राष्ट्र परेशान है, लेकिन विडम्बना इससे बड़ी यह है कि हम ऐसे व्यक्तियों की गलतियों पर उनका बहिष्कार करने की बजाय उन्हें महानायक बनाने की कुचेष्टा करते हैं। उनके समर्थन में उतरते हैं, उन्हें सम्मानित किया जाता है। ऐसा ही श्रीकांत त्यागी नामक एक कथित राजनीतिक कार्यकर्त्ता के साथ त्यागी समाज ने किया, उनकी गलती पर, एक महिला के साथ बदसलूकी पर उनको चेताने, उनका सामाजिक बहिष्कार करने की बजाय उनको हीरो बनाकर प्रस्तुत किया गया है। यह एक सभ्य, संस्कारी एवं आदर्श समाज की संरचना की एक विसंगति के रूप में सामने आया है।

अजय कुमार

श्रीकांत त्यागी का मामला राजनीतिक संरक्षण में पनप रहे दादा एवं गुंडा किस्म की मानसिकता का उदाहरण है। ऐसे तथाकथित छुटभैया नेता टाइप्ड लोग समाज के लिये एक बड़ी समस्या बनते रहे हैं। ये लोग चलते व्यक्ति के साथ कदम मिलाकर नहीं चलने की अपेक्षा उसे अडंगी लगाते हैं। सांप तो काल आने पर काटता है पर ऐसे दुर्जन तो पग-पग पर काटते हैं। यह निश्चित है कि सार्वजनिक जीवन में सभी एक विचारधारा, एक शैली व एक स्वभाव के व्यक्ति नहीं होते। अतः आवश्यकता है दायित्व के प्रति ईमानदारी के साथ-साथ आपसी तालमेल व एक-दूसरे के प्रति गहरी समझ एवं आदर भाव की। श्रीकांत त्यागी ने जो किया वह निश्चित ही अक्षम्य अपराध है, प्रश्न है कि ऐसे अपराधों के महिमामंडन के लिये समाज क्यों साथ खड़ा होता है। सात से आठ हजार के करीब लोग जुटकर क्यों उसका समर्थन किया? एक बड़े मंच से श्रीकांत त्यागी पर से गुंडा अधिनियम हटाने, उसके हटाए गए अवैध कब्जे को दुरुस्त करने, उसके जब्त सामान वापस करने, कार्रवाई करने वाले पुलिस अधिकारियों को बर्खास्त करने आदि की मांग उठाई गई। क्यों कुछ लोग किसी कोने में आदर्श की स्थापना होते देखकर अपने बनाए समानान्तर आदर्शों की वकालत करते हैं। यानी स्वस्थ परम्परा का मात्र अभिनय। प्रवंचना का ओछा प्रदर्शन। गलत का साथ। श्रीकांत त्यागी का चरित्र किसी से छिपा नहीं है। उत्तर प्रदेश सरकार ने गुंडा तत्वों को समाप्त करने के मिशन के अन्तर्गत श्रीकांत के अवैध कब्जे ढहा दिए और उस पर गुंडा अधिनियम लगा दिया। तब जाकर फरार रहे श्रीकांत ने समर्पण किया। उसके बाद श्रीकांत के कुछ गुंडा किस्म के समर्थक उस सोसाइटी में पहुंच गए, जहां महिला के साथ बदसलूकी की गई थी। अब जब श्रीकांत पुलिस की गिरफ्त में है, पश्चिमी उत्तर प्रदेश के त्यागी समुदाय के लोगों ने रविवार को महापंचायत बुला कर इसे अपनी पूरी जाति का अपमान बताया। प्रश्न है कि यह त्यागी समुदाय का अपमान क्यों और किस तरह माना जाये? श्रीकांत जैसे अनेक

असामाजिक किस्म के छुटभैए नेता राजनीतिक संरक्षण में धौंसपट्टी पर अपनी छवि चमकाते और अवैध करोबार चलाते देखे जाते हैं। राजनीतिक दलों को लंबे समय से नसीहत दी जाती रही है कि वे आपराधिक छवि वाले लोगों को अपने से दूर रखें, पर वे अपना जनाधार बढ़ाने की मंशा से इन्हें आश्रय देते रहते हैं। फिर इसका नतीजा यह होता है कि वही राजनीतिक दलों की समस्या बनने के साथ-साथ समाज एवं राष्ट्र की एक बड़ी चिन्ता, शर्म एवं दर्द का कारण बन जाते हैं। ऐसे आपराधिक छवि वाले व्यक्ति को जाति का गौरव बता कर उसके समर्थन में उतरेंगे तो इससे हमारे समाज का नैतिक उत्थान तो किसी भी रूप में नहीं हो सकेगा। यह तो शुक्रिया स्मार्टफोन का, एक ही घटना के एकाधिक वीडियो बनने और वायरल होने से समाज में नासूर की तरह फैल रहे उन अपराधों का पता दूसरों को लग जाता है। मजबूरन पुलिस प्रशासन को भी कार्रवाई करनी पड़ती है। वरना ऐसी बदतमीजियों पर लगाम लगाना आसान नहीं है। अच्छी बात है कि बुरी घटना देखकर सोशल मीडिया खुलकर आपत्ति कर रहा है और गलतियां बेनकाब होती जा रही हैं। यह अच्छी बात है। सब चाहते हैं कि हम आलोचना करें पर काम नहीं करें। हम गलतियां करें पर कोई हमारी गलतियों पर मुंह न खोले। ऐसा वर्ग आज राजनीति में बहुमत में है। ऐसे ही लोग राजनीति को भी दूषित कर रहे हैं एवं देश को भी। लोग दुर्गा बनना चाहते हैं, पर दुर्गा सामने नहीं देखना चाहते। लोग चाहते हैं भगतसिंह पैदा हों, पर पड़ोस में। कारण भगतसिंह को जवानी में शहीद होना पड़ता है। आदर्श की बात पर डंडे के बल पर, कैसी विरोधाभासी स्थिति है। समस्या जब बहुत चिन्तनीय बन जाती है तो उसे बड़ी गंभीरता से नया मोड़ देना जरूरी है। आज राजनीति में अपराधी तत्वों की बहुलता पर विराम लगाना नये भारत एवं सशक्त भारत की प्राथमिकता होनी ही चाहिए। श्रीकांत जैसे लोग राजनेताओं के साथ मिलीभगत करके आगे बढ़ जाते है एवं बड़ी संपत्ति अर्जित कर लेते हैं, लाखों रुपए की कमाई करने लगते और प्रशासन पर धौंस जमा कर अवैध गतिविधियों में संलिप्त रहते हैं। ऐसे लोग अपने आसपास को तनाव, आतंक एवं भय से परिव्याप्त रखते हैं। श्रीकांत भी सोसाइटी के रहवासियों को भय में रखने का प्रयास करता था और वहां अवैध कब्जा कर रखा था। ऐसे अनेक असामाजिक किस्म के छुटभैए नेता राजनीतिक संरक्षण में धौंसपट्टी पर अपनी छवि चमकाते और अवैध करोबार चलाते देखे जाते हैं। अपराध एवं राजनीति के इस गठजोड़ को तोड़ने के व्यापक प्रयत्न किये जाते हैं, लेकिन रह-रह कर अपराधी तत्वों का राजनीति में वर्चस्व कायम हो जाता है। जब तक समाज में ऐसे लोगों को पनपने से रोकने की राजनीतिक इच्छाशक्ति नहीं दिखाई जाएगी, तब तक न सिर्फ सामाजिक ताने-बाने को दुरुस्त रखा जा सकता है, बल्कि राजनीतिक दलों के लिए भी जब-तब मुश्किलें खड़ी होती रहेंगी। इससे राष्ट्र भी सशक्त होने की बजाय कमजोर ही होता जायेगा। इसी प्रकार जो देश और समाज अपनी सांस्कृतिक, सामाजिक, नैतिक एवं राष्ट्रीय परम्पराओं को भूल जाता है, वह नष्टप्रायः हो जाता है। स्थिति वह भी विस्फोटक होती है पर उसका विस्फोट दिखाई नहीं देता। वर्तमान भौतिकतावादी राजनीतिक व्यवस्था में सत्ता, सम्पदा एवं वर्चस्व के लिए जो छीना-झपटी चल रही है, उसमें संस्कृति पीछे धकेली जा रही है। ■

आनंद भी हुए आजाद

आखिर वरिष्ठ नेताओं के स्वाभिमान को ठेस क्यों पहुँचा रही है कांग्रेस?

विनय शर्मा

कांग्रेस ने उदयपुर चिंतन शिविर के दौरान तय किया था कि पार्टी की एकजुटता बनाई रखी जायेगी और युवाओं को ज्यादा मौके दिये जायेंगे तथा अनुभवी नेताओं की सलाह को तवज्जो देते हुए उनका पूरा सम्मान भी किया जायेगा। लेकिन ना तो पार्टी एकजुट नजर आ रही है। ना युवाओं को ज्यादा मौके दिये जा रहे हैं ना ही अनुभवी नेताओं को सम्मान दिया जा रहा है। पार्टी संगठन की हालत यह है कि 2019 के लोकसभा चुनावों में करारी हार के बाद राहुल गांधी ने अध्यक्ष पद से इस्तीफे के बाद इसे जहां छोड़ा था पार्टी आज भी वहीं खड़ी है। यही नहीं 2019 के लोकसभा चुनावों में करारी हार के बाद कांग्रेस ने पुडुचेरी, मध्य प्रदेश और पंजाब में अपनी सरकार गंवा दी और जिस तरह के हालात फिलहाल नजर आ रहे हैं उससे लग रहा है कि उसके पास जिन दो राज्यों- राजस्थान और छत्तीसगढ़ में सरकार है, वह भी अगले साल होने वाले विधानसभा चुनावों में उसके हाथ से निकल जायेंगे। पार्टी को अपने अनुभवी नेताओं की सलाह पर तवज्जो नहीं देना कितना भारी पड़ा है इसे इस बात से भी समझा जा सकता है कि केरल, गोवा और उत्तराखण्ड में कांग्रेस इसलिए चुनाव नहीं जीत सकी क्योंकि पार्टी एकजुट नहीं थी। इसके अलावा, एक ओर जहां सभी पार्टियां 2024 के लोकसभा चुनावों की तैयारी में लग गयी हैं वहीं कांग्रेस अभी तक अपने पार्टी अध्यक्ष का चुनाव भी नहीं करा पाई है। कांग्रेस को झटके पर झटके इसलिए भी लगते जा रहे हैं क्योंकि वह वरिष्ठ नेताओं के आत्म सम्मान को ठेस पहुँचाने का अभियान चला रही है। अभी पिछले सप्ताह ही वरिष्ठ कांग्रेस नेता गुलाम नबी आजाद ने खुद को जम्मू-कश्मीर कांग्रेस की प्रचार समिति का प्रमुख नियुक्त किये जाने पर नाराजगी जताते हुए इस पद को स्वीकार करने से इंकार कर दिया था। माना गया था कि राष्ट्रीय भूमिका से हटा कर प्रांतीय भूमिका में, वह भी मात्र एक समिति के अध्यक्ष पद पर भेजे जाने से गुलाम नबी आजाद के आत्म सम्मान को ठेस पहुँची थी इसलिए उन्होंने पद लेने से इंकार कर दिया था। अब कांग्रेस को दूसरा झटका भी एक वरिष्ठ नेता ने ही दिया है। हिमाचल प्रदेश में विधानसभा चुनाव से पहले कांग्रेस के वरिष्ठ नेता आनंद शर्मा ने पार्टी की राज्य इकाई की संचालन समिति के अध्यक्ष पद से इस्तीफा दे दिया है। हम आपको बता दें कि आनंद शर्मा को 26 अप्रैल को हिमाचल प्रदेश में पार्टी की संचालन समिति के अध्यक्ष के रूप में नियुक्त किया गया था। लेकिन समिति की बैठकों में उन्हें आमंत्रित ही नहीं किया जाता था। इसलिए आनंद शर्मा ने कांग्रेस अध्यक्ष सोनिया गांधी को भेजे अपने पत्र में कहा है कि उनके स्वाभिमान को ठेस पहुंची है, क्योंकि उनसे पार्टी की किसी भी बैठक के लिए परामर्श नहीं किया गया और न ही उन्हें बैठकों में आमंत्रित किया गया। आनंद शर्मा ने कांग्रेस अध्यक्ष सोनिया गांधी को भेजे अपने पत्र में कहा है कि परामर्श प्रक्रिया में उनकी अनदेखी की गई है। हालांकि, उन्होंने भरोसा दिलाया है कि वह राज्य में पार्टी उम्मीदवारों के लिए प्रचार करना जारी रखेंगे। हम आपको बता दें कि गुलाम नबी आजाद और आनंद शर्मा कांग्रेस के जी 23 समूह के प्रमुख सदस्य हैं। यह समूह पार्टी नेतृत्व का आलोचक रहा है और पार्टी में संगठनात्मक बदलाव की मांग करता आया है। इस समूह में कपिल सिब्बल भी शामिल थे जोकि पिछले दिनों पार्टी से इस्तीफा देकर समाजवादी पार्टी के समर्थन से अब राज्यसभा पहुँच चुके हैं। अभी जब पिछले महीने राज्यसभा चुनाव हुए थे तो कांग्रेस ने सिर्फ गांधी परिवार के वफादारों को उम्मीदवार बनाया था ऐसे में गुलाम नबी आजाद और आनंद शर्मा जैसे नेता फिर से राज्यसभा नहीं पहुँच पाये थे। कुछ समय पहले तक गुलाम नबी आजाद राज्यसभा में कांग्रेस के नेता और आनंद शर्मा उपनेता थे लेकिन अब गांधी परिवार ने इन दोनों ही नेताओं को पूरी तरह किनारे कर दिया है। हम आपको यह भी बता दें कि कुछ समय पहले आनंद शर्मा ने भाजपा अध्यक्ष जेपी नड्डा से मुलाकात भी की थी जिसके बाद अफवाहें चलने पर उन्होंने स्पष्टीकरण दिया था कि नड्डा और वह पारिवारिक मित्र हैं इसलिए इस मुलाकात में कुछ गलत नहीं है। अब हिमाचल प्रदेश में इस साल अक्टूबर-नवंबर में विधानसभा चुनाव होने हैं। हिमाचल प्रदेश के हालिया राजनीतिक परिदृश्य पर गौर करें तो एक बार कांग्रेस और एक बार भाजपा को यहां सरकार बनाने का मौका मिलता रहा है। लेकिन भाजपा इस मिथक को तोड़ने के लिए पूरा दम लगा रही है। वह हिमाचल प्रदेश में दोबारा सरकार बनाकर मिथक को उसी तरह तोड़ना चाहती है जैसे उसने उत्तर प्रदेश और उत्तराखण्ड में तोड़ा था। आम आदमी पार्टी जिस तरह से हिमाचल प्रदेश में अपने कदम बढ़ा रही है और कांग्रेस जिस तरह विभाजित नजर आ रही है उससे चुनावों में भाजपा को लाभ हो सकता है। हालांकि कांग्रेस नेता यहां एकजुट होने की बात तो कह रहे हैं लेकिन अंदर क्या चल रहा है यह बाहर जाहिर हो चुका है। बहरहाल, तमाम मतभेदों के बावजूद आनंद शर्मा मंगलवार से हिमाचल प्रदेश में जनसंपर्क कार्यक्रम शुरू करने जा रहे हैं और वह कसौली और अन्य जगहों पर अपने समर्थकों तथा पार्टी कार्यकर्ताओं से मुलाकात करेंगे। आनंद शर्मा को हिमाचल प्रदेश में कांग्रेस के सबसे बड़े नेताओं में से एक माना जाता है। आनंद शर्मा ने पहली बार 1982 में विधानसभा चुनाव लड़ा था। वर्ष 1984 में तत्कालीन प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी ने उन्हें राज्यसभा भेजा था। वह तभी से राज्यसभा सदस्य थे और कांग्रेस तथा केंद्र सरकार में कई प्रमुख पदों पर अपनी सेवाएं दे चुके हैं। देखना होगा कि आनंद शर्मा की नाराजगी कांग्रेस को भारी पड़ती है या कांग्रेस आनंद शर्मा को पार्टी से बाहर का रास्ता दिखाती है। ■

हम आपको बता दें कि गुलाम नबी आजाद और आनंद शर्मा कांग्रेस के जी 23 समूह के प्रमुख सदस्य हैं। यह समूह पार्टी नेतृत्व का आलोचक रहा है और पार्टी में संगठनात्मक बदलाव की मांग करता आया है। इस समूह में कपिल सिब्बल भी शामिल थे।

डेस्क जॉब करने वाले लोग करें ये 3 योगासन, रहेंगे हेल्दी

नीतू शर्मा

ऑफिस में 8-9 घंटे डेस्क पर बैठकर काम करना किसी के लिए भी आसान नहीं है। यह देखने में आरामदायक लग सकता है, लेकिन वास्तव में काफी परेशानी भरा होता है। डेस्क पर काम करने वाले लोगों को पीठ के निचले हिस्से में दर्द, कमर दर्द, कंधों में दर्द साथ ही कई बार गर्दन से लेकर सिरदर्द की समस्या का सामना करना पड़ता है। यह आपकी लगातार बैठकर काम करने से कमर की रीढ़ की हड्डी और मांसपेशियों में अकड़न की समस्या भी होती है, जिसके कारण लोगों को काफी असहजता होती है। इसके अलावा वजन और शरीर में अतिरिक्त चर्बी बढ़ने की समस्या भी होती है, जो कई गंभीर रोगों का कारण बन सकता है। अब सवाल यह उठता है डेस्क जॉब करने वाले लोगों के पास क्या विकल्प है? वे दर्द और जकड़न से छुटकारा पाने और हेल्दी रहने के लिए क्या कर सकते हैं? क्या आप जानते हैं, डेस्क पर काम करने वाले लोगों के लिए कुछ योगासनों का अभ्यास करना बहुत फायदेमंद साबित हो सकता है। योग करने से शरीर लचीला बनता है और वजन प्रबंधन में भी मदद मिलती है। यह मांसपेशियों और हड्डियों में जकड़न और दर्द से छुटकारा दिलाने में भी मदद करते हैं। इस लेख में हम आपको डेस्क जॉब करने वाले लोगों के लिए 3 योगासन बता रहे हैं।

1. धनुरासन

- योगा मैट बिछाएं और इस पर पेट के बल लेट जाएं।
- अपने हिप्स के नीचे थोड़ा गैप रखें और हाथों को सीधा रखें।
- अपने घुटनों को मोड़ते हुए सांस छोड़ें और अपनी एड़ी को अपने नितंबों के पास लाएं।
- अब धनुषाकार होते हुए पैरों की उंगलियों को हाथों से पकड़ें।
- गहरी सांस लेते हुए अपनी छाती को जमीन से ऊपर उठाएं।
- अब अपने पैरों को स्ट्रेच करते हुए वजन के संतुलन को बनाए रखें, अपने सिर को सीधा रखें।
- अपने शरीर को स्ट्रेच करें और 30 सेकंड तक इस पोजीशन में रहें। उसके बाद सामान्य मुद्रा में वापस आ जाएं।

2. भुजंगासन

- इसका अभ्यास करने के लिए योग मैट पर पेट के बल लेट जाएं।
- अब अपने हाथों को सिर के दोनों तरफ जमीन पर टिका कर रखें।
- अपनी हथेलियों को अपने कंधों के बराबर में रखें।
- इस दौरान गहरी सांस लेते हुए हाथों को जमीन पर दबाएं और शरीर को नाभि तक ऊपर उठाएं।
- सबसे पहले सिर को उठाएं, फिर छाती और आखिर में पेट वाले हिस्से को ऊपर उठाएं।
- सिर को ऊपर की स्ट्रेच करें।
- कुछ सेकेंड्स के लिए इस मुद्रा में रहें उसके बाद सामान्य पोजीशन में वापस आ जाएं।
- इसे 5-6 बार दोहराएं।

3. मार्जरी आसन

- इसके लिए सबसे पहले वज्रासन मुद्रा में बैठ जाएं।
- अब दोनों हाथों को जांघों पर रखें।
- फिर लंबी गहरी सांस लेते हुए व छोड़ते हुए अपने शरीर को आसन के लिए तैयार करें।
- दोनों पैरों में कंधे के बराबर दूरी कर बना लें। फिर घुटनों के बल खड़े हो जाएं।
- अब दोनों हाथों को आगे रखते हुए कंधे के समान गैप रखें।
- आपकी मुद्रा एक टेबल की तरह बन जाएगी। उसके बाद अपनी उंगलियों को अपनी मैट पर खोलें।
- इस दौरान पैरों के पंजों को जमीन पर फ्लैट ही रखें।
- सांस भरते हुए कमर को नीचे की ओर दबाव डालें। अब सांस छोड़ते हुए शरीर को स्ट्रेच करें।
- ऐसा 30-35 बार करें। ■

हाई ब्लड प्रेशर को तुरंत कंट्रोल करेंगे यह नुस्खे

ब्रीदिंग एक्सरसाइज के जरिए भी ब्लड प्रेशर को सामान्य किया जा सकता है। अगर आप अभी उच्च रक्तचाप का अनुभव कर रहे हैं तो ऐसे में डीप ब्रीदिंग करें। इसके लिए पहले गहरी सांस लें, लगभग दो सेकंड के लिए अपनी सांस को रोककर रखें, फिर धीरे-धीरे सांस छोड़ें।

मिताली जैन

उच्च रक्तचाप एक खतरनाक स्थिति है जो व्यक्ति के दिल को नुकसान पहुंचा सकती है। आज के समय में अधिकतर लोगों को हाई ब्लड प्रेशर की समस्या का सामना करना पड़ता है। ब्लड प्रेशर को मैनेज करने के लिए कुछ उपायों को अपनाने की आवश्यकता होती है। यदि इसे अनियंत्रित छोड़ दिया जाए, तो उच्च रक्तचाप आपके हृदय रोग और स्ट्रोक के जोखिम को बढ़ा देता है। हालांकि, यह जरूरी नहीं है कि इसके लिए दवाओं का सेवन ही किया जाए। कई ऐसे तरीके हैं जो आपके हाई ब्लड प्रेशर को कम करने में मदद कर सकते हैं। तो चलिए जानते हैं इन उपायों के बारे में-

हॉट शॉवर लें

यह एक ऐसा तरीका है जो उच्च रक्तचाप की समस्या होने पर आपको तुरंत राहत दिला सकता है। बस आप अपने शॉवर में कम से कम 15 मिनट तक रहें और गर्म पानी का आनंद लें। यह मसल्स टेंशन को भी कम करने में भी मदद कर सकता है।

करें ब्रीदिंग एक्सरसाइज

ब्रीदिंग एक्सरसाइज के जरिए भी ब्लड प्रेशर को सामान्य किया जा सकता है। अगर आप अभी उच्च रक्तचाप का अनुभव कर रहे हैं तो ऐसे में डीप ब्रीदिंग करें। इसके लिए पहले गहरी सांस लें, लगभग दो सेकंड के लिए अपनी सांस को रोककर रखें, फिर धीरे-धीरे सांस छोड़ें। कुछ क्षण रुकें और दोहराएं। आप इस अभ्यास को कई बार दोहराएं। आपको तुरंत अपनी स्थिति में अंतर नजर आएगा।

करें रिलैक्स

उच्च रक्तचाप में तनाव का महत्वपूर्ण योगदान होता है, इसलिए रक्तचाप को मैनेज करने के लिए आप खुद को रिलैक्स करने की कोशिश करें। ऐसी कुछ एक्टिविटीज में शामिल हों, जो आपको तनावमुक्त करने में योगदान दें। मसलन, कुछ पल के लिए एक शांत कमरे में बैठें, कुछ स्ट्रेचिंग व्यायाम करें या फिर एक अच्छी किताब पढ़ें, संगीत सुनें या फिर मेडिटेड करें।

करें एक्सरसाइज

उच्च रक्तचाप को कम करने का एक अच्छा तरीका है नियमित रूप से एक्सरसाइज करना। जब आप नियमित रूप से व्यायाम करते हैं तो यह आपके हृदय को रक्त पंप करने में मजबूत और अधिक कुशल बनाने में मदद करता है, जिससे आपकी धमनियों में दबाव कम होता है। वास्तव में, 150 मिनट की मोडरेड एक्सरसाइज, जैसे चलना, आपके हृदय स्वास्थ्य में सुधार करने में मदद कर सकता है। ■

बंद कमरों में बढ़ रहे हैं मानसिक रोग

कभी ऊंचाई तो कभी भीड़ के डर के पीछे समाज में कटीकटी जिंदगी और अकेलेपन की मांद किस तरह मानसिक रोगों को बढ़ावा दे रही है, समझें आप भी।

डर की भावना जब शक की सीमाएं लांघने लगती है तो वह फोबिया बन कर मानसिक रोगों को पैदा करने लगती है। कोरोना व लॉकडाउन के दौरान बंद कमरे में रहने का सब से बड़ा दुष्परिणाम आइसोलेशन से पैदा हुई मानसिक बीमारियां रही हैं। मानसिक बीमारी की चपेट में कमोबेश कभी न कभी हर कोई आ जाता था। अवसाद, अनिद्रा, तनाव, चिंता, भय ये कुछ ऐसी मानसिक स्थितियां हैं जिन्हें बीमारी कहना किसी को नागवार भी गुजर सकता है। हालांकि मनोचिकित्सकों का मानना है कि एक हद तक तो ये स्थितियां ठीक हैं लेकिन जब ये एक सीमा से बाहर चली जाएं तो किसी को मानसिक तौर पर बीमार घोषित करने के लिए पर्याप्त होती हैं।

साधना शाह

रोजमर्रा के जीवन में हम सब तनाव भय, नाराजगी, नफरत जैसी मानसिक स्थितियों से अच्छी तरह परिचित हैं। किसी परिजन की मौत के दुख से भी हम सब कभी न कभी गुजरते ही हैं, लेकिन ये मानसिक स्थितियां बहुत ज्यादा देर तक या दिनों तक नहीं टिकतीं। एक समय के बाद हम स्वाभाविक जीवन में लौट आते हैं। लेकिन अगर कोई ऐसी मानसिक स्थिति से लंबे समय से गुजर रहा हो तो यह खतरे की घंटी है। कुछ समय पहले तक समाज में किसी भी तरह की मानसिक समस्या का हल ओझा, बाबा, तांत्रिक और झाड़फूंक में ढूंढ़ा जाता था। अंधविश्वास और कुसंस्कार के चलते किसी भी राह की मानसिक समस्या के लिए किसी दूषित हवा या बयार, भूतप्रेत का साया को जिम्मेदार मान कर लोग बाबाओं व तांत्रिकों की शरण में चले जाया करते थे। गनीमत है कि इस कोविड के आइसोलेशन से परेशान लोगों ने अंधविश्वासों की शरण कम ली, पर अब फिर इन अंधविश्वासों को बेचने वालों ने व्यापार शुरू कर दिया है। डा. पारोमिता मित्र भौमिका का कहना है कि विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार हमारी आबादी में मोटेतौर पर महज एक प्रतिशत लोग जटिल और गंभीर मानसिक बीमारी के शिकार होते हैं और इस का इलाज करने में वक्त लग सकता है। बाकी 10 प्रतिशत कुछ सामान्य मानसिक बीमारी से ग्रस्त होते हैं, जो गंभीर नहीं होते हैं और काउंसलिंग से ठीक हो सकते हैं। वहीं 30 प्रतिशत लोग ऐसे हैं जो कभी भी ऐसी किसी बीमारी की चपेट में आ सकते हैं अगर समय रहते सचेत नहीं हो जाते। इस के अलावा जो लोग किसी शारीरिक तकलीफ को लेकर चिकित्सा के लिए अस्पताल या डाक्टर के क्लीनिक में जाते हैं उन में से 50 प्रतिशत लोग छिटपुट मानसिक समस्या के शिकार होते हैं। ऐसे मामलों में होता यह है कि ये लोग वाकई मानसिक तौर पर बीमार होते हैं या मानसिक बीमारी के कारण इन में तरहतरह के शारीरिक लक्षण उभर आते हैं। यह बात कोई ठीक-ठाक समझ भी नहीं पाता है और समझने की कोशिश भी नहीं करता है। इन में भी लगभग 4-5 प्रतिशत लोग झाड़फूंक और तंत्रमंत्र जैसे अवैज्ञानिक तरीके अपनाते हैं। शरीर के आंखकान, हाथपैर, किडनी, दिल, लिवर और पाचन संस्थान में अगर कोई बीमारी हो तो इस के लक्षण सामने आते हैं। उसी प्रकार एहसास, आवेग, चिंता, दुख, क्रोध आदि मन के भाव हैं और अगर मन में कोई बीमारी घर कर रही हो तो इस के भी कुछ निदृष्ट लक्षण सामने आएंगे। चूंकि शरीर और मन दोनों एकदूसरे से हैं, इसीलिए शारीरिक बीमारी का असर मन पर पड़ता है और मानसिक लक्षण सामने आते हैं। वहां मानसिक बीमारी के शारीरिक लक्षण भी दिखाई देते हैं। मानसिक बीमारी के 2 हिस्से हैं, न्यूरोसिस और साइकोसिस। न्यूरोसिस संबंधित मानसिक बीमारी में मन की भावना व आवेग एक स्वाभाविक सीमा से परे चले जाते हैं। जब किसी व्यक्ति के आवेग के कारण उस का अपना जीवन दुरूह बन जाता है बल्कि परिवार, शिक्षा, पेशेवर जीवन और यहां तक कि समाज को भी जब प्रभावित करने लगता है तब यह मानसिक बीमारी का रूप ले लेता है। इस के उलट, कभी-कभी मानसिक तनाव के लक्षण शारीरिक तौर पर नजर आते हैं। ऐसे मामलों में लक्षण शारीरिक होने के बावजूद, इसके पीछे वजह मानसिक है, इस का प्रमाण शारीरिक जांच में नहीं मिल पाता है। न्यूरोसिस बीमारी के मामले में पीड़ित आमतौर पर वास्तविकता से अपना संबंध विच्छेद नहीं करता। यहां तक कि पीड़ित के व्यक्तित्व में ऊपरी तौर पर भी कोई बदलाव नजर नहीं आता है। न्यूरोसिस संबंधित मानसिक बीमारी में डिप्रैसिव डिसऑर्डर, एंग्जाइटी डिसऑर्डर, फोबिक डिसऑर्डर, ऑब्सेसिव कंप्लसिव डिसऑर्डर आते हैं। अगर केवल एंग्जाइटी डिसऑर्डर की बात करें तो यह 3 तरह का होता है। जनरलाइज्ड एंग्जाइटीः इस से पीड़ित हमेशा किसी न किसी बात को ले कर बेचैन व चिंतित रहता है। फोबिक एंग्जाइटीः इस एंग्जाइटी से पीड़ित व्यक्ति किसी स्थान या माहौल में जाने पर आशंकित हो जाता है या असुरक्षा महसूस करता है। ऐसा व्यक्ति नए माहौल और व्यक्तियों का सामना करने से कतराता है। ऐसी स्थिति एक्रोफोबिया कहलाती है। कुछ को अनजान लोगों के बीच बलात्कार का भय होता है। पैनिक डिसऔर्डरः किसी विशेष व्यक्ति, माहौल या परिस्थिति के सामने न पड़ने के बावजूद कल्पना के वशीभूत हो कर पीड़ित उत्कंठा बेचैन या व्याकुल हो उठता है। मसलन, आज रात दिल का दौरा पड़ सकता है, इस डर से रात आंखों ही आंखों में कट जाती है। साइकोसिस से पीड़ित व्यक्ति हरेक को अपना दुश्मन मान लेता है। उस के दिमाग में यह बात घर कर जाती है कि हर कोई उसे नुकसान पहुंचाने वाला है। हर तरफ उसे अपने खिलाफ षड्यंत्र की आशंका सताती रहती है। कुल मिला कर वह वहम के वशीभूत हो जाता है। पीड़ित अजीब-अजीब सी आवाजें सुनाई पड़ने या भूतप्रेत दिखाई देने का दावा करता है। लोगों में आने वाले ऐसे बदलावों से मानसिक डिसऑर्डर का पता चल जाता है। सिजोफ्रेनिया, मेनिया बाईपोलर डिसऑर्डर आदि साइकोसिस मानसिक बीमारी की मिसालें हैं। कई बार देखने में आता है कि पीड़ित अपनेआप से बारबार बातें करता है। हावभाव में अजीब सी बेचैनी होती है। कुल मिला कर व्यक्तित्व व हावभाव में कोई तारताम्य नजर नहीं आता।

कुछ केस हिस्ट्री

हम यहां ऐसे ही कुछ मामलों का हवाला दे रहे हैं। एमबीए करने के बाद पल्लवी को एक बड़ी कंस्ट्रक्शन कंपनी में अच्छे पद पर काम करने का मौका मिला। 10वीं मंजिल पर एक छोटी सी क्यूबिकल पैनोरैमिक ग्लास लिफ्ट से चढ़ने-उतरने में उसे डर लगता है। यह डर एक तरह से आतंक का रूप लेने लगा। जाहिर है, काम पर जाना उस के लिए मुश्किल हो गया। दफ्तर न जाने के बहाने ढूंढ़ने में काफी समय लगाने लगी। खोई-खोई सी रहती। मन ही मन बड़बड़ाती रहती। हर वक्त सिरदर्द, उबकाई की शिकायत रहती। इन सब से उस के काम और कैरियर पर असर पड़ने लगा। सिरदर्द और उबकाई की शिकायत ले कर वह डाक्टर के पास गई। डाक्टर ने कुछ दवा प्रिस्क्राइब तो की और मन में किसी तरह के डर की बात कह कर काउंसलिंग के लिए कहा। डाक्टर के यहां से निकल कर पल्लवी सोचने लगी कि वह किसी भी तरह से डरपोक लड़की तो नहीं है। फिर डाक्टर ने डर की बात क्यों कही। लेकिन इस बात को उस ने ज्यादा तूल नहीं दिया और प्रिस्क्राइब की गई दवा लेने लगी।

कुछ दिन बाद सिरदर्द और उबकाई की शिकायत में कमी आई। लेकिन फिर जस का तस। इस बीच दफ्तर में सबकुछ गड़बड़ नजर आने लगा। अकसर बौस की झिड़कियां, सहयोगियों की बेरुखी का सामना होने लगा। तब पल्लवी ने काउंसलिंग का जरिया आजमाने का फैसला किया। काउंसलिंग के दौरान जो तथ्य निकल कर आया वह इस प्रकार का था- पल्लवी बचपन में बहुत ही चंचल स्वभाव की थी। अकसर एडवैंचरस किस्म की बदमाशियां किया करती थी। तब मां उसे भूत का डर दिखा कर शांत किया करती थी। यह भूत का डर बचपन से उस के भीतर घर कर गया था और यह डर क्यूबिकल ग्लास व पैनोरेमिक एलिवैटर से उतरने-चढ़ने में तबदील हो गया। एलिवेटर से चढ़ने-उतरने के दौरान अगर कभी भूल से पल्लवी की नजर नीचे की ओर जाती तो उसे यही एहसास होता कि वह अब गिरी कि तब गिरी, या फिर लिफ्ट अब टूट कर गिरी। काउंसलिंग के दौरान साफ हुआ कि पल्लवी एक्रोफोबिया की शिकार है। दरअसल यह एक्रोफोबिया ऊंचाई का भय है। इस का इलाज कुछ मैडिसिन के साथ काउंसलिंग है। एक अन्य मामले को लें। विवाहित और 3 बच्चों की मां लावणी की उम्र 35 साल है। पति का अपना कारोबार है। घर पर किसी चीज की कोई कमी नहीं है। न तो पति के परिवार से कोई करीबी है और न ही उस के मां के परिवार से। दोनों अपने-अपने परिवार में इकलौते हैं। किसी तरह का कोई पारिवारिक मामला भी नहीं है। बावजूद इस के कुछ दिनों से रात को वह सो नहीं पाती है। अगर आंख लगी भी तो महज घंटे या दो घंटे के लिए। इस के बाद नींद एकदम से जाने कहां हवा हो जाती है और फिर सारी रात बिस्तर पर कर-वट बदलती रहती है। ■

इवेंट मैनेजमेंट में कैसे बनाएं कॅरियर और क्या है स्कोप

इवेंट मैनेजमेंट सबसे अधिक लाभदायक कॅरियर के रूप में सामने आया है। आयोजक और आयोजन करने वाली कंपनियों की संख्या तेजी से बढ़ रही है। इवेंट मैनेजमेंट में कॅरियर बनाने की इच्छा रखने वाले उम्मीदवार इस क्षेत्र में नौकरी के अवसर तलाश कर सकते हैं। इवेंट मैनेजमेंट का अर्थ विशेष रूप से कार्यक्रमों, त्योहारों, संगोष्ठियों आदि जैसे कार्यक्रमों के डिजाइन और संचालन के लिए परियोजना प्रबंधन कौशल को लागू करना है। आज आईपीएल, साहित्य उत्सव, ओलंपिक या राष्ट्रमंडल खेलों सहित सभी प्रमुख आयोजनों का प्रबंधन इवेंट मैनेजमेंट कंपनियों द्वारा ही किया जाता है। मार्केट रिपोर्ट्स के मुताबिक इवेंट मैनेजमेंट इंडस्ट्री बहुत तेजी से बढ़ रही है। इवेंट मैनेजमेंट में एमबीए उन युवाओं के लिए कई अवसर खोलेगा जो एक्शन, विविधता, चुनौती और बाहरी काम के शौकीन हैं।

जे. पी. शुक्ला

इवेंट मैनेजमेंट सबसे अधिक लाभदायक कॅरियर के रूप में सामने आया है। आयोजन और आयोजन करने वाली कंपनियों की संख्या तेजी से बढ़ रही है। इवेंट मैनेजमेंट में कॅरियर बनाने की इच्छा रखने वाले उम्मीदवार इस क्षेत्र में नौकरी के अवसर तलाश कर सकते हैं। इवेंट मैनेजमेंट को कई विश्वविद्यालयों में पेश किए जाने वाले जनसंचार का एक हिस्सा माना जाता है। इसलिए उम्मीदवार यूजी और पीजी स्तर पर इवेंट मैनेजमेंट कोर्स कर सकते हैं। इवेंट मैनेजमेंट खुदरा और विपणन क्षेत्र में बढ़ते रुझान के कारण तेजी से एक हॉट कैरियर विकल्प के रूप में पकड़ रहा है, जिसमें शामिल है:

- लक्षित दर्शकों के लिए एक कार्यक्रम आयोजित करना
- विजुअलाइजिंग कॉन्सेप्ट्स
- योजना
- बजट
- निष्पादन की घटनाएं
- फैशन शो, संगीत कार्यक्रम, सेमिनार, प्रदर्शनियों, शादियों, थीम वाली पार्टियों, उत्पाद लॉन्च आदि पर काम करना।

इवेंट मैनेजमेंट में कॅरियर कैसे शुरू करें?

- इवेंट मैनेजमेंट में अपना कॅरियर शुरू करने के लिए उम्मीदवारों को इस क्षेत्र में एक विशेष डिग्री हासिल करनी चाहिए। प्रत्येक विश्वविद्यालय के लिए प्रवेश प्रक्रिया अलग-अलग होती है। उम्मीदवारों को उस पाठ्यक्रम की तलाश करनी चाहिए जिसका वे अध्ययन करना चाहते हैं और प्रवेश के लिए आवेदन करने के लिए पात्रता की जांच करें।
- इवेंट मैनेजमेंट में अधिकांश एंट्री-लेवल जॉब्स इवेंट मैनेजमेंट में स्नातक की डिग्री या डिप्लोमा करके किया जा सकता है। हालांकि मेगा इवेंट आयोजित करने वाली बड़ी कंपनियों में प्रबंधकीय पदों या नेतृत्व की भूमिका निभाने के लिए उम्मीदवारों को प्रतिष्ठित संस्थानों से एमबीए या पीजी डिप्लोमा पाठ्यक्रमों की आवश्यकता होगी।

इवेंट मैनेजमेंट के लिए पात्रता मानदंड

- उत्कृष्ट जनसंपर्क और नेटवर्किंग कौशल वाले स्नातक इस क्षेत्र का विकल्प चुन सकते हैं। हालांकि एक प्रतिष्ठित फर्म या कंपनी में इवेंट मैनेजर बनने के लिए अच्छे जनसंपर्क कौशल के साथ एमबीए की डिग्री होनी चाहिए।

मार्केटिंग में अपने मास्टर के साथ जनसंपर्क में डिग्री होने से इस पेशे में एक अतिरिक्त लाभ होगा।

इवेंट मैनेजमेंट के लिए स्किल्स और एट्रीब्यूट्स

- एक इवेंट मैनेजर के पास अच्छा संचार कौशल होना चाहिए, चुनौतियों को स्वीकार करने के लिए आश्वस्त होना चाहिए और किसी स्थिति को समझने और ठीक से प्रतिक्रिया करने की क्षमता होनी चाहिए। उसके पास रचनात्मकता और संगठनात्मक कौशल होना चाहिए। टीम भावना और नेतृत्व कौशल अन्य पूर्वापेक्षाएँ हैं। उन्हें घटना के हर मिनट के विवरण को भी देखना होगा।

वेतन की पेशकश

इवेंट मैनेजमेंट के क्षेत्र में पारिश्रमिक उम्मीदवार की नौकरी की भूमिका और जिम्मेदारी पर निर्भर करता है। इसके अलावा, संगठन का आकार, ग्राहकों की प्रोफाइल, पेशेवर का अनुभव और फर्म का स्थान जैसे कारक भी उम्मीदवार का वेतन तय करते हैं। हालांकि इवेंट मैनेजमेंट में एक फ्रेशर 10,000 रुपये से 15,000 रुपये प्रति माह के बीच मासिक वेतन की उम्मीद कर सकता है। अनुभव और विशेषज्ञता के क्षेत्र के साथ सैलरी बढ़ती है। एक कुशल फ्रीलांसर या एक इवेंट मैनेजमेंट कंपनी के मालिक के रूप में काम करके काफी पैसा कमाया जा सकता है। एक बार जब कोई इवेंट मैनेजर इस क्षेत्र में अनुभव प्राप्त कर लेता है तो वह अपने क्लाइंट के आधार पर 50,000 रुपये से 1 लाख रुपये या उससे अधिक की फीस की उम्मीद कर सकता है।

इवेंट मैनेजमेंट में करियरः जॉब प्रोफाइल

इवेंट मैनेजमेंट प्रबंधन के नवीनतम क्षेत्रों में से एक है और लोकप्रियता प्राप्त कर रहा है। हालांकि इस क्षेत्र को अक्सर जनसंपर्क उद्योग की एक शाखा माना जाता है, यह बाजार का विस्तार कर रहा है और बहुत सारे रोजगार पैदा कर रहा है। विज्ञापन, पीआर और कॉरपोरेट कम्युनिकेशन कोर्स करने के बाद उम्मीदवार इवेंट मैनेजमेंट में भी अपना करियर बना सकते हैं। इवेंट मैनेजमेंट इंडस्ट्री में ढेरों नौकरियां उपलब्ध हैं। मौजूदा वैश्विक आर्थिक मंदी के बावजूद, इवेंट मैनेजमेंट उद्योग लगातार तेजी से फल-फूल रहा है। बहुत सारे आयोजन होते हैंः शादियों, जन्मदिन पार्टियों और रियलिटी शो, फैशन और सांस्कृतिक शो पूरे देश में हो रहे हैं, जिससे कार्यक्रम योजनाकारों की मांग पैदा हो रही है। इवेंट मैनेजमेंट इंडस्ट्री में उपलब्ध जॉब प्रोफाइल इस प्रकार हैः

1. वेडिंग प्लानरः ऐसे जॉब प्रोफाइल में शादी के आयोजन से संबंधित हर मिनट के विवरण पर ध्यान देने की आवश्यकता होती है। एक वेडिंग प्लानर अपने ग्राहकों को विभिन्न विवाह समारोहों की योजना बनाने में मदद करता है।

2. स्टेज डेकोरेटरः स्टेज डेकोरेटर इवेंट के लिए स्टेज लेआउट डिजाइन करने के लिए जिम्मेदार होता है। स्टेज डेकोरेटर की जिम्मेदारी में मंच पर प्रॉप्स को व्यवस्थित करना और रखना और मंच को आयोजन स्थल के अन्य सजावटी तत्वों के बीच खड़ा करना शामिल है।

3. रसद प्रबंधकः रसद प्रबंधक घटना के लिए आवश्यक उपकरण, मेहमानों और अन्य चीजों के परिवहन के प्रबंधन के लिए जिम्मेदार होता है।

4. प्रदर्शनी आयोजकः एक प्रदर्शनी आयोजक की नौकरी की रूपरेखा एक कार्यक्रम योजनाकार की तरह होती है। प्राथमिक अंतर यह है कि एक प्रदर्शनी आयोजक योजना बनाता है और साथ ही मेलों और प्रदर्शनियों को निष्पादित करता है।

5. इवेंट प्लानरः इवेंट प्लानर किसी इवेंट के सभी विवरणों की योजना बनाने के लिए जिम्मेदार होते हैं। घटना एक सम्मेलन, कॉर्पोरेट घटना या शादी हो सकती है। एक इवेंट प्लानर थीम, लॉजिस्टिक्स से लेकर बजट तक इवेंट के लिए एक योजना बनाता है।

6. इवेंट मैनेजरः इस जॉब प्रोफाइल में प्रत्येक इवेंट के पहलू के प्रबंधन के लिए जिम्मेदार होता है। एक इवेंट मैनेजर का काम किसी घटना को बिना किसी परेशानी के अवधारणा बनाना, योजना बनाना, व्यवस्थित करना और निष्पादित करना है। ■

गोवा जैसे ही बनें सभी पर्यटन स्थल

बीती 15 अगस्त को जब देश के अधिकतर राज्यों के स्कूल बंद थे, उस दिन गोवा की सड़कों पर स्कूली बच्चे सुबह 11 बजे के बाद अपने स्कूल में आयोजित हुये स्वाधीनता दिवस समारोह में भाग लेकर निकल रहे थे। उनके हाथों में तिरंगे और मिठाई के पैकेट थे। यह देखकर बहुत सुखद लग रहा था। बहुत से राज्यों के स्कूलों में 14 अगस्त को ही देश का स्वाधीनता दिवस समारोह मना लिया जाता है। यह सही नहीं है। कायदे से सारे देश के स्कूलों को 15 अगस्त को खुलना चाहिये। उस दिन वहां स्वाधीनता दिवस समारोह आयोजित किये जाने चाहिये।

अविनाश वर्मा

गोवा क्षेत्रफल के लिहाज से छोटा राज्य होने पर भी कई मामलों में बड़े-बड़े राज्यों से बहुत आगे है। गोवा क्षेत्रफल की दृष्टि से भारत का सबसे छोटा और जनसंख्या के हिसाब से चौथा सबसे छोटा राज्य है। गोवा का क्षेत्रफल 3702 वर्ग किलोमीटर है। गोवा की प्राकृतिक सुंदरता के अलावा यहाँ के प्रसिद्ध समुद्र तट और सूर्य की धूप पर्यटकों को गोवा की ओर खींचती है। यहां के स्थानीय लोगों का पर्यटकों के प्रति व्यवहार वास्तव में बहुत ही दोस्ताना रहता है। इस कारण भी पर्यटक इधर बार-बार आना चाहते हैं। गोवा में आप पांच-सात दिन रहते हुए अखबारों को ध्यान से देखिए। आपको एक भी अपराध का समाचार नहीं मिलेगा। यूपी, बिहार, दिल्ली से गोवा जाने वाले पर्यटकों के लिए यह एक बड़ा ही सुखद अनुभव होता है। चूंकि गोवा पर पुर्तगाली शासन रहा, तो इसका असर यहां पर अब भी गिरिजाघरों, घरों और दूसरी इमारतों के आर्किटेक्चर को देखकर ही समझ में आने लगता है। पुर्तगालियों ने गोवा पर लगभग 450 सालों तक शासन किया। गोवा के दक्षिण भाग में ईसाई समाज का ज्यादा प्रभाव है। पुर्तगाली वास्तुकला के नमूने ज्यादा दिखाई देते है। चूंकि गोवा पुर्तगाली शासन के अधीन रहा, इस कारण यहाँ यूरोपीय संस्कृति का प्रभाव महसूस होता है। हालाँकि पुर्तगालियों ने यहाँ के संस्कृति का नामोनिशान मिटाने के लिए भरसक बहुत सारे प्रयास किए, लेकिन यहाँ की मूल संस्कृति इतनी मजबूत थी, कि धर्मांतरण के अनेकों प्रयासों के बाद भी वो मिट नहीं पाई। शायद ही भारत का कोई अन्य पर्यटन स्थल गोवा की तरह से साफ-सुंदर हो। यहां के अनेकों समुद्र तट का बीच में आनंद करने के लिए इसलिए ही तो सारे संसार से टूरिस्ट सालों भर आते रहते हैं। गोवा एयरपोर्ट से बाहर निकलते ही गोवा वासियों के सुसंस्कृत व्यवहार से लेकर सड़कों पर व्यवस्थित ट्रैफिक को देखकर समझ आने लगता है कि ये अलग मिजाज का शहर है। रात के 10 बजे भी यहाँ की सडकों पर स्कर्ट पहनकर लड़कियां और महिलाएं आ जा रही होती है। मजाल है कि उन्हें कोई टेढ़ी नजर से देख भी ले। यानी यूं ही गोवा खास नहीं हो गया। गोवा की मनमोहक सुंदरता और गोवा के मंदिरों, गिरजाघरों और पुराने निवास स्थानों का आर्किटेक्चर गोवा को बाकी जगहों से अलग करता है। एक बात और, गोवा की संस्कृति काफी प्राचीन भी है। कहा जाता है कि एक हजार साल पहले गोवा "कोंकण काशी" के नाम से जाना जाता था।

गोवा में बिताया समय पर्यटकों को सदैव याद रहता है। गोवा एक नशा है। एक बार जाने के बाद आप वहां पर बार–बार जाना चाहते हैं। गोवा में अनगिनत स्वच्छ समुद्र तट हैं, जहाँ का स्वच्छंद व उन्मुक्त जीवन जीने का तरीका पर्यटकों को गोवा की ओर खींच लाता है।

महाभारत में गोवा का उल्लेख गोपराष्ट्र यानी गाय चरानेवालों के देश के रूप में मिलता है। अरब के मध्युगीन यात्रियों ने इस क्षेत्र को चंद्रपुर और चंदौर के नाम से इंगित किया है। 1510 में, पुर्तगालियों ने एक स्थानीय सहयोगी, तिमैया की मदद से सत्तारूढ़ बीजापुर सुल्तान यूसुफ आदिल शाह को पराजित

किया। उन्होंने गोवा में एक स्थायी राज्य की स्थापना की। भारत ने 1947 में अंग्रेजों से स्वतंत्रता प्राप्त की। तब भारत ने पुर्तगाल सरकार से अनुरोध किया कि वह गोवा को आजाद कर दे। पर पुर्तगाल ने भारत के प्रस्ताव को अस्वीकार कर दिया। इसके बाद 19 दिसंबर 1961 को भारतीय सेना ने गोवा, दमन और दीव के भारतीय संघ में विलय के लिए ऑपरेशन विजय के नाम से सैन्य संचालन किया और इसके परिणामस्वरूप गोवा, दमन और दीव भारत का एक केन्द्र प्रशासित क्षेत्र बना। 30 मई 1987 में केंद्र शासित प्रदेशों को पुनर्गठित किया गया था, और गोवा भारत का पच्चीसवां राज्य बनाया गया । जबकि दमन और दीव केंद्र शासित प्रदेश ही बने रहे। गोवा और पर्यटन का चोली-दामन का साथ है। पर्यटन की वजह से बाकी उद्योग जो पर्यटन पर निर्भर करते है वो भी यहाँ पर जोर शोर से चालू हैं। गोवा में अभी तक सिर्फ.एक ही एयरपोर्ट है और दूसरा अभी बनने वाला है। पर्यटन के अलावा गोवा में लौह खनिज भी विपुल मात्रा में पाया जाता है। गोवा मछली उद्योग के लिए भी जाना जाता है लेकिन यहाँ की मछली निर्यात नहीं की जाती, बल्कि स्थानीय बाजारों में ही बेची जाती है। यहाँ के बागों में उत्पादित काजू सउदी अरब, ब्रिटेन तथा अन्य यूरोपीय राष्ट्रों को निर्यात होता है। गोवा की लगभग 60 फीसद जनसंख्या हिंदू और लगभग 28 फीसद जनसंख्या ईसाई है। गोवावासी धाराप्रवाह हिन्दी भी बोलते हैं। इसके अलावा वे अपनी कोंकणी भाषा तो बोलते ही हैं। यानी कि उत्तर भारत से गोवा जाने वाले पर्यटकों के सामने भाषा कोई मसला नहीं खड़ा करती। गोवा अपने खास व्यंजन फिश करी चावल के लिए प्रसिद्ध है। मैं इस तरह के बहुत से भारतीय मूल के लोगों को जानता हूं, जो हर साल गोवा में कुछ समय बिताने के लिए आते ही हैं। उन्हें यहां की कई डिशेज पसंद हैं। गोवा के जायके अद्भुत है, इसके जायके को शब्दों में बयां कर पाना आसान नहीं है। आपको यहां पर जगह-जगह सस्ते होटल और रेस्तरां मिलते हैं जहाँ आप नान-वेज और वेज भोजन का स्वाद ले सकते हैं। उत्तर भारत का भोजन भी आराम से उपलब्ध रहता है। गोवा के लोग बेहतरीन शेफ होते हैं गोवा के भोजन को अनूठा बनाने में यहां के मिर्च और मसालों की अहम भूमिका है। गोवा में बिताया समय पर्यटकों को सदैव याद रहता है। गोवा एक नशा है। एक बार जाने के बाद आप वहां पर बार-बार जाना चाहते हैं। गोवा में अनगिनत स्वच्छ समुद्र तट हैं, जहाँ का स्वच्छंद व उन्मुक्त जीवन जीने का तरीका पर्यटकों को गोवा की ओर खींच लाता है। गोवा में इतने अधिक समुद्र तट हैं कि पर्यटकों को गोवा के सभी तटों को देखने में एक महीने से भी अधिक वक़्त लग जाएगा। गोवा के इन समुद्र तटों पर आप समुद्र की लहरों पर वाटर सर्फिंग, पैरासेलिंग, वाटर स्किइंग, स्कूबा डाइविंग, वाटर स्कूटर आदि का लुत्फ उठा सकते हैं। बेशक, देश के सभी पर्यटन स्थलों को गोवा जैसा सुंदर तथा सुरक्षित बनाना होगा। भारत के पर्यटन क्षेत्र को बहुत गति दी जा सकती है। सिर्फ जरूरत इस बात की है कि सभी पर्यटन स्थल इस दिशा में गोवा को अपना आदर्श समझकर अपनी योजनाएं बनायें। ■

स्पैनिश फिल्म मिराज की नकल है दोबारा

आमिर खान की लाल सिंह चड्ढा और अक्षय कुमार की फिल्म रक्षा बंधन की कड़ी प्रतिस्पर्धा के बीच बॉक्स ऑफिस पर अनुराग कश्यप के निर्देशन में बनीं फिल्म दोबारा (2.12) रिलीज हुई। फिल्म में लीड एक्ट्रेस तापसी पन्नू हैं।

कैसी है फिल्म

कहते हैं कि नकल के लिए भी अकल चाहिए तो अनुराग कश्यप ने नकल करने के दौरान अपनी अकल का प्रयोग किया है। उसके लिए वह तारीफ के काबिल हैं। बाकि फिल्म शुरू से लेकर आखिरी तक आपको बांध कर रखती हैं। दर्शक को आगे क्या होगा यह जानने की इच्छा होती हैं। कई जहग हो सकता है कि आप कंफ्यूज हो क्योंकि टाइम ट्रेलर देखने की भारतीय जनता को आदत नहीं हैं और कहानी में भी कुछ जगहों पर खिचड़ी बनती नजर आती हैं। बाकि तापसी पन्नू ने कुछ कास नहीं किया हैं। कोई भी एक्ट्रेस ये रोल कर सकती थी। तापसी एक अच्छी एक्ट्रेस है लेकिन उनकी लास्ट रिलीज शाबाश मिथू में भी वह कुछ खास एक्टिंग करती नहीं नजर आयी थी।

आमिर खान की लाल सिंह चड्ढा और अक्षय कुमार की फिल्म रक्षा बंधन की कड़ी प्रतिस्पर्धा के बीच बॉक्स ऑफिस पर अनुराग कश्यप के निर्देशन में बनीं फिल्म दोबारा (2.12) रिलीज हुई। फिल्म में लीड एक्ट्रेस तापसी पन्नू हैं। फिल्म समीक्षकों ने सोशल मीडिया पर फिल्म की तारीफ भी की है। बॉक्स ऑफिस पर आखिरी हिट फिल्म भूल भुलैया 2 थी, इससे पहले और इसके बाद कोई भी फिल्म पिछले 2 साल में कुछ खास कमाल नहीं कर पायी हैं कश्मीर फाइल्स जैसी फिल्मों को अलग छोड़ दिया जाए तो... आइये हम भी आपको बताते हैं कि कैसी है फिल्म...

अनुराग कश्यप ने एक ऐसे निर्देशक है जो फिल्मों में कुछ नया लेकर आते हैं जो जमीन से जुड़ा हुआ होता हैं। एक गहन रिसर्च के बाद अनुराग की फिल्में फ्लोर पर जाती हैं लेकिन इस बार अनुराग कश्यप ने भी बॉलीवुड का रीमेक-रीमेक खेल खेला हैं। उन्होंने दोबारा (2.12) के रूप में स्पैनिश फिल्म मिराज का आधिकारिक रीमेक बनाया है। उनकी कहानी को समझना भारतीय दर्शकों के लिए थोड़ा मुश्किल जरूर रहा क्योंकि यह फिल्म टाइम ट्रेवर की कहानी है जिसमें एक साथ- भूत-वर्तमान और भविष्यकाल बार-बार आते जाते रहते हैं। सस्पेंस-थ्रिलर टाइम ट्रेवल फिल्म दोबारा आपको थोड़ा निराश जरूर करती है लेकिन यह बॉलीवुड की सोच से उपर हैं। थ्रिलर फिल्में अगर आपको देखना पसंद है तो फिल्म आपको बांधकर रखती है।

फिल्म की कहानी

फिल्म की कहानी शुरूआत होती हैं 1990 में आये एक भयानक तूफान से। यह जीयो स्ट्रोम इतना खतरनाक होता है कि शहर की सूरत ही बदल सकता है। इस तूफान में 12 वर्षीय अनय की सड़क दुर्घटना में मौत हो जाती है। अब फिल्म 25 साल आगे बढ़ जाता हैं। एंट्री होती है तापसी पन्नू की, जो कि फिल्म में एक नर्स हैं। तापसी अपने परिवार के साथ अनय के ही घर में रहने आती हैं। परिवार आराम से खुशहाल जिंदगी जीता है तभी एंट्री होती है एक वीडियो गेम की। तापसी को घर के अंदर एक टीवी मिलता है जिसे ऑन करते ही वह 25 साल पहले मर चुके अनय से कॉन्टेंक्ट कर सकती हैं। तापसी हैरान होती हैं और यहीं से घटनाक्रम टाइम ट्रेवर का शुरू हो जाता हैं। तापसी ठीक उसी जगह है जहां पर अनय हैं लेकिन 25 साल पहले। अनय ने अपनी आंखों से पड़ोस में एक खून होते देखा था जिसका संपर्क आज तापसी पन्नू से हैं। तापसी भूल काल में जाकर कुछ चीजें ठीक करती है लेकिन उसके कारण आज की चीजें बिगड़ जाती हैं। दिमाग को झकझोर देने वाली कहानी है दोराबा की लेकिन यह कोई ऑरिजनल कंटेंट नहीं हैं फिल्म मीराज की कॉपी हैं। ■

With Best Compliments from

ECONOMIC TRANSPORT Co.

C/o Superstar Leasing Financing Ltd.

Gandhi market, Fazal ganj, Kanpur

(Fleet Owner & Transport Contractor)

Branches

Kanpur, Noida, Delhi, Gurgaon

ममता के रंग

प्राची ने कुणाल की अम्मा की कैसी छवि बनाई थी?

प्राची तेजी से उठ कर बाथरूम की ओर दौड़ पड़ी। भीतर जा कर जो कुछ खाया था, सब उगल दिया। माथे पर छलक आई पसीने की बूंदों को पोंछते हुए बाथरूम में खड़ी रही।

दीदी, वे लोग आ गए, कहते हुए पोंछे को वहीं फर्श पर फेंकते हुए कजरी जैसे ही बाहर की तरफ दौड़ी, प्राची का दिल जोर से धड़क उठा। सिर पर पल्ला रखते हुए उस ने एक बार अपनेआप को आईने में देख लिया। सच, एकदम आदर्श बहू लग रही थी। मन में उठ रही ढेरों शंकाओं ने प्राची को परेशान कर दिया। जब नईनवेली दुलहन ससुराल आती है, तब सास उस की आरती उतारती है। लेकिन यहां पर किस्सा उलटा था, बहू के घर सास पहली बार आ रही थी। अम्मा प्राची और कुणाल के विवाह के खिलाफ थीं, इसलिए दोनों ने कोर्टमैरिज कर ली थी। शादी को साल भर होने जा रहा था कि अम्मा ने सूचित किया कि वे आ रही हैं। कई बार प्राची ने सोचा था कि स्टेशन जाने से पहले वह कुणाल से विस्तार से बात करेगी कि अम्मा के आते ही उसे उन का सामना कैसे करना है? लेकिन अम्मा के आने की सूचना मिलते ही घर सजाने संवारने की व्यस्तता और खुशी से रोमांचित प्राची तो जैसे सबकुछ भूल गई थी।

निर्मला सुरेंद्रन

प्राची, बाहर से कुणाल की पुकार सुनते ही उस का चेहरा लाल हो गया। अम्मा का स्वागत उन के चरणों को छू कर ही करेगी, यह सोचते हुए वह बाहर निकल आई, पर अम्मा को देखते ही जैसे पैरों में ब्रेक लग गए। उन का रूपरंग तो उस की कल्पना के उलट था। बौयकट बाल, होंठों पर गुलाबी लिपस्टिक और साड़ी के स्थान पर बगैर दुपट्टे का सूट देख कर वह स्तब्ध रह गई। अम्मा की आधुनिक छवि को देख कर वह जैसे अपने ही स्थान पर जड़ हो गई थी। न आगे बढ़ कर चरणों को छू पाई, न ही हाथ जोड़ कर नमस्ते तक करने की औपचारिकता निभा पाई। कुणाल, तुम्हारा चुनाव अच्छा है, अम्मा ने अंगरेजी में कहा और प्राची के गालों को चूम लिया। पर प्राची का चेहरा शर्म से गुलनार न हो पाया। कुणाल प्राची की उधेड़बुन से अनजान मां के कंधों को थामे लगातार बड़बड़ाता जा रहा था।

प्राची की आंखें यह सोच कर भर आईं कि मां की जो कमी उसे प्रकृति ने दी थी, वह कभी पूरी नहीं हो पाएगी। रसोई में अपने काम को अंतिम रूप देते हुए वह सोच रही थी, कितनी तारीफ करता था कुणाल अपनी अम्मा की, उन के ममत्व की। जो तसवीर कुणाल ने अपने कमरे में लगा रखी थी, उस में तो वास्तव में अम्मा आदर्श मां ही लग रही थीं। नाक में नथ, बड़ी सी बिंदी, कानों में झुमके, सीधे पल्ले की जरी वाली साड़ी, घने काले बाल प्राची के मन में अपनी मां की जो छवि रहरह कर उभरती, उस से कितनी मिलतीजुलती थी, कुणाल की अम्मा की तसवीर। इसीलिए तो अम्मा के प्रति प्राची बेहद भावुक थी। जब भी कुणाल अम्मा की ममता का जिक्र करता, प्राची का ममता के लिए ललकता मन तड़प उठता। वह अम्मा को देखने और उन के प्यार को पाने की उम्मीद लगा बैठती। अम्मा के ममत्व का जिक्र करते हुए कुणाल कहा करता था, जब अम्मा थकीहारी रसोई का काम निबटा कर बैठती थीं, तब बजाय उन को आराम देने के, मैं उन की गोद में सिर रख कर लेट जाया करता था। जानती हो, तब वे अपने माथे का पसीना पोंछना भूल कर अपने हाथों को मेरे बालों पर फेरती रहतीं, सच... कितना सुख मिलता था तब। जब मुझे मैडिकल कालेज जाना पड़ा, तब उन की याद में नींद नहीं आती थी... अम्मा बहुत ममतामयी हैं न? उन्हें गुस्सा तो कभी नहीं आता होगा? प्राची पूछती। नहीं, तुम गलत कह रही हो। अम्मा जितनी ममतामयी हैं, उतनी ही सख्त भी हैं। झूठ से तो उन्हें सख्त नफरत है। मुझे याद है, एक बार मैं स्कूल से एक बच्चे की पैंसिल उठा लाया था और अम्मा से झूठ कह दिया कि मेरे दोस्त ने मुझे पैंसिल तोहफे में दी है। जाने कैसे, अम्मा मेरा झूठ भांप गई थीं। अगले रोज वे मेरे साथ स्कूल आईं और मेरे दोस्त से पैंसिल के बारे में पूछा। उसके इनकार करने पर मुझे जो डांट पिलाई थी, वह मैं आज तक नहीं भूला, कुणाल ने कहा, तब से ले कर आज तक मैं ने कभी अम्मा से झूठ नहीं बोला। पिताजी के निधन के बाद अम्मा हमेशा इस बात से आशंकित रहती थीं कि मैं और मेरे भैया कहीं गलत राह पर न चले जाएं। प्राची हमेशा अपनी सास की तसवीर में उन के चेहरे को देखते हुए उन के व्यक्तित्व को आंकने का प्रयास करती रहती। अम्मा की तसवीर की तरफ देखते हुए कुणाल उस से कहता, जानती हो, यह अम्मा की शादी की तसवीर है। इस के अलावा उन की और कोई तसवीर मेरे पास नहीं है।

कुणाल, मैं कई बार यह सोच कर खुद को अपराधी महसूस करती हूं कि मेरी वजह से तुम अम्मा से दूर हो गए, न तुम मुझ से विवाह करते, न अम्मा से जुदा होना पड़ता। प्राची, क्या पागलों जैसी बात कर रही हो। अम्मा को मैं अच्छी तरह से जानता हूं। वे हम से ज्यादा दिनों तक अलग नहीं रह सकतीं। वे हमें जल्दी ही अपने पास बुलाएंगी। काश, वह दिन

प्राची के मनोभावों से परे अम्मा और कुणाल अपनी ही बातचीत में खोए हुए थे। अम्मा कह रही थीं, बेटा, तू अब वहीं आ जा, अपना अस्पताल खोल ले। अब दूरदूर नहीं रहा जाता। अभी नहीं, अम्मा, मैं करीब 5 साल मैडिकल अस्पताल में ही प्रैक्टिस करना चाहता हूं।

जल्दी आता, प्राची धीमे स्वर में कहती, मैं ने अपनी मां को नहीं देखा है। मैं 6 माह की थी जब उन की मृत्यु हो गई। पिताजी ने मेरी देखरेख में कोई कमी नहीं की थी, लेकिन मां की ममता के लिए हमेशा मेरा मन ललकता रहता है। कल रागिनी आई थी। जब उसे पता चला कि मैं गर्भवती हूं तो मुझ से पूछने आ गई कि मेरी क्या खाने की इच्छा है? मेरा मन भर आया। रागिनी मेरी सहेली है, उस के पूछने में एक दर्द था। मेरी मां नहीं हैं न, इसीलिए शायद वह अपने स्नेह से उस कमी को थोड़ा कम करने का प्रयास कर रही थी, आंखों को पोंछते हुए प्राची बोली।

कुणाल ने उसे सीने से लगाते हुए कहा, यह कभी मत कहना कि तुम्हारी मां नहीं, अम्मा तुम्हारी भी तो मां हैं? जरूर हैं, इसीलिए तो उन से मिलने को ललचाती रहती हूं। पर न जाने उन से कब मिलना हो पाएगा। और फिर यह भी तो नहीं पता कि मुझे माफ करना उन के लिए संभव होगा या नहीं। सबकुछ ठीक हो जाएगा, कहते हुए कुणाल ने प्राची के माथे पर हाथ फेरते हुए उसे यकीन दिलाने की कोशिश की। प्राची की अम्मा के प्रति छटपटाहट और उन के स्नेह को पाने की ललक देख कर कुणाल का मन पीड़ित हुआ करता था। अम्मा चाहे कुणाल को पत्र लिखें या न लिखें। लेकिन कुणाल हर हफ्ते उन्हें पत्र जरूर लिखता। प्राची कई बार कुणाल से जिद करती कि वह अम्मा से टेलीफोन कर बात करे, ताकि प्राची भी कम से कम उन की आवाज तो सुन सके। लेकिन जब भी कुणाल फोन करता, अम्मा रिसीवर रख देतीं। कुणाल द्वारा पिछले हफ्ते लिखे गए खत में प्राची के गर्भवती होने की सूचना के साथ-साथ उस की मां का प्यार पाने की इच्छा का कुछ ज्यादा ही बखान हो गया था, तभी तो अम्मा पसीज गई थीं और फोन पर सूचित किया था कि वे आ रही हैं। प्राची अम्मा के आने की खबर सुन कर पूरी रात सो न पाई थी। उस ने कल्पना की थी कि अम्मा आते ही उसे सीने से लगा लेंगी, हाल-चाल पूछेंगी, लेकिन यहां तो सबकुछ उलटा नजर आ रहा था। कुणाल और अम्मा की बातों का स्वर काफी तेज था। अम्मा शायद भैया के व्यापार के बारे में कुछ बता रही थीं और कुणाल अपने को अधिक बुद्धिजीवी साबित करने का प्रयास करते हुए उन की छोटी-मोटी गलतियों का आभास कराता जा रहा था। गर्भावस्था में भी अब तक प्राची को काम करने में कोई असुविधा नहीं हुई थी, लेकिन पूरी रात न सो पाने से वह असहज हो उठी थी। साथ ही, अम्मा को अपने खयालों के मुताबिक न पा कर उस में एक अजीब सा तनाव आ गया था। अचानक उसे कुणाल भी पराया सा लगने लगा था। किसी तरह नाश्ता बना कर प्राची ने डाइनिंग टेबल पर लगा दिया और अम्मा व कुणाल को बुलाने कमरे में आ गई। अम्मा पलंग पर बैठी थीं और कुणाल उन की गोद में सिर रख कर लेटा था। अम्मा की उंगलियां कुणाल के बालों में उलझी हुई थीं। प्राची ने देखा, अम्मा का एक भी बाल सफेद नहीं है।

शायद बालों को रंगती हों, प्राची ने सोचा और मन ही मन हंस दी, युवा दिखने का शौक भी कितना अजीब होता है। बच्चे बड़े हो गए और मां का जवान दिखने का पागलपन। प्राची के मनोभावों से परे अम्मा और कुणाल अपनी ही बातचीत में खोए हुए थे। अम्मा कह रही थीं, बेटा, तू अब वहीं आ जा, अपना अस्पताल खोल ले। अब दूर-दूर नहीं रहा जाता। अभी नहीं, अम्मा, मैं करीब 5 साल मैडिकल अस्पताल में ही प्रैक्टिस करना चाहता हूं। यहां रह कर तरह-तरह के मरीजों से निबटना तो सीख लूं। जब भी अस्पताल खोलूंगा, वहीं खोलूंगा, तुम्हारे पास, यह तो तय है। अम्मा, नाश्ता तैयार है, दोनों के प्रेमालाप में विघ्न डालते हुए प्राची को बोलना पड़ा। अच्छा बेटी, चलो कुणाल, तुम दोनों से मिल कर मेरी तो भूख ही मर गई, अम्मा ने उठते हुए कहा। पर अम्मां, मेरी भूख तो दोगुनी हो गई, कुणाल ने उन के हाथों को अपने हाथ में लेते हुए कहा। पागल कहीं का, तू तो बिलकुल नहीं बदला, अम्मा ने लाड़ जताते हुए कहा। नाश्ते की मेज पर न तो अम्मा और न कुणाल को इतनी फुरसत थी कि नाश्ते की तारीफ में कुछ कहें, न ही यह याद रहा कि प्राची भी भूखी है। रात अम्मा से मिलने की उत्सुकता में उस की नींद और भूख, दोनों मर गई थीं। पर अब प्राची भूख सहन नहीं कर पा रही थी। उसे लग रहा था, अम्मा उस से भी साथ खाने को कहेंगी या कम से कम कुणाल तो उस का खयाल रखेगा। पर सबकुछ आशा के उलट हो रहा था। अब तक प्राची के बगैर चाय तक न पीने वाला कुणाल बड़े मजे से कटलेट सौस में डुबो कर खाए जा रहा था। प्राची के मन में अकेलेपन का एहसास बढ़ता ही जा रहा था। मां व बेटे के इस रूप को देख कर प्राची को भी संकोच को दरकिनार करना पड़ा और वह अपने लिए प्लेट ले कर नाश्ता करने के लिए बैठ गई। नाश्ता स्वादहीन लग रहा था, पर भूख को शांत करने के लिए वह बड़ी तेजी से 2-3 कटलेट निगल गई। फलस्वरूप, उसे उबकाई आने लगी। रातभर के जागरण और सुबह से हो रहे मानसिक तनाव से पीड़ित प्राची को कटलेट हजम नहीं हुए।

प्राची तेजी से उठ कर बाथरूम की ओर दौड़ पड़ी। भीतर जा कर जो कुछ खाया था, सब उगल दिया। माथे पर छलक आई पसीने की बूंदों को पोंछते हुए बाथरूम में खड़ी रही। ऐसा लग रहा था जैसे अभी गिर पड़ेगी। सिर भी चकराने लगा था। तभी 2 कोमल भुजाओं ने प्राची को संभाल लिया। चल बेटी, तू आराम कर। लेकिन प्राची वहां से हट न पाई। थोड़ी सी गंदगी बाथरूम के बाहर भी फैल गई थी। सो, यह बोली, अम्मा, वह वहां भी थोड़ी सी गंदगी... मैं साफ कर लूंगी, तू चल कर आराम कर, अम्मा प्राची को सहारा दे कर उसे उस के कमरे तक ले आईं। फिर बिस्तर पर लिटा कर उस के चेहरे को तौलिए से पोंछ कर साफ किया। कुणाल ने एक

वह सोचने लगी कि केवल वेशभूषा से किसी के दिल को भला कैसे आंका जा सकता है। अम्मा ने लिपस्टिक भी लगाई थी, चेहरे पर पाउडर और कटे बालों में हेयरबैंड भी। पर अब प्राची को सब कुछ अच्छा लग रहा था क्योंकि अम्मा के मेकअप वाले आवरण की ओट से झांकती उन की अंदरूनी खूबसूरती और ममत्व का रंग उसे अब स्पष्ट दिखाई देने लगा था।

गिलास पानी से प्राची को एक गोली खिला दी। अब कुणाल के चेहरे पर परेशानी के भाव साफ नजर आ रहे थे। ज्यादा भागदौड़ हो गई होगी न। अब तुम आराम करो। कुणाल, मुझे उबकाई आ गई थी। बाथरूम के बाहर भी जरा सी गंदगी हो गई है। अम्मा साफ करेंगी तो अच्छा नहीं लगेगा। सास से कोई ऐसे काम नहीं करवाता। पागल, प्राची के गालों पर प्यार से चपत मारता हुआ कुणाल बोला, वे तुम्हारी मां हैं मां। और उन्हें जो करना है, वह करेंगी ही। मेरे कहने से मानेंगी थोड़े ही। फिर भी, प्राची ने उठने का प्रयास करते हुए कहा। तुम चुपचाप लेटी रहो और सोने का प्रयास करो, कुणाल धीरे-धीरे उस के माथे पर हाथ फेरता रहा। कब नींद आ गई, प्राची को पता ही न चला। जब उस की आंख खुली तो अम्मा को अपने सिरहाने बैठा पाया। वे नेलपौलिश रिमूवर से अपने नाखून साफ कर रही थीं, प्राची ने उठने का प्रयास किया तो अम्मा ने रोक दिया, न बेटी, तुम आराम करो। तुम्हें चिंता करने की जरूरत नहीं। मैं आ गई हूं और सिर्फ तुम्हें आराम देने के लिए ही आई हूं। अम्मा, मुझे अच्छा नहीं लग रहा, मैं आप की सेवा भी नहीं कर पा रही हूं। नहीं बेटी, मैं अपने हिस्से का आराम करती रहूंगी, तुम चिंता मत करो। जब से योगाभ्यास करने लगी हूं, खुद को काफी स्वस्थ महसूस कर रही हूं। अपने योग शिक्षक से तुम्हारे करने योग्य योग भी सीख कर आई हूं, तुम्हें जरूर सिखाऊंगी, लेकिन पहले तुम्हारे डाक्टर से मिलना होगा। तुम मेरी और कुणाल की चिंता छोड़ दो। तुम्हारे प्रसव तक घर की देखभाल मैं करूंगी। अम्मां, तब तक आप यहीं रहेंगी? हां, उन्होंने मुसकराते हुए कहा। प्राची एकटक अम्मा को ताकती रही, वे ममता की प्रतिमूर्ति लग रही थीं। वह सोचने लगी कि केवल वेशभूषा से किसी के दिल को भला कैसे आंका जा सकता है। अम्मा ने लिपस्टिक भी लगाई थी, चेहरे पर पाउडर और कटे बालों में हेयरबैंड भी। पर अब प्राची को सब कुछ अच्छा लग रहा था क्योंकि अम्मा के मेकअप वाले आवरण की ओट से झांकती उन की अंदरूनी खूबसूरती और ममत्व का रंग उसे अब स्पष्ट दिखाई देने लगा था। ■

'मैं आगरा हूं'

ताज महल की छाया से इतर, पौराणिक तथ्यों से समन्वय का सकारात्मक प्रयास

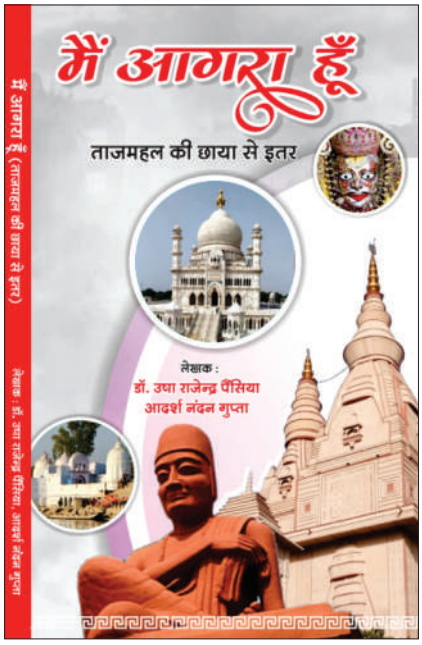

राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय पर्यटकों द्वारा विश्व के सात आश्चर्यों में एक सफेद संगमरमर से बने प्रेम के प्रतीक आगरा के ताज महल के विषय में दी गई प्रतिक्रियाओं के आधार पर इसे सन 1983 में यूनेस्को द्वारा विश्व धरोहर की सूची में शामिल किया गया। यमुना नदी के तट पर स्थित कुछ अन्य मुगल कालीन इमारतों के कारण आगरा को पर्यटकों का केंद्र बिंदु बना दिया गया। इन ऐतिहासिक स्थलों को ही प्रचारित किए जाने से देश विदेश के पर्यटक का आगरा प्रवास केवल एक दिन का ही रह जाने से यहां की आर्थिक, सामाजिक और राजनैतिक सुदृढता में निरंतर ह्रास हुआ।

संजय गुप्त

अनेक साहित्यकारों व इतिहास के मर्मज्ञ लेखकों ने आगरा के सांस्कृतिक और ऐतिहासिक महत्व को केंद्र मान कर पुस्तकें लिखीं और उनमें काफी महत्वपूर्ण जानकारी प्रदान की गईं हैं, लेकिन आगरा में ताज महल से अलावा भी सैकड़ों दर्शनीय स्थल हैं, जिनका पौराणिक और आध्यात्मिक दृष्टि से बहुत अधिक महत्व है। इसी को आधार मानते हुए आगरा विकास प्राधिकरण के उपाध्यक्ष डॉ. राजेंद्र पेंसिया की धर्मपत्नी शिक्षाविद डॉ. उषा राजेंद्र पेंसिया और वरिष्ठ पत्रकार आदर्श नंदन गुप्ता ने "मैं आगरा हूं" ... ताज महल की छाया से इतर (बियोंड द ताज) पुस्तक का सृजन किया। पुस्तक के आत्म कथ्य में डॉ. उषा राजेंद्र पैंसिया लिखतीं हैं कि "...ताज महल से इतर भी बहुत कुछ है, जो हमारे आगरा शहर को पूरे विश्व में गौरवान्वित करता है! इसके हृदय में भगवान श्रीकृष्ण का वास है, यह शिव की नगरी और उत्सवों का नगर है।" मेरी भावना में आदर्श नंदन गुप्ता ने लिखा है कि"...साहित्य, कला, संस्कृति से पूरे देश को गरिमा प्रदान करने वाले इस शहर में अनेकानेक ऋषि-महर्षि, साहित्यकार, लेखक, पत्रकार हुए, जिन्होंने अपने तपश्चरण से आगरा का स्वाभिमान ऊंचा किया। इन सभी की देश विदेश में ख्याति है।" डॉ. भीमराव आंबेडकर विश्वविद्यालय आगरा में इतिहास एवं संस्कृति विभाग अध्यक्ष प्रोफेसर सुगम आनंद पुस्तक की भूमिका में अपने विचार व्यक्त करते हैं कि "भारत की प्राचीन बसावट का महत्वपूर्ण ऐतिहासिक नगर है आगरा, जो धर्म और अध्यात्म के चैतन्य के प्रकाश से आलोकित रहा है। काशी की प्रभातवेला और अवध की संध्यावेला जैसे प्रसिद्ध हैं, वैसे ही आगरा की भोर और गौधूलि है जब मंदिरों में घंटे घनघना उठते हैं और आरती गुंजायमान होती है!" पुस्तक का प्रारंभ "हम सबका प्रिय आगरा" शीर्षक लेख से किया गया है, जिसमें आगरा की भौगोलिक और जनसांख्यिकी स्थिति का वर्णन करते हुए लिखा है कि "आगरा दिल्ली जयपुर गोल्डन त्रिकोण भारत का प्रमुख पर्यटन सर्किट है।" तत्पश्चात लेख "कहीं मेले तो कहीं उत्सवों की उमंग" में आगरा जनपद व शहर में वर्ष भर होने वाले विभिन्न धर्मों व पंथों के ऐतिहासिक उत्सवों व मेलों के बारे में जानकारी है। आगरा का संबंध महर्षि अंगिरा से जोड़ते हुए "अंगिरा ऋषि के नाम से हुआ आगरा" में श्रृंगी ऋषि के आश्रम के लुप्त होने का जिक्र भी किया गया है। भगवान परशुराम की तपोभूमि रुनकता, कृष्णभक्त सूरदास की साधनास्थली सूरकुटी, मनमोहक है 101 शिवालयों की श्रृंखला, पन्नी गली से बही थी राधास्वामी सत्संग की धारा, ताज महल से कम सुंदर नहीं स्वामी बाग, राधास्वामी मत का आदिकेंद्र हजूरी भवन लेखों में जहां एक ओर आध्यात्मिक तीर्थ स्थलों के विषय में बताया गया है, वहीं भगवान शंकर के प्रिय शहर आगरा में शिवालय में शहर में स्थित प्राचीन शिव मंदिरों तथा शहर में और भी हैं शिवालय लेखों से यह स्थापित किया गया है कि आगरा भगवान शिव की नगरी है। जन जन की आस्थाओं का केंद्र : प्राचीन हनुमान मंदिर लेख में लंगड़े की चौकी के मंदिर का महत्व है तो आगरा के प्रमुख देवी मंदिर में शहर व जनपद के देवी दुर्गा के मंदिरों के अतिरिक्त शौरीपुर के जैन मंदिर को भी प्रकाशित किया गया है। पूर्व प्रधानमंत्री स्व. अटल बिहारी वाजपेई के बटेश्वर स्थित पैतृक आवास, गायत्री मंत्र के परम साधक आराधक पं. श्रीराम शर्मा आचार्य, साहित्य के पुरोधा बाबू गुलाब राय, छत्रपति शिवाजी महाराज और आगरा के साथ साथ शायर नजीर, मिर्जा गालिब के विषय में भी पुस्तक में ज्ञान वर्धक लेख हैं। "मैं आगरा हूं" के स्वाधीनता संग्राम में आगरा का योगदान, हार्डी बम कांड, शहीद स्मारक विषयक लेखों में देशभक्त स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों को स्मरण कर श्रद्धांजलि दी गई हैं। उत्तर भारत की प्रमुख रामलीला, श्रीकृष्ण लीला के साथ साथ लोक परम्परा से सराबोर फूलडोल मेलों, हस्तकला शिल्प संस्कृति का अनूठा संगम ताज महोत्सव को भी पुस्तक में विशेष स्थान दिया गया है । आगरा के कवि, लेखक, साहित्यकार, संस्कृति के झिलमिल सितारे, भक्तिगीतों के सरताज और फतेहपुर सीकरी की चित्रकला के विषय में भी लेख हैं। पुस्तक में आगरा में स्वाद ही स्वाद, चटपटी चाट लेख के माध्यम से शहर में स्थान स्थान पर प्रातः कालीन नाश्ता, स्वादिष्ट भोजन और सायंकालीन चटपटी चाट के बारे में बताया गया है। आगरा के व्यवसाय, उद्योग, पार्क, मॉल आदि के बारे में भी संक्षिप्त में पुस्तक में जानकारी है। रंजीत सामा के निर्देशन में बनी डॉक्यूमेंट्री फिल्म "मैं एडीए हूं" को भी पुस्तक में स्थान दिया गया है । शहर के लाड़ले गीतकार कुमार ललित द्वारा रचित "आगरा का गीत" को प्रकाशित तो किया ही है, साथ ही यूट्यूब पर लॉन्च की गई वीडियो के लिए क्यू आर कोड भी उपलब्ध है। ओसवाल बुक्स आगरा द्वारा प्रकाशित 128 पृष्ठ की रंगीन चित्रों सहित आकर्षक पुस्तक के सह प्रकाशक उपकार प्रकाशन हैं। आमजन के लिए सहज और सरल भाषा शैली में सृजित "मैं आगरा हूं" आगरा के भौगोलिक, राजनैतिक, साहित्यिक, सांस्कृतिक व आध्यात्मिक ज्ञान को पौराणिक तथ्यों के साथ समन्वय स्थापित करने का ऐसा सकारात्मक एवं सराहनीय प्रयास है, जिसमें सदैव बहुत कुछ किए जाने की गुंजाइश रहती है। ■

कविता मुझे लिखती है...

कविता मुझे लिखती है
या, मैं कविता को
समझ नहीं पाती
जब भी उमड़ती है
भीतर की सुगबुगाहट
कविता गढ़ती है शब्द
और शब्द गन्धाते हैं कविता
जैसे चौपाल से संसद तक
गढ़ी जाती हैं जुल्म की
अनगिनत कहानियाँ,
वैसे ही,
मुट्ठी भर शब्दों से
गढ़ दी जाती है
कागजों पर अनगिनत
कविताएँ और कविताओं में
अनगिनत नक्श, नुकीले,
चपटे और घुमावदार
जो नहीं होते सीधे
सपाट व सहज वर्णमाला
की तरह !!

अंजना बख्शी
दमोह, मध्य प्रदेश

With Best Compliments from

Jai Kumar Agarwal

Managing Director

+91-9918700801

GYAN DAIRY

jai@agarwal@gyandairy.com

आर.एन.आई. पंजीयन सं. 2166/57

Many Big & Small things
can add up under one roof

Ashok
COSMOS MALL

ASHOK GROUP OF COMPANIES
119/8 & 120/8, Sanjay Place, Agra - 282002
Contact Person: Mr. Vikram Jain(For Space Enquiry) Contact No. +91 9219522188

Big Bazaar at -1 floor
McDonalds at Ground Floor
Lifestyle(Brand Store) at Ground - 2nd floor
Reliance Trend at ground - 1st floor
Canary London at 2nd floor

Handheld: +91 9219522144 Landline: +91 - 562 - 4061189